بسم الله الرحمن الرحيم

وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيعاً وَّلاتَفَرَّقُوا (آل عمران. ١٠٣)

तार्जुमा :- मज़बूती से पकड़लो रस्सी अल्लाह की सब मिलकर और फूट ना डालो

हिदायते आमाल

(हर मुसलमान के लिये ज़रूरी किताब)

ज़ेरे नज़र :-

हज़रत मौलाना मुफ़्ती अब्दुल खादिर खास्मि साब

मुरत्तिब :-

षेख मक्बुल अहम[illegible] साब, करनूलि

पब्लिषर :-

मक्बुल बुक डिपो

षाप नें. 66-11, जामिया मस्जिद के नज़्दीक

करनूल (ज़िल्ला) ए.पि

मोबैल : 09440375218, 09493134441

بسم الله الرحمن الرحيم

وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا (آل عمران ١٠٣)

तरजुमा :- मज़बूती से पकड़लो रस्सी अल्लाह की सब मिल कर और फूट ना डालो

हिदायते आमाल

(हर मुसल्मान के लिये जरूरी किताब)

ज़ेरे नज़र :-

हज़रत मौलाना मुफ़्ती अब्दुल क़ादिर क़ास्मि साब

मुरत्तिब :-

षेख मक्बुल अहमद साब, कर्नूलि.

पब्लिषर :-

मक्बुल बुक डिपो

षाप नेम. 66-11 नज़्द जामिआ मस्जिद

कर्नूल (ज़िला) ए.पि

मेबैल : 094403 75218 094931 34441

कर्नूल (ज़िला) ए.पि

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

तखरीज़

नहमदुहू वनुसल्लि अला रसूलिहिल करीम अम्मा ब अद्
ए एक हक़ीक़त है जिस्को बेला किसी तवज्जे के कहा जासकता है के इस वक्त आलमे इस्लाम मे वसी तरीन दावत जमाअते तब्लीग की दावत है. ए खुसूसियत और इम्तियाज़ दाई अव्वल का इख़्लास, इनाबत इलल्लाह, जद्दो जेहेद और क़ुरबानी का नतीजा है. ए दावत की जिम्मे दारी अल्लाह ने हर खास व आम पर रख्खी है. हर षक्स दावत के काम को फ़रज़े अैन समझे. इस दावत का मक़सूद ए हैके हर इन्सान इस्लाम के अहेकामात और रसूलुल्लाह सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तौर व तरीके पर चलकर रज़ाये इलाही हासिल करे. इस सिल्सिले मे बहुत सी मुख्तसर और तवील किताबें दावत व तब्लीग के उसूल व ज़वाबित और कुछ इब्तेदायि मसाइल के मुताल्लिक़ लिख्खे जाचुके है. इसी की एक कडी हमारे दीनि भायि मक्बुल अहेमद ने क़दम उठाया है जिस्मे अक़ाइदे इस्लाम, इब्तेदायि बाते, कुछ तहारत, नमाज़ के मसाइल, दावत व तब्लीग के उसूल और आखिर मे अकाबिर के अक़वाल, मस्तुरात के जमात के उसूल और उन्के फ़ज़ाइल बयान किये है जिस्का नाम "हिदायते आमाल" रख्खा है (आमाल की तरफ़ रहेनुमायि करने वाली किताब) ए किताब पहेले उरदू मे और उस्के बाद बहुत जबानो मे अलहम्दु लिल्लाह तय्यार है. खासकर अक़ाइद और मसाइल मे बहुत मेहेनत होती है दुआ करे के अल्लाह तआला इस किताब को हक़ीक़ी मानो मे हिदायत का जरिया बनाये (आमीन)

हज़रत मौलाना मुफ़्ती अब्दुल क़ादिर क़ास्मी साब
खाक पाये मुसल्मान

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

अरज़े मुरत्तिब

तमाम हम्द व सना उस बुज़रुग व बरतर ज़ात के लिये जिस्ने इस किताब की तस्नीफ़ की मुझे तौफ़ीक़ इनायत फ़रमायि

मै अप्नी इस कोषिष को अपने मुषफ़िक व मुरब्बि वालिदैन की तरफ़ मन्सूब करता हुं और इन सब अफ़राद की दुआवों और उलमाये किराम की मेहेनतों और तवज्जुहात की तरफ़ जिन्के जरिये मुझे इस किताब को तरतीब देने की सआदत मिली.

ऐसे बेदीनी व बे राहरवि के दौर मे भी अल्लाह तआला अपने दीन के काम को चलारहा है. इस काम के लिये हमेषा अल्लाह के फ़ज़ल व करम से ऐसे अफ़रद मौजूद होते हैं जो खुद अपनी फ़िकर कर्ते हुवे दुसरों कि फ़िकर को भी लेकर चलते हैं और रात दिन, दीन कि इषाअत मे मसरूफ़ रहेते हैं चुंके नबिये आखिरुज़ ज़मा मुहम्मद सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नबुव्वत का दरवाज़ा बन्द हो चुका है अब इस बेहेतरीन काम के लिये अल्लह तआला ने मखसूस अफ़राद को मुन्तखब कर लिया है जो शबो रोज़ दीन कि मेहेनत करने मे मषगूल रहेते है और हक़ीक़त मे उम्मते मुहम्मदिया कि जिन्दगि का मक़सद ही अल्लाह हि कि इबादत करना और लोगों को अल्लाह कि तरफ़ और तालिमाते रसूल सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कि तरफ़ दावत देना है क्युंके अल्लाह तबारक वतआला ने इस उम्मत को बेहेतरीन उम्मत का लक़ब दिया है सारे आलम मे दीन जिन्दा होने के लिये हर एक मुसलमान अपना जान, माल और वक़्त को अल्लाह के रास्ते मे लगाये नीज़ इस किताब मे जो भी लग्ज़िष या खता हो तो अल्लाह तआला माफ़ फ़र्मये. (आमीन)

नोट:- खारिईन से अदबन गुज़ारिष है के किताब मे कुच खता हो तो हमे इत्तेला फ़र्मये और इंदल्लाह माजूर हो.

अल्लाह का मोहताज़ बन्दा

षेख मकबूल अहमद साब कर्नूलि

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

सीरियल नम्बर. सफ़ह नम्बर

{1} अल्लाह तआला के बारे में हमारा अक़ीदा

अल्लाह एक है उस्का कोई षरीक नहीं है उस्के अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं। हमेषा से है हमेषा रहेगा जिंदा है हर चीज़ को थामे हुवे है। सारी मख्लूक़ उसी की पैंदा की हुवी है ओ किसी से पैदा नहीं हुवा, ना उस्की बीवी है ना बच्चे ना रिष्तेदार। जो चाहता है करता है कोई उस्को रोक्ने वाला नहीं। सब को रोज़ी देता है वही मौत देता है वही जिंदा करता है हर चीज़ पर क़ादिर है। अल्लाह तआला बडा मेहेरबान, है उस्की मेहेरबानी से मायूस होजाना कुफ्र है। वो बडी ताकत और कुव्वत वाला है उस्की पकड बहुत खतरनाक है उस्से निडर होजाने वाला भी मुसल्मान नहीं रहेता।

{2} हज़रत मुहम्मद सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में हमारा अक़ीदा

वो अल्लाह तआला के खास बंदे और उस्के महेबूब और आखिरी रसूल सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। आप के बाद कोई नया नबी आने वाला नहीं। और अगर कोई नबुव्वत का दावा करे तो ओ मक्कार और झूटा है। अल्लाह तआला के बाद तमाम मख्लूक़ मे आप ही सब से अफ़ज़ल और बुज़रुग हैं। तमाम इन्सान और जिन्नात के लिए आप नबी बन्कर तष्रीफ़ लाये हैं आप के अलावा जित्ने रसूल आप से पहेले आये ओ भी बरहख और अल्लाह के भेजे हुवे थे लेकिन इताअत अब खियामत तक सिर्फ़ हमारे नबी सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

होगी। आप्को अल्लाह तआला जीते जागते मे जिस्म व जान के साथ ऐक ही रात में मक्के से बैतुल मुखद्दस फिर वहाँ से सात्वें आस्मान और जहाँ तक मंज़ूर हुवा लेगया था और जन्नत व दोज़ख की सैर करायि थी उस्को मेराज कहेते हैं। हम उस्को उसी तरह मानते हैं जिस तरह पेष आयि है। अल्लाह तआला ने आप्के हाथों ऐसी बातें ज़ाहिर फ़रमायीं जो दूस्रों के लिये नहीं होसकति उन्हें मोजिज़ात कहेते हैं।

{3} क़ुरआन मजीद के बारे में हमारा अक़ीदा

अल्लाह तआला का कलाम है अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के ज़रिये उस्को हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा है उस्के अलावा तौरात, ज़बूर, इंजील, मूसा अलैहि स्सलाम और इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सहीफ़े और जितनी किताबें आस्मान से उत्री हैं ओ सब सच्ची हैं लेकिन खियामत तक अमल सिर्फ़ क़ुरआन मजीद पर होगा।

{4} फ़रिष्तों के बारे में हमारा अक़ीदा

अल्लाह तआला ने एक मखलूख नूर से पैदा की है उन्को फ़रिष्ते कहेते हैं। अल्लाह तआला ने उन्को मुख-तलिफ़ कामों पर लगा रख्खा है मगर ओ हमारी नज़रों से गायिब हैं ओ अल्लाह तआला की ज़रासी ना-फ़रमानी नहीं करते। और एक मख्लूख आग से पैदा की है उन्को जिन्नात कहेते हैं वो भी हमारी नज़रों से गायिब हैं इन्में नेक, बद, मुसल्मान, काफ़िर, औरत, मर्द, सब ही होते हैं उन्की औलाद भी होती है।

{5} तख्दीर के बारे में हमारा अक़ीदा

अल्लाह तआला ने तमाम इन्सानों के पैदा करने से पहेले उन्के बारे में सब कुछ तै करदिया है उस्को तख्दीर कहेते हैं । उस्की सही कैफ़ियत अल्लाह को मालूम है तख्दीर और खज़ाये इलाही में किसी के अमल का कोई दखल नहीं । इस्मे कोई षख्स ना तब्दीली करसकता है ना उस्को टाल सकता है । उस्के बारे में हमारा अक़ीदा है के जो चीज़ अच्छी या बुरी हमें मिली है ओ यखीनन मिल्ने वाली थी खाह कुछ भी होजाये और जो नहीं मिली ओ हरगिज़ नहीं मिलसकति थी चाहे कुछ भी किया जाये । तख्दीर की हख़ीख़त में गौर करना हमारे बस की बात नहीं इस लिये हम उस पर इजमाली ईमान लाये हैं और किसी खिसम के वसवसे और षक को जगा नहीं देते।

{6} सहाबह किराम रजि॥ के बारे में हमारा अक़ीदा

वो सब के सब हुज़ूर स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे जान निसार और फ़रमाबर्दार साथी थे उन्हो ने हर तरह आप्की इताअत और फ़रमाबर्दारी की है आप से मिसाली इष्क़ व मुहब्बत की तारीक़ बनायी है । उन्से अल्लाह तआला और उस्के रसूल स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुष हैं इस लिये हम उन्की मुहब्बत को ईमान का हिस्सा समझ्ते हैं उन्के दुष्मनों को अप्ना दुष्मन समझ्ते हैं उन्के इत्तेफ़ाक़ को क़ुबूल करते हैं उन्के इख्तिलाफ़ात को अल्लाह के हवाले करते हैं इस लिये के अल्लाह तआला ने इन सब का इल्म रख्ते हुवे भी उन्से रज़ामंदी को क़ुरआन मे नाज़िल करदिया है।

सहाबाह रजि॥ में सब से अफ़ज़ल अषरये मुबष्षरह हैं उन्मे खुलफ़ा ए राषिदीन का दर्जा सब से ज़ियादा है और खुलफ़ा मे भी सब से बडा मक़ाम हज़रत अबूबकर रजि॥ का फिर हज़रत उमर रजि॥ का फिर हज़रत उस्मान रजि॥ का फिर हज़रत अली रजि॥ का है । सहाबह रजि॥ में से किसी पर ऐब लगाना या उन्की बुराई करना बहुत बडा गुनाह है।

{7} ताबिईन, औलियाए किराम, फ़ुक़हा, और बुज़रुगाने सलफ़ के बारे में हमारा अक़ीदा

ताबिईन वो सब अल्लाह तआला के दोस्त और दीन के लिये मुख्लिसाना मेहेनत करने वाले थे । हम उन्की दीनी तहेक़ीक़ात पर भरोसा करते हैं और दियानत पर एतेमाद करते हैं उन्की कोई बात खिलाफ़े षरा हो तो हम कुबूल नहीं करते लेकिन उस्की बेहेतरीन तावील करते हैं या माज़ूर समझते हैं । उन्का दर्जा अंबिया और सहाबाह रजि॥ के दर्जे से कम समझते हैं उन्की करामात को हक समझते हैं ।

{8} क़ियामत और उस्की अलामत के सिलसिले मे हमारा अक़ीदा

क़ियामत का आना यक़ीनी है फ़रिष्तों का आना, रूह का खब्ज़ करना, मुन्कर नकीर का सवाल व जवाब करना, मरने के बाद जिंदा होना, खुदा के साम्ने हाज़िर होना, हिसाब किताब लियाजाना, आमाल का तोला जाना, पुल्सिरात से गुज़रना, जन्नत और उस्की तमाम न्यामतें

व राहतें, दोज़ख और उस्की तमाम मुसीबतें और तक्लीफ़ें, हक़ तआला का दीदार और वो तमाम चीज़ें जिस्की खबर हज़रत मुहम्मद स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दी है उन्को उसी तरह तस्लीम करते और मान्ते हैं, जिस तरह आप स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खबर दी है इसी तरह ए बात भि हक है के क़बर, दोज़ख के गडों में से एक गडा है या जन्नत की क्यारियें में से एक क्यारी है इसी तरह क़ियामत के क़रीब दज्जाल का निकल्ना, सुरज का मगरिब से तुलु होना वगैरा जिन निषानियों कि खबर दी है वो सब बर-हक़ हैं ।

{9} 7 चीज़ों पर ईमान लाना ज़रूरी है

(1)अल्लाह पर (2) फ़रिष्तों पर (3) अल्लाह की किताबों पर (4) उस्के रसूलों पर (5) खियामत के दिन पर (6) तखदीर पर खाह वो अच्छी हो या बुरी और इस बात पर के जो भी होता है खुदा की तरफ़ से होता है (7) मरने के बाद दुबारा जिंदा होने पर

{10} इस्लाम की बुनियाद 5 सुतूनों पर है

इस्लाम की बुनियाद 5 सुतूनों पर है (1) कलिमए तय्यिबा "ला-इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" (स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तर्जुमा:- नहीं है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के मुहम्मद स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं का दिल से मान्ना और ज़बान से इक़रार करना (2) नमाज़ (रोजाना 5 वक़्त की नमाज़ फ़रज़ है) (3) रमज़ानुल मुबारक के महीने में रोज़े रख्ना (4) ज़कात देना (हर साहिबे निसाब पर

ज़कात फ़रज़ है) (5) हज करना (माल और इस्तेताअत होतो हज करना फ़रज़ है)

{11} इस्लाम के महीने

(1) मुहर्रमुल हराम (2) सफ़रुल मुज़फ़्फ़र (3) रबीउल अव्वल (4) रबीउस्सानी (5) जुमादिल अव्वल (6) जुमादिस्सानी (7) रज्जबुल मुरज्जब (8) षाबानुल मुअज़्ज़म (9) रमज़ानुल मुबारक (10) षव्वालुल मुकर्रम (11) ज़िल क़ाइदह (12) ज़िल हिज्जह

{12} इस्लाम के खुसूसी दिन और रातें

यौमे आषुरा :- 10 मुहर्रम (मुहर्रम के 9 -10 या 10 -11 इन तारीखों मे नफ़िल रोज़े रख्ना सुन्नत है)

ईदुल फ़ितर का दिन :- षव्वाल कि 1 तारीख

ईदुज़्ज़ुहा का दिन :- ज़िल हिज्जा की 10 तारीख

यौमे अरफ़ा :- ज़िल हिज्जा की 9 तारीख

वफ़ाते नबवी :- रबीउल अव्वल की 12 तारीख

षबे बरात :- षाबान की 15 तारीख की रात (षबे बरात की पूरी रात इबादत करना सुन्नत है ।)

षबे क़दर :- रमज़ानुल मुबारक के आखरी अषरे कि ताक़ रातो में 21, 23, 25, 27 और 29 तारीखों में पूरी रात इबादत करना सुन्नत है ।

{13} 4 मुक़र्रब और मषहूर फ़रिष्ते

(1) हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम :- अल्लाह तआला के अहेकाम और किताबें पैगंबरों के पास लाते थे ।

(2) हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम :- मख्लूक़ को रोज़ी पहुंचाने और बारिष वगैरा के इंतेजाम पर मुक़र्रर हैं

(3) हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम :- क़ियामत के दिन सूर फुकेंगे ।

(4) हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम :- मख्लूक़ की जान निकाल्ने पर मुक़र्रर हैं ।

{14} नबी किसे कहेते हैं

नबी खूदा तआला के बंदे और इन्सान होते हैं खुदा तआला उन्हें अप्ने अहेकामात को बंदों तक पहुंचाने के लिए भेज्ते हैं ओ सच्चे होते हैं झूट नहीं बोलते, गुनाह नहीं करते, खुदा तआला के हुक्मों में कमी ज़ियादती नहीं करते और किसी हुकुम को नहीं छुपाते ।

{15} 4 मष्हूर आस्मानी किताबों के नाम और वो किन पर नाज़िल हुवी·

तौरात :- हज़रत मुसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुवी.

ज़बूर :- हज़रत दावूद अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुवी.

इंजील :- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुवी.

कुरआने मजीद :- हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुवी

{16} हुज़ूर सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम व नसब और खान्दान

हुज़ूर सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खान्दानः- हुज़ूर सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ुरैष खान्दान से हैं

हुज़ूर सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा :- हज़रत अब्दुल मुत्तलिब.

हुज़ूर सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिदैन:- वालिद हज़रत अब्दुल्लाह, वालिदा हज़रत आमिना.

हुज़ूर सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा :- हज़रत हम्ज़ह रजि॥ अबु तालिब और अब्बास रजि॥

हुज़ूर सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बचपन में दूध पिलाने वाली दायी:- दायी हलीमा सादिया रजि॥.

हुज़ूर सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कि बीवियाँ (अज़वाजे मुतहहरात):- हज़रत खदीजा रजि॥, हज़रत आइषा रजि॥, हज़रत सौदाह रजि॥, हज़रत हफ़्सा रजि॥, हज़रत जैनब बिन्ते जहष रजि॥, हज़रत उम्मे सल्मा रजि॥, हज़रत जुवैरिया रजि॥, हज़रत उम्मे हबीबा रजि॥, हज़रत सफ़िय्या रजि॥, हज़रत मैमूना रजि॥, हज़रत ज़ैनब बिन्ते खुजैमा रजि॥,

हुज़ूर सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटियाँ :- हज़रत रुक़य्या रजि॥, हज़रत उम्मे कुल्सूम रजि॥, हज़रत जैनब रजि॥, हज़रत बीबी फ़ातिमा रजि॥

हुज़ूर सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साहेब ज़ादे (बेटे) :- हज़रत इब्राहीम रजि॥, हज़रत अब्दुल्ला रजि॥, (तय्यिब व ताहिर) हज़रत क़ासिम रजि॥, हज़रत ताहिर रजि॥

हुज़ूर सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामाद :- हज़रत उस्माने गनी रजि॥, हज़रत अबुल आस रजि॥, हज़रत अली रजि॥

{17} सहाबी रजि॥ किसे कहेते हैं ?

सहाबी उस षख्स को कहेते हैं जो ईमान की हालत में हुज़ूर सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा हो, या आप्की खिदमत में हाज़िर हुवा हो और ईमान की हालत

में उन्की वफ़ात हुवी हो ऐसे षख्स को सहाबी रजि॥ कहेते हैं अगर एक होतो रजियल्लाहु अन्ह और दो होतो रजियल्लाहु अनहुमा और तीन या तीन से जियादा होतो रजियल्लाहु अनहुम कहेते हैं अगर एक औरत होतो रजियल्लाहु अनहा और दो औरतें होतो रजियल्लाहु अनहुमा और तीन या तीन से ज़ियादा होतो रजियल्लाहु अनहुन्न कहेते हैं.

{18} ताबिई रजि॥ किसे कहेते हैं ?

ईमान की हालत में आप सल्लल्लाहु अलिहि वसल्लम के सहाबाह रजि॥ में से किसी सहाबी रजि॥ को अप्नी ज़िंदगी में देखा हो और उसी हालते ईमान में उन्की वफ़ात भी हुवी हो उन्को ताबिई कहते हैं उस्की जमा ताबिईन है.

{19} तबए ताबिईन किसे कहेते हैं ?

जिन लोगोंने आप सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबाह रजि॥ को देखा हो उन्को ताबिईन कहेते हैं और जिन्होने ताबिईन को देखा हो और ईमान की हालत में मौत हुवी हो उन्को तबए ताबियीन कहेते हैं इन्ही तीनों ज़मानों को खैरुल क़ुरून कहा गया है ।

{20} औलिया किराम किसे कहेते हैं ?

जो मुसलमान खुदा तआला और पैगंबर के हुकुमों की ताबेदारी करे और क़सरत से इबादत करे और गुनाहों से बच्ता रहे खुदा और रसूल सोल्लल्लाहु अलिहि वसल्लम की मुहब्बत दुनिया की तमाम चीज़ों की मुहब्बत से ज़ियादा रख्ता हो वो खुदा का मुक़र्रब और प्यारा और

क़रीबी होता है उस्को वली कहेते हैं वलिय्युल्लाह (अल्लाह का दोस्त) इस्की जमा औलिया अल्लाह है ।

{21} मुनाफ़िक़ किसे कहेते हैं ?

वो षख्स जिस्के दिल में कुछ और हो और ज़ाहिर में उस्के खिलाफ़ करे मुनाफ़िक़ीन उन लोगों को कहा जाता है जो आप स़ोल्लल्लाहु अलिहि वसल्लम के ज़माने में ज़ाहिरी एतेबार से मुसलमान नज़र आते थे और अन्दरूनी एतेबार से इस्लाम के खिलाफ़ अमल करते थे इस वजे से इन लोगों को "मुनाफ़िक़" कहा जाता है । मुनाफ़िक़ की जमा मुनाफ़िक़ीन है ।

{22} काफ़िर किसे कहेते हैं ?

जो षख्स खुदा तआला को ना माने या दो तीन खुदा को माने या फ़रिश्तों का इन्कार करे या खुदा तआला की किताबों में से किसी किताब का इन्कार करे या किसी पैगंबर को ना माने या तक़दीर का मुन्किर हो या क़ियामत के दिन को ना माने या खुदा तआला के किसी हुकुम का इन्कार करे या रसूल की दी हुवी किसी खबर (बात) को झूटा समझे तो ऐसे षख्स को काफ़िर कहेते हैं ।

{23} हदीस किसे कहेते हैं ?

जो चीज़ें आप की तरफ़ मन्सूब हों चाहे आप्का फ़रमान हो या आप्का किया हुवा कोई काम हो या किसी को करते हुवे देखा और खामूषी इखतियार की हो या आप्का कोई वस्फ़ हो इन तमाम बातों को हदीस कहेते हैं

{24} रिवायत किसे कहेते हैं ?

जो बातें या काम आप्की तक़रीर वगैरा को सहाबाह

रजि॥ ने नक़ल किया उन्के बाद ताबिईन ने या तबए ताबिईन या मुहद्दिसीन ने नक़ल किया इस्को रिवायत करना और नक़ल करना कहेते हैं ।

{25} मफ़हूम और खुलासा किसे कहेते हैं ?

मफ़हूम :- हदीस को पूरे अलफ़ाज़ के सात अदा करने के बजाए उस्का खुलासा जो उलमा ने सम्झाया वो बयान करना ।

खुलासा :- हदीस का पूरा नीचोड बयान करना

{26} फ़रज़, वाजिब, सुन्नत और नफ़िल किसे कहेते हैं ?

फ़रज़ :- उसे कहेते हैं जो खतई दलील से साबित हो यानी उस्के सुबूत में कोई षुबा ना हो उस्की फ़रज़ियत का इन्कार करने वाला फ़ासिक़ और अज़ाब का मुस्तहिक़ होता है ।

वाजिब :- वो है जो ज़न्नी दलील से साबित हो उस्का इन्कार करने वाला काफ़िर नहीं होता हाँ बिला उज़र छोडने वाला फ़ासिक़ और अज़ाब का मुस्तहिक़ होता है

सुन्नत :- उस काम को कहेते हैं जिसको रसूल स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने या सहाबाह किराम रजि॥ ने नक़ल किया हो या करने का हुकुम फ़रमाया हो।

नफ़िल :- उन कामो को कहेते हैं जिन्की फ़ज़ीलत षरीअत में साबित हो उन्के करने में सवाब और छोडने में अज़ाब ना हो उसे मुस्तहब और मनदूब और ततव्वु भी कहेते हैं ।

{27} जन्नात किसे कहेते हैं ?

वो अल्लाह तआला के ऐसी खूबसूरत मेहेल्लात हैं जो गैर मुनतहाए बयान है यानी जिस्के बयान की कोई इन्तेहा नहीं वो अल्लाह तआला अप्ने फ़र्माबरदार बंदों के लिये तय्यार कर रख्खा है और नफ़्स चाही ज़िंदगी छोडा हो रब चाही ज़िंदगी को पक्डा हो अपनी ज़िंदगी को अहेकामाते खुदावंदी पर गुज़ारा हो ।

{28} जहन्नम किसे कहेते हैं ?

जहन्नम वो ऐसी खौफ़नाक जगे है जिस्को अल्लाह तआला ने तय्यार कर रख्खी है उन बदबख्तों के लिये जो क़ुरआन और हदीस पर अमल करना छोडकर दुनियावी ज़िंदगी में मुलव्वस (मषगूल) होकर पूरी ज़िंदगी अल्लाह तआला की ना-फ़रमानी में गुज़ारते हुवे अल्लाह के अहेकाम के खिलाफ़ वरज़ी की हो और अपनी अता की हुवी ज़िंदगी को खो बैठे ।

{29} क़ियामत किसे कहेते हैं ?

क़ियामत उस दिन को कहेते हैं जिस दिन तमाम आदमी और जानदार मरजायेंगे और तमाम दुनिया फ़ना होजायेगी पहाड रूयी के गालों की तरह उडते फिरेंगे सितारे टूट्कर गिर पडेंगे गर्ज उस दिन हर चीज़ टूट फूट कर फ़ना होजायेगी सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात बाक़ी रहेगी ।

{30} इस्लाम के कलिमे

कलिमए तय्यिबा

ला-इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

कलिमए षहादत

अष-हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व-अष-हदु अन्न मुहम्मदन अब-दुहू व-रसूलुह

اَشْهَدُاَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

कलिमए तम्जीद

सुब-हानल्लाहि वल-हम-दु लिल्लाहि वला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक-बर वला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

कलिमए तौहीद

ला-इला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू ला-षरी-क लहू लहुल-मुल-कु व-ल-हुल हम-दु युह-यी वयुमीतु बियदिहिल खैरु वहु-व अला कुल्लि षैइन क़दीर

لَآ اِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَهٗ ، لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِىْ وَيُمِيْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ

कलिमाए रद्दे कुफ़्र

अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़जु बि-क मिन-अन उष-रि-क बि-क षैअव व अ-न अअ्-लमु बिही व अस-तग-फ़िरु-क लिमा ला अअ्-लमु बिही तुब-तु ़अन-हु वतबर्राअ्तु मिनल-कुफ़-रि वल-मआसी कुल्लिहा अस-लम-तु व-आ-मन-तु व अक़ूलु लाइला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह (स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ اَنْ اُشْرِکَ بِکَ شَيْئًاوَّاَنَااَعْلَمُ بِهٖ وَ اَسْتَغْفِرُکَ لِمَا لَا اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّأْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالْمَعَاصِیْ كُلِّهَا اَسْلَمْتُ وَاٰمَنْتُ وَاَقُوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

{31} नमाज़ की सूरतें

सूरे फ़ातिहा

बिस-मिल्लाहिर्रह-मानिर्रहीम

अल-हम-दु लिल्लाहि रब्बिल ़आलमीन (1) अर्रह-मानिर्रहीम (2) मालिकि यौमिद्दीन (3) इय्या-क नाअ्-बुदु व-इय्या-क नस-त.ईन (4) इह-दिनस़्स़िरातल मुस-तखीम (5) सिरातल्लज़ी-न अन-़अम-त ़अलैहिम गैरिल मग-ज़ूबि ़अलैहिम वलज़-ज़ाल्लीन (6) (आमीन)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿١﴾

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٤﴾

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ﴿٥﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿٦﴾

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿٧﴾

सूरे ज़ुहा

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

वज़्ज़ुहा (1) वल्लैलि इज़ा सजा (2) मा वद्दअ–क रब्बु–क–वमा क़ला (3) वलल–आखिरतु खैरुल–ल–क मिनल ऊला (4) व–ल–सौ–फ़ युअ्–ती–क रब्बु–क फ़तर–ज़ा (5) अलम यजिद–क यतीमन फ़–आवा (6) व–व–जद–क ज़ाल्लन फ़–ह–दा (7) व–व–जद–क आ–इलन फ़अग–ना (8) फ़–अम्मल यती–म फ़ला तक़–हर (9) व–अम्मस–सा–इ–ल फ़ला तन–हर (10) व–अम्मा बि–निअ्–मति रब्बि–क फ़–हद्दिस (11)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالضُّحٰى ﴿١﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ﴿٢﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ﴿٣﴾

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ﴿٤﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ

فَتَرْضٰى ﴿٥﴾ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ﴿٦﴾ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا

فَهَدٰى ﴿٧﴾ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ﴿٨﴾ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ﴿٩﴾

وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾

सूरे इन्शिराह

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

अलम नष–रह ल–क–स़द–रक़ (1) व–व–ज़अ्–ना अन–क विज़–रक़ (2) अल्लज़ी अन–क़–ज़ ज़ह–रक़ (3) व–र–फ़अ्–ना ल–क–ज़िक–रक़ (4) फ़ इन्न मअल उ़स–रि युस़–रा (5) इन्न मअल उ़स–रि युस–रा (6) फ़ इज़ा फ़–रग–त फ़न–स़ब (7) वं इला रब्बि–क फ़र–गब (8)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۙ﴿۱﴾ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۙ﴿۲﴾

اَلَّذِیْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۙ﴿۳﴾ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ؕ﴿۴﴾ فَاِنَّ مَعَ

الْعُسْرِ يُسْرًا ۙ﴿۵﴾ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ؕ﴿۶﴾ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۙ﴿۷﴾

وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿۸﴾

सूरे तीन

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

वत्तीनि वज़्ज़ैतून (1) व–तूरि सीनीन (2) व–हाज़ल ब–ल–दिल अमीन (3) ल–क़द ख–लक़–नल इन–सा–न फ़ी–अह–सनि तक़–वीम (4) सुम्म रदद–नाहु अस–फ़–ल साफ़िलीन (5) इल्लल–लज़ी–न आमनू व–अमिलुस–सालिहाति फ़–लहुम अज–रुन गैरु मम–नून (6) फ़–मा यु–कज़्ज़िबु–क बअ्–दु बिद्दीनं (7) अलै–सल्लाहु बि–अह–कमिल हाकिमीन (8)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ① وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ② وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ③

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْۤ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ④ ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ

سٰفِلِيْنَ ⑤ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ⑥

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ⑦ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ⑧

सूरे ख़द्र

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

इन्ना अन–ज़ल–नाहु फ़ी लै–लतिल क़द्र (1) वमा अद–रा–क मा–लै–लतुल क़द्र (2) लै–लतुल क़द–रि खैरुम–मिन अल–फ़ि–षह–र (3) त–नज़्ज़लुल मलाइ–कतु वर्रूहु फ़ीहा बि–इज़–नि रब्बिहिम मिन कुल्लि अम्र (4) सलामुन हि–य हत्ता मत–लइल फ़ज्र (5)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ① وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ② لَيْلَةُ

الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ③ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا

بِاِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ اَمْرٍ ④ سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ⑤

सूरे बय्यिनह

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

लम यकु निल्लज़ी–न क–फ़रू मिन–अह–लिल किताबि

वल मुष–रि–की–न मुन–फ़क्की–न हत्ता तअ्–ति–यहुमुल बय्यि–नह (1) रसूलुम मिनल्लाहि यत–लू सुहु–फ़म मुतह–हरह (2) फ़ीहा कुतबुन क़य्यि–मह (3) वमा–त–फ़र्रक़ल्लज़ी–न ऊतुल किता–ब इल्ला मिम बअ्–दि मा–जा–अत–हुमुल बय्यि–नह (4) व–मा उमिरू इल्ला लि–यअ्–बुदुल्ला–ह मुख–लिसी–न लहुद्दी–न हु–न–फ़ा–अ व–युक़ीमुस्सला–त व–युअ्–तुज़्ज़का–त व–ज़ालि–क दीनुल क़य्यिमह (5) इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू मिन अह–लिल किताबि वल–मुष–रिकी–न फ़ी नारि जहन्न–म खालिदी–न फ़ीहा उलाइ–क हुम षर्रुल बरिय्यह (6) इन्नल्लज़ी–न आमनू व–अमिलुस्सालि–हाति उलाइ–क हुम खैरुल बरिय्यह (7) जज़ा–उहुम इन–द रब्बिहिम जन्नातु अद–निन तज–री मिन तह–ति–हल अन–हारु खालिदी–न फ़ीहा अ–ब–दा रज़ियल्लहु अन–हुम व–रज़ू–अन्ह ज़ालि–क लिमन खषि–य रब्बह (8)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ

حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۙ﴿۱﴾ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۙ﴿۲﴾

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ؕ﴿۳﴾ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ

بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ؕ﴿۴﴾ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ

مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ۬ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ

وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝٥ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَ

الْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝٦

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰۗىِٕكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝٧

جَزَاۗؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

فِيْهَآ اَبَدًا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝٨

सूरे ज़िल ज़ाल

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

इज़ा ज़ुल–ज़ि–लतिल अर–ज़ु ज़िल–ज़ा–लहा (1) व–अख़–र–जतिल अर–ज़ु अस–क़ा–लहा (2) व–क़ालल इन–सानु मा–लहा (3) यौ–म–इज़िन तु–हदिसु अख–बा–रहा (4) बि–अन्न रब्ब–क अव–हा–लहा (5) यौ–म इजिय–यस–दुरन्नासु अष–ता–तल –लियुरौ अअ्–मा–लहुम (6) फ़मय–यअ्–मल मिस–क़ा–ल जर्रतिन खैरय–यरह (7) वमय–यअ्–मल मिस–क़ा–ल जर्रतिन षर्रय–यरह (8)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝١ وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۝٢

وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۝٣ يَوْمَىِٕذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۝٤ بِاَنَّ

رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۝٥ يَوْمَىِٕذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ڏ لِّيُرَوْا

أَعْمَالَهُمْ ۝٦ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝٧ وَمَنْ

يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝٨

सूरे आदियात

बिस-मिल्लाहिर्रह-मानिर्रहीम

वल आदियाति ज़ब-हा (1) फ़ल मूरियाति क़द-हा (2) फ़ल मुगीराति सुब-हा (3) फ़-अ-सर-न बिही नक़-अ (4) फ़-व-सत-न बिही जम-आ (5) इन्नल इन-सा-न लिरब्बिही ल-कनूद (6) व-इन्नहू अला ज़ालि-क ल-षहीद (7) व-इन्नहू लिहुब्बिल खैरि ल-षदीद (8) अ-फ़ला-यअ्-लमु इज़ा बुअ्-सि-र मा-फ़िल क़ुबूर (9) व हुस्सि-ल मा फ़िस्सुदूर (10) इन्न रब्बहुम बिहिम यौ-म-इज़िल-ल-खबीर(11)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۝١ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۝٢ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۝٣

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۝٤ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۝٥ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ

لَكَنُوْدٌ ۝٦ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۝٧ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۝٨

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۝٩ وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ۝١٠

اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ۝١١

सूरे क़ारिअह

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

अल क़ारिअतु (1) मल क़ारिअह (2) व–मा अद–रा–क मल क़ारिअह (3) यौ–म यकूनुन–नासु कल फ़राषिल मब्स़–सूस (4) व–तकूनुल जिबालु कल इह–निल मन–फ़ूष (5) फ़–अम्मा मन सक़ु–लत मवाज़ीनुहू (6) फ़–हु–व फ़ी ई–षतिर्राज़ियह (7) व–अम्मा मन खफ़्फ़त मवाज़ीनुह (8) फ–उम्मुहू हावियह (9) वमा अद–रा–क माहियह (10) नारुन हामियह (11)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْقَارِعَةُ ۙ (١) مَا الْقَارِعَةُ ۚ (٢) وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۗ (٣)

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۙ (٤) وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ

كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۗ (٥) فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ (٦) فَهُوَ

فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۗ (٧) وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ (٨) فَاُمُّهٗ

هَاوِيَةٌ ۗ (٩) وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ۗ (١٠) نَارٌ حَامِيَةٌ ۧ (١١)

सूरे तकासुर

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

अल–हाकुमुत्तकासुर (1) हत्ता ज़ुर–तुमुल मक़ाबिर (2) कल्ला सौ–फ़ तअ्–लमून (3) सुम्म कल्ला सौ–फ़ तअ्–लमून (4) कल्ला लौ तअ्–लमू–न इल–मल यक़िन (5) ल–त–र–वुन्नल जहीम (6) सुम्म ल–त–र–वुन्नहा ऐनल

यक़ीन(7) सुम्म लतुस अलुन्न यौम इज़िन अनिन–नईम (8)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ① حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ② كَلَّا سَوْفَ

تَعْلَمُوْنَ ③ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ④ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ

الْيَقِيْنِ ⑤ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ⑥ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ⑦

ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ⑧

सूरे अस्र

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

वल–अ़स्र (1) इन्नल इन–सा–न लफ़ी खुस्र (2) इल्ललल–लज़ी–न आमनू व अ़मिलुस–सालिहाति व–त–वासौ बिल हक़्क़ि व–त–वासौ बिस्सब्र (3)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالْعَصْرِ ① اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ② اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ

عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ③

सूरे हु–म–ज़ह

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

वैलुल्लि कुल्लि हु–म–ज़तिल–लु–म–ज़ह(1) अल्लज़ी

ज–म–अ़ मालव–व अ़द्द–दह(2) यह–सबु अन्न मालहू अख–ल–दह (3) कल्ला लयुम–बज़न्न फ़िल हु–त–मह (4) वमा–अद–रा–क मल हु–त–मह (5)नारुल–लाहिल मू–क़–दह (6)अल्लती तत्त–लि–उ़ अ़लल अफ़–इ–दह(7) इन्नहा अलैहिम मुअ़्–स–दह (8) फ़ी–अ़–म–दिम मु–मद्ददह (9)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝١ الَّذِىْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝٢ يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ۝٣ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ۝٤ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝٦ الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝٧ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٨ فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝٩

<u>सूरे फ़ील</u>

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

अलम–त–र कै–फ़ फ़–अ़–ल रब्बु–क बिअस– हाबिल फ़ील (1) अलम यज–अ़ल कै–द–हुम फ़ी तज़–लील (2) व–अर–स–ल अलैहिम तैरन अबाबील (3) तर–मीहिम बिहि–जा–रतिम मिन सिज्जील (4) फ़–ज अ़–ल–हुम क अस–फ़िम मअ़्–कूल (5)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١ اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٢ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣ تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥

सूरे कुरैष

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

लि ईलाफ़ि क़ुरैष (1) ईलाफ़िहिम रिह–लतष्षिता–इ वस्सै (2) फ़ल–यअ्–बुदू रब्ब–हाज़ल बैत (3) अल्लज़ी अत अ–महुम मिन जू–इव–व–आ–म–न–हुम मिन खौफ़ (4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝١ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٢ فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٣ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

सूरे माऊन

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

अ–र–ऐतल्लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्दीन (1) फ़ज़ालि कल्लज़ी यदुअ्–उल यतीम (2) वला यहुज़्ज़ु अला तआमि मिस्कीन (3) फ़वै–लुल–लिल मुसल्लीन (4) अल्लज़ीन हुम अन–सलातिहिम साहून (5) अल्लज़ी–न हु युराऊन (6) व–यम–न ऊनल माऊन (7)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ﴿١﴾ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ﴿٢﴾ وَ لَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿٣﴾ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ﴿٤﴾ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ﴿٥﴾ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ﴿٦﴾ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ﴿٧﴾

सूरे कौसर

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

इन–ना अअ्–तैना कल कौसर (1) फ़सल्लि लिरब्बि–क वन–हर (2) इन्न षानि–अ–क हुवल अब– तर (3)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ﴿١﴾ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ﴿٢﴾ اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ﴿٣﴾

सूरे काफ़िरून

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

क़ुल–या–अय्यु–हल काफ़िरून (1) ला–अअ्–बुदु मा– तअ्–बुदून (2) वला अन–तुम आबिदू–न मा–अअ्– बुद (3) वला अ–न आबिदुम–मा अबत्तुम (4) वला अन–तुम आबिदू–न मा–अअ्–बुद (5) लकुम दीनुकुम वलि–य दीन (6)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ﴿١﴾ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢﴾

وَلَآ أَنتُمْ عٰبِدُونَ مَآ أَعْبُدُ ﴿٣﴾ وَلَآ أَنَا۠ عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ ﴿٤﴾ وَ
لَآ أَنتُمْ عٰبِدُونَ مَآ أَعْبُدُ ﴿٥﴾ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِىَ دِينِ ﴿٦﴾

सूरे नस्र

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

इज़ा जाा–अ नस–रुल्लाहि वल फ़त–हु (1) व–र–ऐ नाा–स यद–खुलू–न फ़ी–दीनिल्लाहि अफ़–वाजा (2) फ़सब्बिह बि–हमदि रब्बि–क वस–तग–फ़िर–हु इन्न–हू का–न तव्वाबा (3)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ﴿١﴾ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِى دِينِ
اللّٰهِ أَفْوَاجًا ﴿٢﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ﴿٣﴾

सूरे ल–हब

बिस–मिल्लाहिर्रह–मानिर्रहीम

तब्बत–यदा अबी–ल–ह–बिव–वतब्ब (1) मा–अग–ना अन–हु मालुहू व–मा कसब (2) स–यस–ला नारन ज़ा–त लहब (3) वम–र अतुहू हम्मा–ल–तल हतब (4) फ़ीजीदिहा हब–लुम–मिम मसद (5)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبَّتْ يَدَآ أَبِى لَهَبٍ وَتَبَّ ﴿١﴾ مَآ أَغْنٰى عَنْهُ مَالُهُ وَمَا

كَسَبَ ۝٢ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣ وَّامْرَاَتُهٗ ۭ حَمَّالَةَ

الْحَطَبِ ۝٤ فِیْ جِیْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝٥

सूरे इख़-लास

बिस-मिल्लाहिर्रह-मानिर्रहीम

क़ुल-हुवल्लाहु अहद (1) अल्लाहुस्समद (2) लम-यलिद वलम यूलद (3) वलम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद (4)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ یَلِدْ ۙ وَلَمْ

یُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

सूरे फ़लक़

बिस-मिल्लाहिर्रह-मानिर्रहीम

क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़ (1) मिन षर्रि मा-खलक़ (2) वमिन षर्रि गासिक़िन इज़ा वक़ब (3) वमिन षर्रिन-नफ़्फ़ा साति फ़िल उक़द (4) वमिन षर्रि हासिदिन इज़ा हसद (5)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝١ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا

وَقَبَ ۝٣ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۝٤ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝٥

सूरे नास

बिस-मिल्लाहिर्रह-मानिर्रहीम

कुल अऊजु बिरब्बिन नास (1) मलिकिन्नास (2) इलाहिन्नास (3) मिन-षर्रिल वस-वासिल खन्नास (4)

अल्लज़ी युवस- विसु फ़ी-स़ु-दूरिन्नास (5) मिनल जिन्नति वन्नास (6)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ① مَلِكِ النَّاسِ ② اِلٰهِ النَّاسِ ③

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ④ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ

صُدُوْرِ النَّاسِ ⑤ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ⑥

{32} **अत्तहिय्यात, दरूदे इब्राहीम, दुवाये मासूरा, दुआये खुनूत, और आयतल कुरसी**

अत्तहिय्यात

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस़्स़-ल-वातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु ,अलै-क अय्युहन्नबिय्यु व-रह-मतुल्लाहि व-ब-र- कातुहु अस्सलामु ,अलैना व-,अला इबा-दिल्लाहिस़-स़ालिहीन अष-हदु अल्ला-इला-ह इल्लल-लाहु व-अष हदु अन्न मुहम्मदन ,अब-दुहू वरसूलुह

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ. اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

दरूदे इब्राहीम

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिव -व-अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा स़ल्लै-त अ़ला इब-रा-हीम व-अला आलि इब-रा-हीम इन्न-क हमीदुम मजीद अल्लाहुम्म बारिक अ़ला मुहम्मदिव- व-अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अ़ला इब-रा-हीम व-अ़ला आलि इब-रा-हीम इन्न-क हमीदुम मजीद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ

عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ

عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ ابْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

दुवाये मासूरा

अल्लाहुम्म इन्नी ज़लम-तु नफ़-सी ज़ुल-मन कसीरव वला यग़-फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन-त फ़ग-फ़िर-ली मग-फ़िरतम मिन इन-दि-क वर-हम-नी इन्न-क अन-तल गफ़ूरुर रहीम

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ

اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْلِىْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِىْ اِنَّكَ

اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

दुआये क़ुनूत

अल्लाहुम्म इन्ना नस–त ईनु–क व–नस–तग–फ़िरु–क वनुअ्–मिनु बि–क व–न–त–वक्कलु अलै–क वनुस–नी अलै–कल खैर व–नष कुरु–क वला नक–फ़ुरु–क व–नख–ल–उ व–नत–रुकु मय्यफ़–जुरु–क अल्लाहुम्म इय्या–क नाअ्–बुदु व–ल–क नुसल्ली व–नस–जुदु व–इलै–क नस–आ व–नह–फ़िदु वनर–जू रह–म–त–क वनख–षा अज़ा–ब–क इन्न अज़ा–ब–क बिल कुफ़्फ़ारि मुल–हिक़

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُوْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ

आयतल कुर–सी

अल्लाहु लाइला–ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम ला–तअ्–खुज़ुहू सिनतुव वला नौम लहू मा फ़िस्समावाति वमा फ़िल–अर–ज़ि मन–जल्लज़ी यष–फ़–उ इन–दहु इल्ला बि इज़्न निही यअ्–लमु मा बै–न ऐदीहिम वमा खल–फ़हुम वला युहीतू–न बिषैइम मिन–इल्मिही इल्ला बिमा षा–अ वसिअ कुर–सिय्यु–हुस्समा–वाति वल–अर्ज वला यऊदुहू हिफ़–ज़ु हुमा वहु–वल अलिय्युल अज़ीम ।

اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ. لَاتَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَانَوْمٌ لَهٗ مَافِی السَّمٰوٰتِ وَمَافِی الْاَرْضِ مَنْ ذَالَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗ اِلَّا بِاِذْنِهٖ.یَعْلَمُ مَابَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖ اِلَّا بِمَا شَاءَ. وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَایَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ.

{33} मस्नून दुआयें

(1) कोई काम षुरु करने से पहेले "बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम" कहे ।

(2) जब किसी काम का इरादा करेतो "इन्षा अल्लाह तआला" कहे ।

(3) जब किसी मुसल्मान से मुलाक़ात होतो "अस्सलामु अलैकुम वरह-मतुल्लाहि व-ब-र-कातुह" कहे ।

(4) कोई मुसीबत या परेषानी आने पर "या अल्लाह" कहे

(5) जब कोई चीज़ अच्छि लगे तो "मा षाअल्लाह" कहे

(6) जब कोई एहेसान करेतो "जज़ाकल्लाह" कहे ।

(7) जब कोई खुषी का वक़्त आयेतो "फ़तबा-र कल्लाह" कहे ।

(8) जब कोई गलत बात सुने तो "अऊजु बिल्लाह" कहे

(9) जब किसी से वादा करे तो "वल्लाहि बिल्लाह" कहे

(10) जब किसी से जुदा होतो "फ़ी अमानिल्लाह कहे

(11) जब किसी को सदक़ा, खैरात करे तो "फ़ी अमानिल्लाह" कहे ।

(12) गुनाहों से तौबा के लिए "असतग फ़िरुल्लाह" कहे

(13) जब कभी छिंक आये तो "अल–हम–दु लिल्लाह" कहे ।

(14) जब किसी कि मौत कि खबर सुने या कोई चीज़ गुम होजाये तो "इन्ना लिल्लाहि व–इन्ना इलैहि राजिऊन" कहे ।

(15) सुबाह व षाम पढने कि दुआ :– "बिस्मिल्ला हिल्लज़ी ला–यूजुर्रु म–अस मिही षैउन फ़िल–अर–ज़ि वला–फ़िस्समा–इ वहुवस्समीउल अलीम" (तिर्मिज़ी)

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَایَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی

السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ

(16) सोते वक़्त कि दुआ :– "अल्लाहुम्म बिस्मि–क अमूतु व–अह–या"

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِکَ اَمُوْتُ وَاَحْیَا

(17) सोते वख्त डर जाये या घब्रा जाये तो ये दुआ पढे "अऊजु बिकलिमा तिल्ला–हित्ताम्मति मिन ग–ज़–बिही व–इक़ाबिही व षर्रि इबादिही वमिन हमज़ातिष षयातीनि व अय–यह ज़ुरून" (हिस्ने हसीन)

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ

عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنِ

(18) जब सोकर उठे तो ये दुआ पढे :–
"अल–हमदु लिल्ला–हिल्ला–ज़ी अह–याना बअ्–दमा अमा–तना व इलैहिन्नुषूर"

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ

(19) पाखाने मे दाखिल होते वक्त ये दुआ पढे :-
"अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनल खुबुसि वल खबाइस"

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ

(20) पाखाने से निकल्ते वक्त ये दुआ पढे:-
"गुफ़ रा-न-क अल-हम-दु लिल्ला-हिल्लज़ी अज़-ह-ब अन्निल अज़ा व आफ़ानी" (मिषकात)

غُفْرَانَکَ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَذْھَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

(21) मस्जिद में दाखिल होते वक्त ये दुआ पढे :-
"अल्लाहुम्मफ़-तह-ली अब-वा-ब रह-मतिक"

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ

(22) मस्जिद से बाहर निकल्ते वक्त ये दुआ पढे :-
"अल्लाहुम्म इन्नी अस अलुक मिन फ़ज लिक

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ

(23) अज़ान के बाद ये दुआ पढे :-
"अल्लाहुम्म रब्ब हाज़ि हिद्दअ्-वतित-ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्मदनिल वसी-ल-त वल-फ़ज़ी-ल-त वब- अस-हु मक़ा-मम मह-मू-द-निल्लज़ी व-अ़त्तहु इन्न-क ला-तुख-लिफ़ुल मीआद"

اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِہِ الدَّعْوَۃِ التَّآمَّۃِ وَالصَّلٰوۃِ الْقَآئِمَۃِ اٰتِ مُحَمَّدَنِ الْوَسِیْلَۃَ وَالْفَضِیْلَۃَ وَابْعَثْہُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَانِ الَّذِیْ وَعَدْتَّہٗ اِنَّکَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ

(24) जब घर में दाखिल होतो ये दुआ पढे :-
"अल्लाहुम्म इन्नी अस-अलु-क खैरल मव लजि व खैरल मख-रजी बिस्मिल्लाहि वलज-ना बिस्मिल्लाहि खरज-ना व अलल्लाहि रब्बिना तवक्कल-ना"

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ خَیْرَ الْمَوْلَجِ وَخَیْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰہِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰہِ خَرَجْنَا وَ عَلَی اللّٰہِ رَبِّنَا تَوَکَّلْنَا

(25) घर से निकल्ते वक़्त ये दुआ पढे :-
"बिस्मिल्लाहि तवक्कल-तु अलल्लाहि ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह"

بِسْمِ اللّٰہِ تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ

(26) **जब सफ़र** का इरादा करे तो ये दुआ पढे :-
"अल्लाहुम्म बि-क असूलु व बि-क अहूलु वबि-क असीर"

اَللّٰھُمَّ بِکَ اَصُوْلُ وَبِکَ اَحُوْلُ وَبِکَ اَسِیْرُ

(27) **जब** सवार होने लगे तो ये दुआ पढे :-
"सुब-हानल्लज़ी सख्ख-र लना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़-रिनी-न व इन्न इला रब्बिना लमुन क़लिबून"

سُبْحَانَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا ھٰذَا وَمَا کُنَّا لَہٗ مُقْرِنِیْنَ وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

(28) सफ़र से वापस होकर जब घर में दाखिल होतो ये दुआ पढे :-

"औबन औबल लिरब्बिना तौबल्ला युगादिरु अलैना हौबा"

اَوْباً اَوْباً لِرَبِّنَا تَوْباً لَّا يُغَادِرُ عَلَيْنَا حَوْباً

(29) दूध पीते वक़्त ये दुआ पढे :-

"अल्लाहुम्म बारिक-लना फ़ीहि वज़िद-ना मिन-हु"

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ

(30) मिठा खाते वक़्त कि दुआ :-

"अल्लाहुम्मर जुक़-ना हला-वतल ईमान"

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا حَلَاوَةَ الْاِيْمَانِ

(31) नया फ़ल खाते वक़्त कि दुआ :-

"अल्लाहुम्म बारिक-लना फ़ी समरिना व बारिक-लना फ़ी मदीनतिना व बारिक-लना फ़ी साइना व बारिक-लना फ़ी मुद्दिना"

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ ثَمَرِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِيْ مَدِيْنَتِنَا
وَبَارِكْ لَنَا فِيْ صَاعِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِيْ مُدِّنَا

(32) खाना खाने से पहेले ये दुआ पढे :-

"बिस्मिल्लाहि व-अ़ला ब-र-क-तिल्लाह"

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى بَرَكَةِ اللّٰهِ

(33) खाने से पहेले की दुआ भूल जाये तो दरमियान मे ये दुआ पढे :-

"बिस्मिल्लाहि अव्वलहु व आखिरहु"

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ

(34) खाने से फ़ारिग होकर ये दुआ पढे :- "अल-हम-दु लिल्ला-हिल्लज़ी अत-अमना व-सक़ाना व-ज-अलना मिनल मुस-लि-मीन"

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ

(35) जब किसी के यहाँ दावत खाये तो ये दुआ पढे :- "अल्लाहुम्म अत-इम मन अत-अमनी वस-क़ि मन सक़ानी"

اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِیْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِیْ

(36) कपडे पेहेन्ते वक़्त ये दुआ पढे :-
"अल-हंम-दु लिल्ला-हिल्लज़ी कसानी हाज़ा व-र-ज़-क़नीहि मिन गैरि हौलिम मिन्नि वला क़ुव्वह"

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ کَسَانِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ

(37) नया कपडा पेहेन्ते वक़्त ये दुआ पढे :-
"अल्ला-हुम्म ल-कल हम-दु कमा कसौ-तनीहि अस-अलुक खै-र-हु व खै-र मा-सुनि-अ-लहू व-अऊज़ु बि-क मिन षर्रिही व षर्रि मा-सुनि-अ-लहु"

اَللّٰهُمَّ لَکَ الْحَمْدُ کَمَا کَسَوْتَنِیْهِ اَسْئَلُکَ خَیْرَهٗ وَ خَیْرَ مَا صُنِعَ لَهٗ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَاصُنِعَ لَهٗ

(38) जब कभी आयिने में अपनी सूरत देखेतो ये दुआ पढे :- "अल्ला-हुम्म अन-त हस्सन-त खल-क़ी फ़-हस्सीन खुलुक़ी"

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَحَسِّنْ خُلُقِیْ

(39) बारिष के लिए 3 बार ये दुआ पढे :-
"अल्लाहुम्म अगिस-ना" اَللّٰھُمَّ اَغِثْنَا
(40) ज़ुबा करते वक़्त ये दुआ पढे :-
बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक-बर بِسْمِ اللّٰہِ اَللّٰہُ اَکْبَرْ

{34} गुसुल के फ़राइज़, वाजिबात, सुन्नतें, मुस्तहब्बात, मकरूहात और मसाइल

गुसुल के फ़राइज़ :- गुसुल में 3 छीज़ें फ़रज़ हैं (1) मूँह भर कर कुल्ली करना (अगर रोज़ा ना होतो पानी मूँह में लेकर गरगरा करना) (2) नाक में नरम हड्-डी तक पानी डालना (3) तमाम बदन पर इस तरह पानी बहाना के एक बाल बराबर भी जगे खुष्क (सूखा) ना रहे ।

गुसुल के वाजिबात :- (1) कुल्ली करना (2) नाक में पानी चढाना (3) गुनधे हुवे बालों को खोल-कर तर करना (भिगाना) (4) नाक के अन्दर जो मैल नाक के लुआब से जम जाता है उस्को छुडाकर उस्के नीचे कि सते का धोना

गुसुल कि सुन्नतें :- (1) नापाकी दूर करने की निय्यत करना (2) दोनों हाथ गट्टों तक धोना (3) षरमगाहों

का धोना (4) बदन पर कहीं नापाकी वगैरा लगी हो तो उस्को धोना (5) वज़ू करना (6) तीन बार पूरे बदन पर पानी बहाना (7) पहेले सर पर फिर दायें कंधे पर फिर बायें कंधे पर पानी बहाना (8) जहाँ पानी ना पहुन्चा हो वहाँ हाथ से मलकर पानी पहुन्चाना ।

<u>गुसुल के मुस्तहब्बात</u> :- (1) ऐसी जगे नहाना जहाँ किसी ना मेहेरम की नज़र ना पहुंचे (2) सतर को ढांक कर तेहबंद (लुंगि) वगैरा बांद कर नहाना (3) जो चीज़ें वज़ू में मुस्तहब हैं वो गुसुल में भी मुस्तहब हैं सिवाए खिंब्ले रू होनेके ।

<u>गुसुल के मकरूहात</u> :- (1) बिला जरूरत ऐसी जगे गुसुल करना जहाँ किसी गैर मेहेरम की नज़र पहुंच सके (2) नंगा (बरहना) नहाने वाले का क़िब्ला रू होना (3) बिला जरूरत किसी से भी बात करना (4) सुन्नत के खिलाफ़ गुसुल करना (5) बिसमिल्लाह के अलावा और दुआयें पढना

<u>गुसुल के मसाइल</u> :- (1) अगर तमाम बदन में एक बाल बराबर भी जगे सूखि रहेजायेगी तो गुसुल नहीं होगा (2) अगर गुसुल के बाद याद आया के फ़लानी जगे सूखी रहेगयि थि तो फिर से नहाना वाजिब नहीं बलके जहाँ सूखा रहेगया था उस्को धोना काफ़ी है (3) अगर बदन का कुछ हिस्सा सूखा रहेगया या कुल्ली करना या नाक में पानी डालना भूल गया और इसी हालत में नमाज़ पढली फिर बाद में याद आया तो जो बात गुसुल के फ़राइज़ में से रहेगयी उस्को पूरा करले और उस नमाज़ को भी

लौटाले (दुबारा पढले) (4) अगर एक बाल की भी जड में पानी ना पहुंचा तो गुसुल नहीं होगा (5) अगर नाखुन में आटा लगकर सूख गया या जिसम पर चरबी, मोम या तारकोल लग गया और उस्के नीचे पानी नहीं पहुंचा तो गुसुल नहीं होगा और नाखुनों के ऊपर नाखुन पालिष लगी हो तो भी गुसुल नहीं होगा (6) सरदी की वजे से हाथ पैर के फटे हुवे हिस्से में अगर कोई दवा लगी हुवी हो तो उस्के ऊपर पानी बहाने से गुसुल अदा होजाता है और जखम पर पट्टी लगी हुवी हो तो उस पर गीला हाथ फेरने से भि गुसुल होजाता है अगर पट्टी पर या दवा पर पानी बहाना नुख्सान देह हो तो गीला हात फेरना काफ़ी है वरना पानी पहुंचाना जरूरी है ।

{35} गुसुल करना कब फ़रज़ होता है ?

इन असबाब के बाद गुसुल करना फ़रज़ है (1) षेहवत से मनी का निकल्ना (2) इहतेलाम का होना (3) वती करना (बीवी से हमबिस्तरी करना) (4) हैज़ का रुक जाना (5) निफ़ास का खतम होजाना

{36} गुसुल करना कब वाजिब होता है?

अगर काफ़िर इस्लाम लाये और हालते कुफ़र में उस्को हदसे अकबर लाहिख हुवा हो और वो अभी तक ना नहाया हो या नहाया हो मगर षरई तरीक़े से गुसुल ना किया हो । मसलन कुल्ली ना की हो तो उस पर इस्लाम लाने के बाद नहाना वाजिब है ।

{37} गुसुल करना कब सुन्नात होता है ?

(1) जुमा की नमाज़ के लिए गुसुल करना (2)

दोनों ईदैन के लिए गुसुल करना (3) हज का एहराम बांदने से पहेले गुसुल करना (4) अरफ़ात में वुक़ूफ़ करने (टेहेरने) के लिए गुसुल करना ।

{38} गुसुल करना कब मुस्तहब होता है?

गुसुले मुस्तहब बहुत हैं जिन में से चंद गुसुल ए हैं (1) षाबान के महीने की पंद्रवीं रात में जिसे षबे बरात कहेते हैं गुसुल करना (2) अरफ़े की रात में गुसुल करना यानी ज़िल हिज्जा की आठवीं तारीख की षाम के बाद आने वाली रात में (3) सूरज ग्रहन, चांद ग्रहन की नमाज़ के लिए गुसुल करना (4) नमाज़े इस्तेस्क़ा के लिए गुसुल करना (5) मक्के मुअज़्ज़मा या मदीने मुनव्वरा में दाखिल होने के लिए गुसुल करना (6) मय्यत को गुसुल देने के लिए गुसुल देने वाले का गुसुल करना (7) काफ़िर का इस्लाम लाने के बाद गुसुल करना जब्के वो षरई तरीखे से गुसुल किआ हो ।

{39} वज़ू के फ़राइज़, सुन्नतें, मुस्तहब्बात और मकरूहात

वज़ू के फ़राइज़ :- (1) पेषानी के बालों से थुड्डी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक पूरा चेहेरा धोना (2) दोनों हाथों को कोहिनियों समेत धोना (3) चौथाइ सर का मसह करना (4) दोनों पावूं टखनों समेत धोना

तंबीह :- इन आज़ा का सिर्फ़ एक मर्तबा धोना फ़रज़ है इन आजा में से अगर एक बाल बराबर भी कोई जगह सूखी रहेजाये तो वज़ू ना होगा ।

<u>वज़ू की सुन्नतें</u> :- (1) नियत करना नापाकी दूर करने की या किसी भी इबादत की (2) बिस्मिल्लाह पढ़कर वज़ू षुरू करना (3) तीन बार दोनों हाथ गठ्ठों तक धोना (4) मिस्वाक करना और अगर मिस्वाक ना हो तो उँगली से दाँतों को मल्ना (5) तीन बार कुल्ली करना (6) तीन बार नाक में पानी डाल्ना (7) दाढी का खिलाल करना, हाथ पवुं की उँग्लियों का खिलाल करना (8) हर अज़ू को तीन बार धोना (9) एक बार तमाम सर का मसह करना यानी भीगा हुवा हाथ फेरना (10) दोनों कानों का मसह करना (11) तरतीब से वज़ू करना (12) आज़ा को पै दर पे धोना यानी एक अज़ू सूख्ने से पहेले दूस्रा अज़ू धोना (13) वज़ू के बाद की दुआ पढ्ना

<u>वज़ू के मुस्तहब्बात</u> :- (1) क़िब्ला रुख बैठ्ना (2) मिट्टी के बरतन से वज़ू करना (3) वज़ू का लोठा बायें तरफ़ रख्ना (4) ऊंची जगे पर बैठ् कर वज़ू करना (5) बायें हाथ से नाक साफ़ करना (6) हर अज़ू पर पहेले भीगा हुवा हाथ फेरना (7) अंगोठी को हरकत देना जब के ढीली हो वरना फ़रज़ है (8) हर अज़ू धोते वख्त बिस्मिल्लाह केहेना (9) वज़ू में दरूदे षरीफ़ पढना (10) गरदन का मसह करना (मसह उँग्लियों के पीछे हिस्से से करे) (11) आज़ा को धोने में दाहिनी तरफ़ से षुरु करना (12) वज़ू का बचा हुवा पानी खडे होकर पीना (13) आज़ा को जहाँ तक धोने का हुकुम दिया गया उस्से जियादा धोना (14) बायें हाथ से दोनों पावुं धोना (15) दूस्रों से मदद ना लेना अगर माज़ूर ना हो (16) वज़ू के बाद सूरे क़द्र पढ्ना (17)

कलिमे षहादत का पढना

<u>वज़ू के मक्रूहात</u> :- (1) चेहेरे पर ज़ोर से पानी मारना (2) पानी का जरूरत से कम या जियादह इस्तेमाल करना (3) वज़ू में सख्त हाजत के बगैर दुनिया की बात करना (4) तीन बार नये पानी से मसह करना (5) नापाक जगे में वज़ू करना (6) औरत के बचे हुवे पानी से वज़ू करना (7) मस्जिद के अन्दरूनी हिस्से में वज़ू करना (8) ऐसे पानी में थूक्ना या नाक छीनक्ना जिस्से वज़ू कर रहा हो (9) वज़ू करते वख्त पावुं को क़िब्ले से ना फ़ेरना (10) बायें हाथ से कुल्ली के लिये पानी लेना और बायें हाथ से नाक में पानी लेना (11) बगैर उज़र के दाहिने हाथ से नाक साफ़ करना (12) किसी बरतन को अपने वज़ू के लिये खास करना ।

{40} <u>वज़ू की दुआयें</u>

(1) वज़ू करने से पहेले कि दुआ :-

बिस्मिल्लाहिल अज़ीमि वल-हम-दु लिल्लाहि अला दीनिल इस्लाम

بِسْمِ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى دِيْنِ الْاِسْلَامِ

(2) दोनो हाथ धोते वक़्त की दुआ :-

अल्लाहुम्म इन्नी अस-अलु कल युम-ना वल-ब-र-क-त व-अऊज़ु बि-क मि-नष्षूमि वल-हला-कह

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ الْیُمْنٰی وَالْبَرَکَةَ وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ الشُّوْمِ وَالْهَلَاکَةِ

(3) कुल्ली करते वक़्त की दुआ :-
अल्लाहुम्म अ-इन्नी अला ज़िक-रि-क व षुक- रि-क व हुस-नि इबादतिक

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ

(4) नाक में पानी दाल्ते वक़्त की दुआ :-
अल्लाहुम्म अरिह-नी रा-इ-हतल जन्नति वला तुरिह नी रा-इ हतन्नार

اَللّٰهُمَّ أَرِحْنِیْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ وَلَا تُرِحْنِیْ رَائِحَةَ النَّارِ

(5) नाक छींक्ते वक़्त की दुआ:-
अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन रवा-इ हिन्नारि व मिन सू इद्दार

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ رَوَائِحِ النَّارِ وَ مِنْ سُوْءِ الدَّارِ

(6) चेहेरा धोते वक़्त की दुआ:-
अल्लाहुम्म बय्यिज़ वज-ही यव-म तब-यज़्ज़ु वुजू-हु औलिया-इ-क वला तुसव्विद वज-ही यौ-म तस-वद्दु वुजू-हु अअ्-दाइक

اَللّٰهُمَّ بَیِّضْ وَجْهِیْ یَوْمَ تَبْیَضُّ وُجُوْهُ اَوْلِیَائِکَ
وَلَاتُسَوِّدْ وَجْهِیْ یَوْمَ تَسْوَدُّ وُجُوْهُ أَعْدَائِکَ

(7) दाहिना हाथ धोते वक़्त की दुआ :-
अल्लाहुम्म अअ्-तिनी किताबी बियमीनी व-हा सिब-नी हिसाबय-यसीरा

اَللّٰهُمَّ أَعْطِنِیْ کِتَابِیْ بِیَمِیْنِیْ وَحَاسِبْنِیْ حِسَابًا یَّسِیْرًا

(8) बायाँ हाथ धोते वक़्त की दुआ :-

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बि–क अन–तुअ्–तियनी किताबी बिषिमाली अव–मिव–वरा–इ ज़ह–री

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ اَنْ تُعْطِيَنِیْ كِتَابِیْ بِشِمَالِیْ اَوْ مِنْ وَّرَاءِ ظَهْرِیْ

(9) सर के मसह के वक़्त की दुआ :-

अल्लाहुम्म अज़िल्लनी तह–त ज़िल्लि अर–षि–क यौ–म–ला–ज़िल्ल इल्ला ज़िल्लु अर–षिक

اَللّٰهُمَّ اَظِلَّنِیْ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِکَ يَوْمَ لَاظِلَّ اِلَّاظِلُّ عَرْشِکَ

(10) कानों के मसह के वक़्त की दुआ :-

अल्लाहुम्मज अल–नी मिनल्लज़ी–न यस–तमिऊनल क़ौ–ल फ़यत्तबिऊ–न अह–स–नहु, अल्लाहुम्म अस–मिअ्–नी मुनादियल जन्नति म–अल अब्–रार

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ اَللّٰهُمَّ اَسْمِعْنِیْ مُنَادِیَ الْجَنَّةِ مَعَ الْاَبْرَارِ

(11) गर्दन का मसह करते वक़्त की दुआ :-

अल्लाहुम्म फ़ुक्क र–क़–बती मि–नन–नारि व–अऊज़ुबि–क मिनस्सला सिलि वल–अग–लाल

اَللّٰهُمَّ فُکَّ رَقَبَتِیْ مِنَ النَّارِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ السَّلَاسِلِ وَالْاَغْلَالِ

(12) दाहिना पैर धोते वक़्त की दुआ :-
अल्लाहुम्म सब्बित क़-द-मय्य अला सिरातिकल मुस्तक़ीम

اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْ قَدَمَیَّ عَلٰی صِرَاطِکَ الْمُسْتَقِیْم

(13) बायाँ पैर धोते वक़्त की दुआ :-
अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बि-क अन-तज़िल्ल क़-द-मय्य अलस्सिराति यौ-म तज़िल्लु अक़-दामुल मुनाफ़िक़ी-न फ़िन्नार

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَعُوْذُبِکَ اَنْ تَزِلَّ قَدَمَیَّ عَلَی الصِّرَاطِ یَوْمَ تَزِلُّ اَقْدَامُ الْمُنَافِقِیْنَ فِی النَّارِ

(14) वज़ू करते वख्त की दुआ :-
अल्लाहुम्मग फ़िर-ली जंबी व-वस्सिअ्-ली फ़ी-दारी व-बारिक-ली फ़ी-रिज-क़ी

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذَنْبِیْ وَوَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ وَبَارِکْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ

(15) वज़ू के बाद की दुआ :-
वज़ू के बाद पहेले दरूद षरीफ़ पढे और आस्मान की तरफ़ निगाह और उँगली उठाकर कलिमए षहादत पढे "अष-हदु अल्ला इला-ह इल्लाल्लाहु व अष-हदु अन्न मुहम्मदन अब-दुहू व रसूलुह और ए दुआ पढे :-
अल्लाहुम्मज अल-नी मिनत्तव्वाबी-न वज-अल- नी मिनल मु-त-तहिहरीन (मराखुल फ़ला)

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِیْنَ

{41} वज़ू का तरीखा बा तस्वीर

खिब्ले रुख बैठ्ना
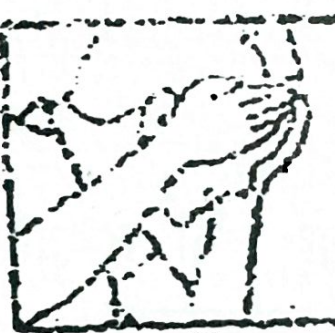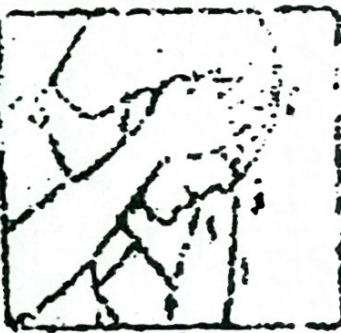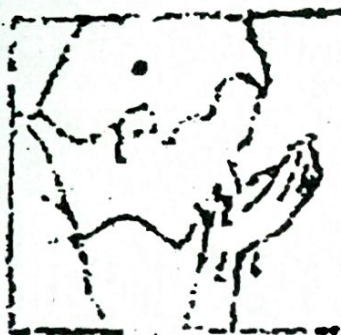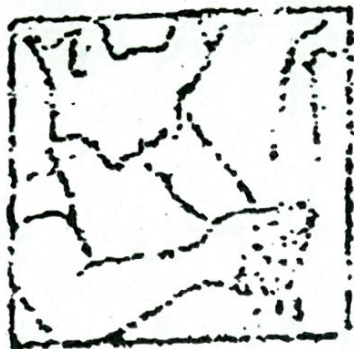
मिस्वाक करना सुन्नत है

{42} वज़ू को तोड़ने वाली चीज़ें और वज़ू के मसाइल

वज़ू को तोड्ने वाली चीज़े 8 है (1) पाखाना या पेषाब करना या इन दोनो रास्तों से किसी और चीज़ का निकल्ना (2) हवा का पीछे से निकल्ना (3) बदन के किसी भी जगे से पीप या खून का निकल कर बेहेजाना

(4) मूँह भर के खै करना (5) लेट कर या सहारा लगा कर सोजाना (6) बीमारी या किसी वजे से बेहोष होजाना (7) मज्नून यानी दिवाना होजाना (8) नमाज़ में खह खहे मार कर (खिल खिला कर) हस्ना

मसअला :- कोई नापाक चीज़ बदन से निकल कर उस जगे की तरफ़ जिस का धोना वज़ू या गुसुल में फ़रज़ है थोडि सी भी बेह जाये तो वज़ू टूट जाता है

वज़ू के मसाइल :- खै (उल्टी) करने में पीप या खून या खाना या पानी निक्ले और मूँह भर के होतो वज़ू टूट जायेगा और अगर खालिस बल्गम निक्ले तो वज़ू नहीं टूटेगा जोंक काट्ने से वज़ू टूट्ता है और मच्छर, पिस्सू के काट्ने से वज़ू नहीं टूट्ता खडे खडे सोजाने या बगैर सहारा लगाये हुवे बैठ्कर सोने या नमाज़ की किसी हैअत पर सोने से वज़ू नहीं टूट्ता जैसे सज्दे में सोगया और टेक लगा कर किसी छीज़ का सहारा लगाकर सोने से वज़ू टूट्ता है ।

{43} वज़ू करना कब फ़रज़ होता है?

(1) हर नमाज़ के लिये (2) नमाज़े जनाज़ा के लिये, (3) क़ुरआन छूने के लिये (4) क़ुरआन षरीफ़ के सज्दे तिलावत के लिये ।

{44} वज़ू करना कब वाजिब होता है?

काबेतुल्लाह का तवाफ़ करने के लिये वज़ू करना वाजिब है ।

{45} वज़ू करना कब सुन्नत होता है?

(1) अज़ान व तक्बीर के लिये (2) जुमा और ईदैन

के खुत्बे के लिये (3) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खब्रे मुबारक की ज़ियारत के लिये (4) फ़रज़ गुसुल से पहेले वज़ू करना ।

{46} वज़ू करना कब मुस्तहब होता है?

(1) ज़ुबानी क़ुरआन पढ्ने के लिये (2) हदीस षरीफ़ और इल्मे दीन पढ्ने के लिये (3) दीनी किताबें छूने के लिये (4) हमेषा बावज़ू रहेने के लिये (5) सोने से पहेले और सोने के बाद में (6) गीबत करने पर (7) झूट बोल्ने पर (8) बुरी बात केहेने पर (9) ग़ुस्से के वख्त (10) काफ़िर के बदन को छूने के बाद ।

{47} मिस्वक के फ़ज़ाइल

जो नमाज़ मिस्वाक करके पढी जाये वो उस नमाज़ से जो बिला मिस्वाक के पढी जाये 70 दरजे अफ़ज़ल है । मिस्वाक का एहेतेमाम किया करो इस्में बहुत फ़ाइदे हैं ।

(1) मूँह को साफ़ करती है (2) खुष्बो पैदा करती है (3) मसोडों को खुव्वत देती है (4) बलगम को खतम करती है (5) सफ़रा को दूर करती है (6) निगाह तेज़ करती है (7) अल्लाह त–आला की रज़ा का सबब है (8) अल्लाह तआला का महेबूब है (9) फ़रिष्तों का महेबूब है (10) षैतान को गुस्सा दिलाती है (11) सब से बडा फ़ाइदा ये है के मौत के वख्त कलिमा नसीब होता है (12) मिस्वाक अंबिया अलैहिमुस्सलां की सुन्नत है (13) मिस्वाक हाफ़िज़ा (याद दाष्त) बढाता है (14) मौत के अलावा हर बीमारी से षिफ़ा है ।

{48} मिस्वक इस्तेमाल करने का तरीक़ा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस–ऊद रजि॥ से मन्खूल है मिस्वाक इस तरह पकड़्ना चाहिये के छोटि उँग्ली और आंगोठा मिस्वाक के नीचे कि जानिब और बाखी उँग्लियाँ मिस्वक पर रहे । मिस्वाक करते वख्त ए निय्यत होनी चाहिये के मै अप्ने मूँह को क़ूरआन पढ्ने के लिये या नमाज़ में खूदा का ज़िकर करने के लिये पाक करता हूं । मिस्वाक करने का तरीखा पहेले मिस्वाक ऊपर के दांन्तो में दाहिनी तरफ़ कीजाये फ़िर ऊपर की बायें जानिब उस्के बाद नीचे के दांन्तो में दाहिनी तरफ़ और फ़िर बाये तरफ़ करना चाहिये

{49} मिस्वाक की दुआ

अल्लाहुम्म तहिहर फ़मी व नव्विर क़ल्बी व–तहिहर ब–द–नी व–हर्रिम ज–सदी अलन्नार

اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ فَمِىْ وَنَوِّرْ قَلْبِىْ وَطَهِّرْ بَدَنِىْ وَحَرِّمْ جَسَدِىْ عَلَى النَّارِ

{50} मिस्वाक के चंद आदाब

(1) मिस्वाक का मूँह ना ज़ियादा नरम ना ज़ियादा सख्त दरमियानी दरजे का होना चाहिये (2) मिस्वाक की लक्डी साफ़ सीधी हो (3) मिस्वाक का कुन (छोटी) उँग्ली के बराबर मोटा होना मुस्तहब है (4) चित लेट कर मिस्वाक करना मकरूह है (5) मिस्वाक षुरु में एक बालिष्त के बराबर हो उस्से ज़ियादा ना हो क्यूंके उस पर षैतान सवार होता है (6) मिस्वाक को चूस–ना नहीं चाहिये (7) इस्तेमाल के वख्त मिस्वाक को धोलिया जाये ताके मैल कुचेल दूर होजाये और इस्तेमाल के

बाद भी धोकर रख्ना चाहिये (8) मिस्वाक खडी करके रख्ना चाहिये ज़मीन पर ना डाला जाये (9) मिस्वाक अगर सूख जाये तो उस्को पानी से नरम करना मुस्तहब है (10) मिस्वाक तीन मर्तबा करना चाहिये हर मर्तबा पानी में भिगोना बेहेतर है (11) वज़ू के पानी में मैल कुचैल होने की हालत में दाखिल करना मकरूह है (12) बैतुल खला में मिस्वाक करना मकरूह है (13) मिस्वाक को दोनों तरफ़ इस्तेमाल ना किया जाये (14) मिस्वाक मस्जिद में करना जायिज़ है अल बत्ता बाज़ उलमा उस्को ना मुनासिब कहेते हैं (15) अनार, रैहान, बान्स वगैरा की लक्डियें से मिस्वाक ना किया जाये

{51} नमाज़ों की तेदाद और रकातें

नमाज़ का नाम	फ़जर से पहले सुन्नते मुअक्कदा	फ़जर से पहले सुन्नते गैर मुअक्कदा	फरज़	फ़जर के बाद सुन्नते मुअक्कदा	नफ़िल	कुल रकातें
फ़जर	2	x	2	x	x	4
जोहर	4	x	4	2	2	12
असर	x	4	4	x	x	8
मग्रिब	x	x	3	2	2	7
इषा	x	4	4	2, (3 वितर वाजिब)	4 2 वितर से पहेले, 2 वितर के बाद	17
जुमा	4	x	2	4+2	2	14

{52} नमाज़ के फ़राइज़, वाजिबात, सुन्नतें, मुस्तहब्बात, मकरूहात, मुफ़्सिदात और मसाइल

नमाज़ के बाहर 7 चीज़ें फ़रज़ हैं जिन्हें षरायिते नमाज़ (यानी जिन कामों के बगैर नमाज़ षुरु ही नहीं होती) कहेते हैं (1) बदन का पाक होना (2) कप्डों का पाक होना (3) जिस जगे नमाज़ पढ्ना है उस जगे का पाक होना (4) सतर का छुपाना (5) नमाज़ का वख्त होना (6) क़ीब्ले की तरफ़ मूँह करना (7) निय्यत करना ।

नमाज़ के अन्दर 6 चीज़ें फ़रज़ हैं जिन्हें अर्काने नमाज़ (यानी वो बातें जिन्के बगैर नमाज़ होती ही नहीं (1) तक्बीरे तहेरीमा (2) क़ियाम यानी खडा होना (3) क़िरात यानी क़ुरआन मजीद पढ्ना (4) रुकू करना (5) दोनों सज्दे करना (6) क़ाइदा अखीरा (यानी नमाज़ के अखीर में अत्तहिय्यात पढ्ने के ब-क़दर बैठ्ना)

<u>नमाज़ के वाजिबात 14 है :-</u> (1) फ़रज़ नमाज़ों की पहेली दो रकातों को क़िरात के लिये मुक़र्रर करना (2) फ़रज़ नमाज़ों की तीसरी और चौथी रकात के अलावा तमाम नमाज़ों की हर रकात में सूरे फ़ातिहा पढ्ना (3) फ़रज़ नमाज़ों की पहेली दो रकातों में और वाजिब,सुन्नत और नफ़िल नमाज़ों की तमाम रकातों में सूरे फ़ातिहा के बाद कोई पूरा बडी एक आयत या छोटी तीन आयतें पढ्ना (4) सूरे फ़ातिहा को सूरत (सूरा) से पहेले पढ्ना (5) क़िरात और रुकू में और सज्दों और रकातों में तरतीब क़ायिम करना (6) क़ौमा करना यानी रुकु से उठ्ने के बाद सीधा खडा होना (7) जल्सा यानी

दोनों सज्दों के दरमियान में इत्मिनान से बैठ्ना (8) तादीले अर्कान यानी रुकू सज्दा वगैरा को इत्मिनान से अच्छी तरह अदा करना (9) क़ाइदे ऊला यानी तीन या चार रकात वाली नमाज़ में दो रकातों के बाद तषहहुद (अत्तहिय्यात) की मिख्दार बैठ्ना (10) दोनों क़ाइदो में अत्तहिय्यात पढ्ना (11) इमाम को नमाज़े फ़जर, मगरिब, इषा, जुमा, तरावीह और रमज़ान षरीफ़ की वितर में आवाज़ से क़िरात करना और जोहर, असर, वगैरा नमाज़ों में आहिस्ता पढ्ना (12) लफ़्ज़े सलाम के साथ नमाज़ से अलाहिदा होना (13) नमाज़े वितर में क़ुनूत के लिये तक्बीर कहेना और दुआए क़ुनूत पढ्ना (14) दोनों ईदैन की नमाज़ में जायिद तक्बीरें कहेना

<u>नोट :-</u> इन तमाम वाजिबात का नमाज़ में अदा करना जरूरी है अगर इन में कोई भूल से छूट जाये तो सज्दा सहू करलेने से नमाज़ मुकम्मल होती है अगर खस्दन इरादे से छोड्दे तो नमाज़ का लौटाना जरूरी है ।

नमाज़ की सुन्नतें

<u>क़ियाम की 11 सुन्नतें :-</u> (1) तक्बीरे तहेरीमा के वख्त सीधा खडा होना यानी सर का नहीं झुकाना (2) दोनों पैरों के दरमियान चार उँग्लियों का फ़ासिला रख्ना और पैरों की उँग्लियाँ क़िब्ले कि तरफ़ रख्ना (3) मुक़्तादी की तक्बीरे तेहेरीमा इमाम की तक्बीरे तेहेरीमा के साथ होना (4) तक्बीरे तेहेरीमा के वख्त दोनों हाथों को कानों तक उठाना (5) हथेलियों को क़िब्ले की तरफ़ रख्ना (6) उँग्लियों को अप्नी हालत पर रख्ना यानी ना

ज़ियादा खुली हों और ना ज़ियादा बंद (7) दाहिने हाथ कि हथेली बायें हाथ की हथेलि की पुश्त पर रखना (8) छोटी उँग्ली और अँगोठे से हाल्खा बना कर घठ्ठे को पकड़्ना (9) दरमियानी तीन उंग्लियो क्रो कलायि पर रखना (10) नाफ़ के नीचे हाथ बांध्ना (11) सना पढ्ना

<u>क़िरात की 7 सुन्नतें :-</u> (1) त-अव्वुज़ यानी अऊजु बिल्लाहि मिनष्षैता निर्रजीं पढ्ना (2) तस्मिया यानी बिस्मिल्ला हिराह-मा निर्रहीं पढ्ना (3) सूरे फ़ातिहा के खतम पर चुप्के से आमीन कहेना (4) फ़जर और जोहर में तिवाले मुफ़स्सल यानी सूरे हुजुरात से सूरे बुरूज तक असर और ईषा में अव्साते मुफ़स्सल यानी सूरे बुरूज से सूरे लम यकुन तक और मगरिब में खिसारे मुफ़स्सल यानी लम यकुन से आखिर तक की सूरतों में से पढ्ना (5) फ़जर की पहेली रकात को दूसरी रकात से तवील करना (6) कुर-आन मजीद को ना ज़ियादा जल्दी पढ्ना और ना ज़ियादा ठेहेर कर पढ्ना बल्के दरमियानी रफ़्तार से पढ्ना (7) फ़रज़ की तीसरी और चौथी रकात में सिर्फ़ सूरे फ़ातिहा का पढ्ना

<u>रुकू की 8 सुन्नतें :-</u> (1) रुकू की तक्बीर कहेना (2) रुकू में दोनों हाथों से गुट्नों को पकड़्ना (3) गुट्नों को पकड़्ने में उँग्लियों को कुषादा (खुले) रखना (4) पिंड्लियों को सीदा रखना (5) पीठ को बिछादेना (6) सर और सुरीन को बराबर रखना (7) रुकू में कम अज़ कम तीन बार सुब-हा-न रब्बियल अज़ीम पढ्ना (8) रुकू से उठ्ने में इमाम को समिअल्ला हुलिमन्र हमिदह और मुक़तदी को रब्बना

लकल हम्द और मुनफ़रिद (एक षख्स) को दोनों कहेना

सज्दे की 12 सुन्नतें :- (1) सज्दे की तक्बीर कहेना (2) सज्दे में पहेले दोनों गुट्नों को रख्ना (3) फ़िर दोनों हाथों को रख्ना (4) फ़िर नाक रख्ना (5) फ़िर पेषानी रख्ना (6) दोनों हाथों के दरमियान सज्दा करना (7) सज्दे में पीठ को रानों से अलग रख्ना (8) पेहेलुवों को बाजुवों से अलग रख्ना (9) कोहनियों को ज़मीन से अलग रख्ना (10) सज्दे में कम अज़ कम तीन बार सुब-हा-न रब्बियल अअ्-ला पढ्ना (11) सज्दे से उठ्ने में पहेले पेषानी फ़िर नाक फ़िर हाथों को फ़िर गुट्नों को उठाना और दोनों सज्दों के दरमियान इत्मिनान से बैठ्ना (12) सज्दे से उठ्ने की तक्बीर कहेना

क़ायिदे की 13 सुन्नतें :- (1) दायें पैर को खडा रख्ना और बायें पैर को बिछा कर उस पर बैठ्ना और पैर की उँग्लियें को क़िब्ले की तरफ़ रख्ना (2) दोनों हाथों को रानों पर रख्ना (3) तषहहुद (अत्तहिय्यात) में अष-हदु अल्लाइला-ह पर षहादत की उँग्ली को उठाना और इल्लाल्लाह पर झुका देना(4) क़ायिदे आखिरा में दरूदे षरीफ़ का पढ्ना (5) दरूदे षरीफ़ के बाद दुआए मासूरा उन अल्फ़ाज़ में पढ्ना जो क़ुरआन और हदीस के मुषाबे (बराबर) हो (6) दोनों तरफ़ सलाम फ़ेरना (7) सलाम की इब्तेदा दाहिनी तरफ़ से करना (8) इमाम को सलाम फ़ेरते वख्त मुक़तदियों, फ़रिष्तों, और सालेह (नेक) जिन्नात की निय्यत करना (9) मुक़तदियों को इमाम, फ़रिष्तों, सालेह (नेक) जिन्नात और दायें बायें

मुक़तदियों की नियत करना (10) मुन्फ़रिद (अकेला नमाज़ पढ़ने वाले) को सिर्फ़ फ़रिश्तों की नियत करना (11) मक़तदियों को इमाम के साथ सलाम फ़ेरना (12) दूसरे सलाम की आवाज़ को पहेले सलाम की आवाज़ से पस्त (कम) करना (13) मस्बूक़ (एक रकात के बाद आने वाले) को इमाम के फ़ारिग होने का इंतेज़ार करना

<u>नमाज़ के मुस्तहब्बात :–</u> (1) मर्द को तक्बीर कहेते वख़्त आस्तीनों से दोनों हथेलियाँ निकाल लेना (2) रुकू, सज्दे में मुन्फ़रिद (अकेला नमाज़ पढ़ने वाले) को तीन मर्तबा से ज़ियादा तस्बीह कहेना (3) क़ियाम की हालत में सज्दे की जगे पर, रुकू में क़दमों की पीठ पर, जल्से और क़ाइदे में अप्नी गोद पर और सलाम के वख़्त अप्ने कंधों पर नज़र रख्ना (4) खान्सी को अप्नी ताक़त भर ना आने देना (5) जमायि में मूँह बंद रख्ना और खुल जाये तो क़ियाम की हालत में सीधे हाथ से और बाक़ी हालतों में बायें हाथ की पुष्त से मूँह छुपालेना ।

<u>नमाज़ के मकरूहात :–</u> (1) सदल यानी कप्डा लटकाना मसलन चादर या कप्डा सर पर डाल कर उस्के दोनों किनारे लटका देना या किसी क़िसम का लिबास आस्तीनों में डाले बगैर बदन पर लटका लेना (2) कप्डों को मट्टी से बचाने के लिये हाथ से रोक्ना या समेट्ना (3) अप्ने कप्डे या बदन से खेल्ना (4) ऐसे मामूली कप्डों में नमाज़ पढ़ना जिन को पेहेन कर मज्मे में जाना पसन्द नहीं किया जाता (5) मूँह में पैसे या रूपिये या और कोई चीज़ रख कर नमाज़ पढ़ना जिस्की वजे से

क़िरात करने से मज्बूर ना रहे अगर क़िरात करने से मज्बूर होजाये तो नमाज़ बिल कुल ना होगी (6) पाखाना या पिषाब या रीह (पाद) की हाजत होने की हालत में नमाज़ पढ्ना (7) कंकरियों को हटाना अगर सज्दा करना मुषकिल होतो एक मर्तबा हटाने में कोई मुज़ायिक़ा नहीं (8) उँग्लियाँ चट्खाना (तोड्ना) या एक हाथ की उँग्लियाँ दूसरे हाथ की उँग्लियों में डाल्ना कमर या कोख या कोलेह पर हाथ रख्ना (9) क़िब्ले की तरफ़ से मूँह फ़ेर कर या सिर्फ़ निगाह से इदर उदर देख्ना (10) कुत्ते की तरह बैठ्ना यानी रानें खडी करके रानों को पेट से और गुट्नों को सीने से मिलालेना और हाथों को ज़मीन पर रख्लेना (11) किसी ऐसे आदमी की तरफ़ मूँह करके नमाज़ पढ्ना जो नमाज़ी की तरफ़ मूँह किये हुये बैठा हो (12) बिला उज़र चार ज़ानू बैठ्ना(13) क़स्दन जमायि लेना या रोक सक्ने की हालत में ना रोक्ना (14) आंखों को बंद करना लेकिन अगर नमाज़ में दिल लगाने के लिये बंद करे तो मकरूह नहीं है (15) किसी जान्दार की तस्वीर वाले कप्डे पेहेन कर नमाज़ पढ्ना (16) ऐसी जगे नमाज़ पढ्ना के नमाज़ी के सर के ऊपर या उस्के साम्ने या दायें बायें तरफ़ या सज्दे की जगे तस्वीर हो (17) आयतें या सूरतें या तस्बीह उँग्लियों पर षुमार करना (18) चादर या कोई कप्डा इस तरह लपेट कर नमाज़ पढ्ना के जल्दी से हाथ निकाल ना सके (19) नमाज़ में अंग्डायि लेना यानी सुस्ती उतार्ना (20) सुन्नत के खिलाफ़ नमाज़ में कोई काम करना (21) हाथ के इषारे से सलाम का जवाब देना

(22) अमामा के पेच पर सज्दा करना (23) ऐसी सफ़ के पीछे अकेले खडे होना जिस में जगे खाली हो (24) हाथ या सर के इषारे पर सलाम का जवाब देना

<u>मुफ़्सिदाते नमाज़ :–</u> उन चीज़ों को कहेते हैं जिन से नमाज़ फ़ासिद होती है यानी टुट जाती है और नमाज़ का लौटाना जरूरी है (1) नमाज़ में बात करना खस्दन या भूल कर हर सूरत में नमाज़ टूट्ती है (2) सलाम करना (3) सलाम का जवाब देना (4) छींक्ने वाले को यर–हमुकल्लाह कहेना (5) किसी की दुआ पर आमीन कहेना (6) किसी बुरी खबर पर इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन कहेना या किसी अच्छी खबर पर अल–हम–दु लिल्लाह कहेना या किसी अजीब चीज़ पर सुब हानल्लाह कहेना (7) दर्द या गम की वजे से आह या उफ़ कहेना (8) अप्ने इमाम के अलावा दूसरो को लुक़्मा देना (9) क़ुरआन षरीफ़ देख कर पढ्ना (10) क़ुरआन के पढ्ने में सख्त गलती करना (11) अमले कसीर करना यानी कोई ऐसा काम करना जिस से देख्ने वाले ये सम्झे के ए षख्स नमाज़ में नहीं है (12) खाना, पीना इरादे से या भुलेसे (13) दो सफ़ों की मिख्दार नमाज़ में चल्ना (14) खिब्ले की तरफ़ से बगैर उज़र के फ़िर जाना (15) ना पाक जगे पर सज्दा करना (16) सतर खुल जाने की हालत में ऐक रुकुन की मिख्दार टेहेर–ना (17) दर्द या मुसीबत की वजे से इस तरह रोना के आवाज़ में हुरूफ़ जाहिर हो (18) बालिग आदमी का नमाज़ में खह खहे मर कर या आवाज़ से हस्ना (19) इमाम से आगे बड

जाना (20) नमाज़ के अन्दर दुआ में ऐसी चीज़ मांगना जो आदमियों से मांगी जाती है मसलन अय अल्लाह मुझे सौ रुपे देदे वगैरा

<u>नमाज़ के मसायिल :-</u> (1) नमाज़ी का बदन हर क़िसम की नापाकी से पाक होना जरूरी है चाहे वो नजासते हक़ीक़ि हो यानी वो नापाकी जो देख्ने में आसके जैसे पिषाब, पाखाना, खून, षराब वगैरा या नजासते हुक्मी हो यानी वो नापाक़ी जो षरीअत के हुकुम से साबित हो मगर देख्ने में ना आसके जैसे बे वज़ू होना, गुसुल की हाजत होना (2) जो कप्डे नमाज़ पढ्ने वाले के बदन पर हो जैसे कुरता, पैजामा, टोपी, अमामा वगैरा इन सब का पाक होना जरूरी है चाहे नजासते गलीज़ा हो यानी वो नापाकी जो सख्त हो जैसे पाखाना वगैरा या नजासते खफ़ीफ़ा यानी वो नापाकी जो हल्की हो जैसे हलाल जन्वरों का पिषाब वगैरा इन दोनों से कप्डा पाक होना जरूरी है (3) जो कप्डा नमाज़ी के बदन से ऐसा त-अल्लुक़ रख्ता हो उस्के हरकत करने से वो भी हरकत करे ऐसे कप्डे का पाक होना भी षर्त है (4) नमाज़ पढ्ने वाले के दोनों क़दमों और गुठ्नों और हाथों और सज्दे की जगा का पाक होना जरूरी है (5) नमाज़ की जगा पाक है मगर आस पास नजासत है ऐसी जगे नमाज़ पढ्ने से नमाज़ तो होजायेगी मगर ऐसी जगे नमाज़ पढ्ना अच्छा नहीं है (6) सतर को छुपाने से मुराद ये है के मर्द को नाफ़ से गुठ्नों तक अप्ना बदन छुपाना फ़रज़ है और ये ऐसा फ़रज़ है जो नमाज़ के

अन्दर भी और नमाज़ के बाहर भी फ़रज़ है और औरत को दोनों हथेलियों और पावों और चेहेरे के सिवा तमाम बदन का ढाक्ना फ़रज़ है अगरचे औरत को नमाज़ में चेहेरे का छुपाना फ़रज़ नहीं लेकीन गैर मेहेरम के साम्ने बे परदा खुला चेहेरा आना भी जायिज़ नहीं (7) नमाज़ में सतर के किसी भी हिस्से का चौथायी अज़ू खुल जाये और इतनी देर खुला रहा के जितनी देर तीन मर्तबा सुब–हा–न रब्बियल अज़ीम केहेसके तो नमाज़ टूट जायेगी और खुल्ते ही फ़ौरन डाक लिया तो नमाज़ सही होगी

नोटः– बदन का एक हिस्सा एक एक अज़ू कहेलाता है जैसे हाथ, पाव, औरत की चोटी वगैरा (8) नमाज़ को अदा करने के लिये ये षर्त है के जो वख्त उस्के लिये मुक़र्रर किया गया है उसी वख्त में पढी जाये उस वख्त से पहेले पढ्ने से नमाज़ बिल कुल दुरुस्त ना होगी वख्त के बाद नमाज़ पढ्ने से अदा नहीं बल्के क़ज़ा होगी (9) नमाज़ पड्ते वख्त जरूरी है के नमाज़ी का मूँह क़िब्ले की तरफ़ रहे (10) निय्यत दिल के इरादे को कहेते हैं निय्यत करते वख्त खास उस फ़रज़ का इरादा करना जरूरी है जो पढ्ना चाहता है मसलन फ़जर की नमाज़ पड्नी है तो ये इरादा करे के आज की नमाज़े फ़जर पड्ता हों या क़ाज़ा नमाज़ होतो यू निय्यत करे फ़लाँ दिन की नमाज़े फ़जर पड्ता हों अगर इमाम के पीछे नमाज़ पड्ता हो तो इस्की निय्यत भी करनी जरूरी है और नमाज़ि का मूँह क़िब्ले की तरफ़ होने की निय्यत

जरूरी नहीं (11) जुबान से निय्यत करना मुस्तहब है अगर जुबान से निय्यत ना करे तो कोई नुख्सान नहीं (12) निय्यत बांधते वख्त अल्लाहु अक्बर कहेते हैं इस तक्बीर के कहेने से नमाज़ षुरू होजाती है और जो बातें नमाज़ के खिलाफ़ है वो तमाम हराम होजाती हैं इस लिये इस तक्बीर को तक्बीरे तहेरीमा (हराम करने वाली तक्बीर) कहेते हैं (13) झुके झुके तक्बीरे तहेरीमा कहेते हैं तो तक्बीरे तहेरीमा अदा ना हुवा तक्बीरे तहेरीमा के वख्त फ़रज़ और वाजिब नमाज़ में जब्के कोई उज़र ना हो सीदा खडा होना षर्त है (14) क़ियाम खडे होने को कहेते हैं खडे होने से ऐसा खडा होना मुराद है के हाथ गुट्नो तक ना पहुंच सके फ़रज़ और वाजिब नमाज़ों में इतना खडा होना फ़रज़ है जिस में फ़रज़ क़िरात अदा कर सके (15) नफ़िल नमाज़ में क़ियाम फ़रज़ नहीं बिला उज़र भी बैठ कर नफ़िल नमाज़ पढ्ना जाइज़ है लेकिन बिला उज़र बैठ कर नफ़िल नमाज़ पढ्ने में आदा सवाब है (16) कम अज़ कम एक बडी आयत या तीन छोटी आयतें पढ्ना फ़रज़ है फ़रज़ की पहिली दो रकातों में, वितर, सुन्नत, नफ़िल की तमाम रकातों में सूरे फ़ातेहा और सूरत का पढ्ना वाजिब है (17) क़िरात जोर से पढ्ने का अद्ना दरजा ए है के अप्नी आवाज पास वाले षख्स के कान में पहुन्च सके और आहिस्ता पढ्ने का अद्ना दरजा ये है के अप्नी आवाज अप्ने कान में पहून्च सके (18) क़िरात जुबान से पढ्ना जरूरी है सिर्फ़ खयाल दौडा लेने से नमाज़ ना होगी (19) रुकू

की अद्‌ना मिक़्दार इस क़दर झुक्ना है के हाथ गुठ्नो तक पहुन्च जाये सुन्नत तरीक़ा ए है के इस क़दर झुक्ना के सर और कमर बराबर और हाथ फस्लियों से जुदा रहे और गुठ्नों को हाथों से पकड लिया जाये (20) सज्दे में बिला उज़र के सिर्फ़ पेषानी पर सज्दा करने से सज्दा तो होजायेगा मगर मकरूह है अगर बिला उज़र के नाक पर सज्दा किया तो सज्दा अदा ना होगा क्यूंके ज़मीन पर पेषानी रख्ने ही को सज्दा कहेते हैं ।

{53} नमाज़ पढने का तरीक़ा

जब तुम नमाज़ के लिये खडे हो तो क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जेह होकर अल्लाहु अक्बर कहो फ़िर सूरे फ़ातिहा के साथ ज़म सूरा के लिये क़ुरआन में से जो चाहो पढो और जब तुम रुकू करो तो अप्नी दोनों हथेलियों को अप्ने दोनों गुठोनों पर रखखो और अप्नी पीठ को हम्वार रख्कर अप्ने रुकू को इत्मिनान के साथ अछ्छी तरह करो के सर और सुरीन बराबर रहे और क़ौमे के लिये जब तुम रुकू से सर उठावो तो इत्मिनान के साथ इस तरह सीदे खडे होजावो के तमाम जिसम की हड्डियाँ अप्नी अप्नी जोड पर क़ायिम होजाये और जब तुम सज्दा करो तो इत्मिनान के साथ बैठ जावो फ़िर इसी तरह हर रकात के रुकू, क़ौमा, सज्दे और जल्से को इत्मिनान के साथ अदा करते रहो पस जब तुम ने ए कर लिया तो तुम्हारी नमाज़ पूरी होगयी और अगर तुम्ने उस में किसी चीज़ की कमी की तो अप्नी नमाज़ नाक़िस करली (अबू दावूद, तिरमिज़ी, नसायी)

{54} नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा बा तस्वीर

1
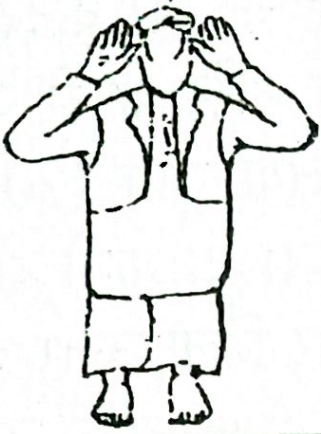
2

3
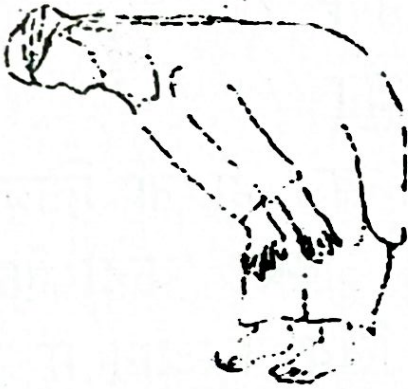
4

5
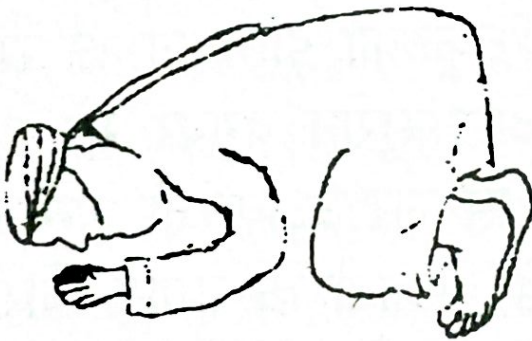
6

7

8

(1) तक्बीरे तहेरीमा (अल्लाहु अक्बर) (2) क़ियाम और क़िरात (3) रुकू (सुब–हा–न रब्बियल अज़ीम) (4) क़ौमा (समि अल्लाहु लिमन हमिदह) (5) सज्दा (सुब–हा–न रब्बियल अ अला) (6) क़ायिदा (अत्तहिय्यात) (7) सलाम दायें जानिब (8) सलाम बायें जानिब

{55} सज्द–ए–सहू का बयान

सहू के माने भूल जाने के हैं भूले से कभी नमाज़ मे कमी या जियादती की वजे से नुख्सान आजाता है बाज़ नुख्सान ऐसे हैं के उन को दूर करने के लिये नमाज़ के आखिरी क़ायिदे मे अत्तहिय्यात पढ्ने के बाद दाहिनी तरफ़ सलाम फेर कर दो सज्दे किये जाते हैं उन को सज्द–ए–सहू कहेते हैं। सज्द–ए– सहू का तरीक़ा ए है के क़ायिदा आक़िरा में अत्तहिय्यात पढ्ने के बाद दाहिनी तरफ़ सलाम फेर कर तक्बीर कहे और सज्दा करे सज्दे में तीन बार तस्बीह पढे फिर तक्बीर कहेता हुवा सर उठाये और सीधा बैठ कर फिर तक्बीर कहेता हुवा दूसरा सज्दा करे सज्दे में तीन बार तस्बीह पढे फिर तक्बीर कहेता हुवा सर उठाये और बैठ–कर दुबारा अत्तहिय्यात और दरूद षरीफ़ और दुआ पढ्कर दोनों तरफ़ सलाम फेरे तमाम नमाज़ों में सज्द–ए–सहू का हुकुम एक ही है अगर दोनों तरफ़ सलाम फेर दिया तो एक रिवायत के मुताबिक़ जायिज़ है मगर क़वी रिवायत ए है के सज्द–ए– सहू ना करे बल्के नमाज़ को दोहराले

{56} सज्द–ए–सहू के वाजिब होने के उसूल

सज्द–ए–सहू हस्बे ज़ैल वजह से वाजिब होता है

(1) नमाज़ में कोई वाजिब भूले से छूट जाये जैसे क़ायिदा ऊला छूट जाये (2) किसी वाजिब को उस्की जगासे मुअख्ख़र करदे जैसे ज़म सूरा पहेले पढे सूरे फ़ातिहा बाद में पढे (3) भूले से किसी वाजिब में एक रुकुन की मिक़दार ताखीर होजाये जैसे क़ायिदे ऊला से तीसरी रकात के लिये खडे होने में अत्तहिययात के बाद दरूदे षरीफ़ अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद तक पढ्ले (4) किसी वाजिब को दो मर्तबा अदा करे जैसे ज़म सूरा को दो मर्तबा पढे (5) कोई वाजिब भूले से बदल जाये जैसे जहरी (ज़ोर से क़िरात करने वाली) नमाज़ों में आहिस्ता और सिर्री (आहिस्ता आवाज़ से क़िरात करने वाली) नमाज़ों में बुलन्द आवाज़ से क़िरात करे (6) नमाज़ के फ़राइज़ में से किसी फ़रज़ को उस्की जगे से मुअख्खर करदे जैसे रुकू की जगा सज्दा सज्दे की जगा रुकू करदे (7) किसी फ़रज़ को उस्के मेहेल से मुक़द्दम करदे जैसे सज्दे को रुकू से पहेले अदा करे (8) किसी फ़रज़ को मुकर्रर यानी दो मर्तबा भूले से अदा करे जैसे रुकू को दो मर्तबा करे।

{57} नमाज़ के बाद की दुआयें

अरबी में दुआ :- अल-हम-दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, अल्लाहुम्म सोल्लि अला मुहम्मदिव व-अला आलि मुहम्मदिव व-बारिक व- सल्लिम, अल्लाहुम्म अन्तस-सलामु व-मिन्कस-सलामु तबारक-त या ज़ल-ज़लालि वल-इक-राम, अल्लाहुम्म अ-इन्नी अला ज़िक-रि-क व-षुक-रि-क व-हुस्नि इबादतिक, अल्लाहुम्म

इन्नी अस–अलु–क मिनल–जन्नति व– अऊज़ु बि–क मिनन्नार, अल्लाहुम्मन सुरिल–इस्ला–म वल–मुस्लिमीन, अल्लाहुम्मह इह–दि–नन ना–स जमीआ, अल्लाहुम्म अ–इज़्ज़ल–इस्ला–म वल–मुस्लिमीन, अल्लाहुम्मक–फ़िना बि–हलालि–क अन–हरामि–क व–अग–निना बि–फ़ज़–लि–क अम्मन सिवाक, व–स़ल्लल्लाहु त आला अला खैरि खल–क़िही मुहम्मदिव व–अला आलिही व–अस–हाबिही व–अज़–वाजिही अज–मईन बिरह–मति–क या अर–हमर राहिमीन, वल–हम–दु लिल्लाहि रब्बिल आलामीन

<u>उर्दू में दुआ :–</u> अल–हम–दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन अल्लाहुम्म स़ोल्लि अला मुहम्मदिव व–अला आलि मुहम्मदिव व–बारिक व–सल्लिम, या अल्लाह हमारे गुनाहों को म–आफ़ फ़रमा, या अल्लाह हमको हक़ीक़त वाला ईमान नसीब फ़रमा, या अल्लाह हमको हक़ीक़त वाली नमाज़ नसीब फ़रमा, या अल्लाह हमको नफ़े वला इल्म नसीब फ़रमा, या अल्लाह तेरा ज़िकर करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा, या अल्लाह हमको हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख्लाक़ नसीब फ़रमा, या अल्लाह हमको इख्लास नसीब फ़रमा, या अल्लाह हमें हज्जे बैतुल्ला करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा, या अल्लाह हमारा जान, माल, वक़्त तेरे रास्ते में लग्ने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा, या अल्लाह हमको मौत तक इस्तिक़ामत के सात दीन की मेहेनत करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा व– स़ल्लल्लाहु त आला अला खैरि खल–

क़िही मुहम्मदिव व–अला आलिही व–अस–हाबिही व–अज़–वाजिही अज–मईन बि–रह–मति–क या अर–हमर राहिमीन वल–हम–दु लिल्लाहि रब्बिल आलामीन ।

{58} रमज़ानुल मुबारक की मख्सूस दुआयें

(1) रोज़े की निय्यत :– नवैतु अन असू–म गदल लिल्लाहि तआला मिन–सौमि र–मज़ान (या) नवैतु बिसौमि गदिन

نَوَیْتُ اَنْ اَصُوْمَ غَدًا لِلّٰہِ تَعَالٰی مِنْ صَوْمِ رَمَضَانَ (یا) نَوَیْتُ بِصَوْمِ غَدٍ

(2) दुआये इफ़्तार :– अल्लाहुम्म ल–क सुम–तु व–बि–क आ–मन–तु व–अलै–क त–वक्कल–तु व–अला रिज़–क़िक अफ़्तर–तु

اَللّٰھُمَّ لَکَ صُمْتُ وَبِکَ اٰمَنْتُ وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ

وَعَلٰی رِزْقِکَ اَفْطَرْتُ

(3) सहेरी के वख्त पढ्ने की दुआ : या वासिअल मग–फ़िरह

یَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَۃ

(4) असर से मग्रिब तक पढ्ने की दुआ :– या वासिअल फ़ज़–लि इग–फ़िर–लि

یَا وَاسِعَ الْفَضْلِ اِغْفِرْ لِیْ

(5) पहेले रोज़े से दसवें रोज़े तक पढ्ने की दुआ :– अल्लाहुम्मर–हम–नी या अर–हमर–राहिमीन

اَللّٰھُمَّ ارْحَمْنِیْ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْن

(6) ग्यरवें रोज़े से बीसवें रोज़े तक पढ्ने की दुआ :- अल्लाहुम्मग फ़िर-ली जुनूबी या रब्बल आलमीन

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ یَا رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ

(7) एक्किसवें रोज़े से आखीरी रोज़े तक पढ्ने की दुआ :- अल्लाहुम्म अत-क़िनी मिनन्नारि व-अद-खिलनी-फिल जन्नति या रब्बल आ-लमीन

اَللّٰهُمَّ اَتْقِنِیْ مِنَ النَّارِ وَاَدْخِلْنِیْ فِی الْجَنَّةِ یَارَبَّ الْعٰلَمِیْنَ

(8) षबे क़दर यानी 21,23,25,27 और 29 वीं षब में पढ्ने की दुआ :- अल्लाहुम्म इन्न-क अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल अफ़-व फ़अ्-फु अन्नी या-गफ़ूरु या-गफ़ूरु या-गफ़ूरु

اَللّٰهُمَّ اِنَّکَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّیْ
یَاغَفُوْرُ یَاغَفُوْرُ یَاغَفُوْرُ

{59} दुआयें क़ुबूल होने की षक्लें

(1) पहेली षकल ए है के दुआ में जो मांगे वो फ़ौरन मिल जाता है । (2) दूसरी षकल ए है के दुआ में जो मांगे वो देर से मिल जाता है । (3) तीसरी षकल ए है के दुआ में जो मांगे वो नहीं मिल्ता बल्के दूसरा मिल जाता है । (4) चौथी षकल ए है के दुआ मांगने से बलायें दूर होती हैं या कम होती हैं । (5) पान्चवीं षकल ए है के दुआ का बद्‌ला आखिरत में मिल्ता है ।

{60} तयम्मुम कब जाइज़ होता है?

जब पानी एक मील के फ़ासिले पर अप्ने गुमान के मुताबिक़ या किसी दुषमन का अंदेषा हो या इस के अलावा और चीज़ों का खौफ़ मसलन चोर, डाकु या बीमारी का खौफ़ हो के अप्ने गालिब गुमान के मुताबिक़ पानी के इस्तेमाल से बीमारी बड जायेगी या माहिर डाक्टर ने बताया हो।

{61} तयम्मुम किन चीज़ों पर जाइज़ होता है?

पाक मिट्टि, रेत, पथ्थर, चूना और मिट्टि के कच्चे या पक्के बरतन जिन पर रोगन (तेल) ना हो और मिट्टि की कच्ची या पक्की ईंटों या पथ्थर या चूने की दीवार पर तयम्मुम करना जाइज़ है इसी तरह पाक गुबार से भी तयम्मुम करना जाइज़ है ।

{62} तयम्मुम के फ़राइज़

तयम्मुम में तीन फ़रज़ हैं (1) निय्यत करना (2) दोनों हाथ मिट्टि पर मार कर मूँह पर फेरना (3) दोनों हाथ मिट्टि पर मार कर दोनों हाथों को कोहनियों समेत मल्ना ।

{63} तयम्मुम किन चीज़ों से टूटता है

(1) जिन चीज़ों से वज़ू टूट्ता है उन्ही चीज़ों से तयम्मुम टूट्ता है (2) गुसुल का तयम्मुम सिर्फ़ हदसे अक्बर से टूट्ता है (3) पानी पर क़ुदरत हासिल होजाने से भी तयम्मुम टूट जाता है (4) बीमारी की वजे से तयम्मुम किया था तो उस उज़र के जाते रहने से भी तयम्मुम टूट जाता है ।

{64} तयम्मुम के मसाइल

एक तयम्मुम जब तक वो टूटे नहीं जितने वख़्तों की चाहो नमाज़ पढ सकते हो इसी तरह फ़रज़ नमाज़ के लिये जो तयम्मुम किया उससे फ़रज़ नमाज़, नफ़िल नमाज़ और कुरआन मजीद की तिलावत और जनाज़े की नमाज़ और सज्द–ए–तिलावत और तमाम इबादतें जाइज़ हैं जब तक पानी ना मिले या उज़र बाक़ी रहे जिस्की वजे से तयम्मुम किया था तयम्मुम जाइज़ है अगरचे उसी हालत में कई साल गुज़र जाये कुछ मुज़ायिक़ा नहीं ।

{65} क़सर नमाज़ का तरीक़ा

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहेमतुल्लाहि अलैह के नज़्दीक मुसाफ़िर वो है जो तीन मंज़िल का सफ़र इख्तियार करे यानी षरिअत के मील के हिसाब से अड़तालीस (48) मील के सफ़र पर घर से निकला हो जो तक़रीबन 88 किलो मीटर होता है नीज़ उस जगा उसका क़ियाम पंदरा (15) दिन से कम हो अगर निय्यत पंदरा दिन (15) से ज़ियादा की होतो फ़िर ये मुसाफ़िर नहीं रहेगा बल्के मुक़ीम माना जायेगा और ऐसी सूरत मे पूरी नमाज़ अदा करनी चाहिये अगर सफ़र 48 मील से कम है तो ये मुसाफ़िर नहीं है नमाज़ पूरी अदा करनी होगी (अल औज़ानुल महेमुदा)

सफ़र मे क़सर सिर्फ़ जोहर, असर, इषा की नमाज़ में है यानी चार रकात वाली नमाज़ निस्फ़ अदा की जायेगी फ़जर, मगरिब, की रकातें ब–दस्तूर हैं वितर वाजिब है ये भी तीन रकात अदा करना जरूरी है अलबत्ता सुन्नतें फ़जर के

अलावा इख्तियारी हैं फ़जर की दो रकात सुन्नत अदा करना जरूरी है अलबत्ता दूसरी नमाज़ों की सुन्नतें अगर वक़्त और सहूलत होतो ज़रूर अदा करनी चाहिये अगर वक़्त ना होतो सिर्फ़ फ़रज़ अदा करना काफ़ी है मुसाफ़िर को नमाज़ में क़सर करना (अहेनाफ़ के नज़्दीक) जरूरी है ।

{66} मसाफ़ते सफ़र कितना है?

किलो मीटर के हिसाब से 87 किलो मीटर 782 मीटर 40 सेंटी मीटर है जो तक़रीबन 88 किलो मीटर होता है (जदीद फ़िख्ही मसाइल देवबंद)

{67} क़सर नमाज़ के मसाइल

(1) जो षख्स मसाफ़ते षरई मे क़सर ना करे तो गुनेहगार होगा (2) सफ़रे षरई में नमाज़ पूरी पढ्ना ममनूअ् है क़सर ही का हुकुम है (3) बाज़ लोगों को पूरी नमाज़ की जगा क़सर पढ्ने मे दिल में गुनाह् का वस्वसा पैदा होता है ये सहीह नहीं है इस लिये के क़सर भी षरीअत का हुकुम है जिस्की तामील पर गुनाह नहीं होता बल्के सवाब मिल्ता है (4) सफ़रे षरई में चार रकात की जगा दो रकात पढ्ना ये कुरआन व हदीस से साबित है (5) अहेनाफ़ के नज़दीक क़सर करना मुसाफ़िर को लाज़िम है चाहे रैल का सफ़र आराम देह ही क्यूँ ना हो पूरी नमाज़ पढ्ना दुरुस्त नहीं सफ़र मे किसी का खौफ़ हो या ना हो हर हाल में क़सर पढी जायेगी ।

{68} क़ज़ा नमाज़ को अदा करने का तरीक़ा

(1) मुसल्मान बालिग होने के बाद से जितनी नमाज़ें छूट गयी हों उन नमाज़ों के अदा करने को उमरे

क़ज़ा कहेते हैं (2) मकरूह वख्त क़ायाल करते हुवे बाक़ी औक़ात में क़ज़ा नमाज़ को अदा करे (3) आसान तरीक़ा ये है के रोज़ाना फ़जर, जोहर, असर, और इषा की नमाज़ से पहेले और मगरिब की नमाज़ के बाद उस वक़्त की उमरे क़ज़ा नमाज़ें अदा करे (4) मिसाल के तौर पर निय्यत इस तरह करे के मेरी ज़िंदगी की पहेली फ़जर की क़ज़ा नमाज़ पढ्ता हों (5) जिस वक़्त की नमाज़ छूटी हो उस वक़्त की निय्यत करे अगर याद ना हो तो हर नमाज़ में निय्यत के षुरू में यूं कहे के मेरी जिंदगी की पहेली फ़जर या ज़ोहर की क़ज़ा नमाज़ पढ्ता हूं ।

{69} जुमा के दिन के अहेकाम

(1) जुमा के दिन सुबह जल्दी उठ कर गुसुल करना (2) जुमा से पहेले नाखुन काटना सुन्नत है । जो षख्स जुमा के दिन नाखुन काटे तो अग्ले जुमा तक की बलावों से उस्को अल्लाह तआला पनाह देंगे (3) जुमा की अज़ान से करीद व फ़रोख्त और कारोबार छोड कर मस्जिद में आना वाजिब है (4) इमाम के अलावा कम अज़ कम तीन आदमी जमाअत में होना ज़रूरी हैं (5) खुतबे को गौर से सुन्ना (6) अगर जुमा का खुतबा ना सुने और जमात मे षरीक ना-होतो ज़ोहर के 4 रकात फ़रज़ नमाज़ पढ्ले (7) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया के जिस्ने बिला उज़र जुमा को छोड दिया वो इस किताब में मुनाफ़िक लिख दिया जायेगा ।

{70} खुत्बए जुमा

खुत्बए अव्वल :-

अल-हम्दु लिल्लाहि नह-मदुहू व नस-त-ईनुहू व-नस-तग फ़िरुहू व-नऊज़ु बिल्लाहि मिन षुरूरि अन-फ़ुसिना व-मिन-सय्यिआति अअ्-मालिना मय्यह-दिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल्ल लहू, व-मय्युज़-लिल-हु फ़ला हादि-य लह, व नष-हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू ला-षरी-क-लह, व नष-हदु अन्न मुहम्मदन अब-दुहू व रसूलुहू अर-स-ल-हू बिल-हक़्क़ि बषीरव व-नज़ीरह, बै-न य-द-यिस्साअह,मय युतिइल्ला-ह व-रसूलहू फ़क़द र-ष-द व-मय यअ्-सिहिमा फ़-इन्नहू ला-यजुरु इल्ला नफ़-सह, वला यज़ुरुल्ला-ह षैआ, अम्मा बअ्द, फ़-इन्न खैरल हदीसि किताबुल्लाहि-व खैरल हद-यि हद-यु मुहम्मदिन स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व-षर्रल उमूरि मुह-द सातुहा व कुल्लु बिद-अतिन ज़लालह, व-कुल्लु ज़लालतिन फ़िन्नार, बा-र-कल्लाहु लना वलकुम फ़िल-क़ुर-आनिल अजीम, व-न-फ़अ्-ना व इय्याकुम बिल आयाति वज़्ज़िक-रिल हकीम, फ़स-तग-फ़िरूहु इन्नहू हुवल गफ़ूरुर रहीम।

खुत्बये सानिया :-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ نَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ

شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا

مُضِلَّ لَهٗ. وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ ٥ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ

اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ ٥ وَنَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا

عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ اَرْسَلَہٗ بِالْحَقِّ بَشِیْرًا وَّنَذِیْرًا بَیْنَ

یَدَیِ السَّاعَةِ مَنْ یُّطِعِ اللّٰہَ وَرَسُوْلَہٗ فَقَدْ رَشَدَ وَمَنْ

یَّعْصِھِمَا فَاِنَّہٗ لَا یَضُرُّ اِلَّا نَفْسَہٗ، وَلَا یَضُرُّ اللّٰہَ شَیْئًا ٥

اَمَّا بَعْدُ ٥ فَاِنَّ خَیْرَ الْحَدِیْثِ کِتَابُ اللّٰہِ وَخَیْرَ الْھَدْیِ

ھَدْیُ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَّ شَرَّ الْاُمُوْرِ مُحْدَثَاتُھَا وَکُلُّ بِدْعَةٍ

ضَلَالَةٌ وَکُلُّ ضَلَالَةٍ فِی النَّارِ. بَارَکَ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ

فِی الْقُرْاٰنِ الْعَظِیْمِ ٥ وَنَفَعَنَا وَاِیَّاکُمْ بِالْاٰیَاتِ وَالذِّکْرِ

الْحَکِیْمِ ٥ فَاسْتَغْفِرُوْہُ اِنَّہٗ ھُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ٥

खुत्बये सानिया :-

अल-हम-दु लिल्लाहि नह-मदुहू व नस-त ईनुहू व नस-तग-फ़िरुहू व-नुअ्-मिनु बिही व-न-त-वक्कलु अलैहि व नऊ़ज़ु बिल्लाहि मिन-षुरूरि अन-फ़ुसिना व मिन-सय्यिआति अअ्-मालिना मय-यह-दि-हिल्लाहु फ़ला मुज़िल्ल लहू व-मय-युज़-लिल-हु फ़ला हादि-य-लहू व-नष-हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू ला-षरी-क-लहू व-नष-हदु अन्न मुहम्मदन अब-दुहू व रसूलुहू अर-स-लहू बिल-हक्कि बषीरव-व-नज़ीरा इन्नल्ला-ह

व मला-इ-क-तहू युसल्लू-न अलन्नबि या- अय्यु हल्लज़ी-न आमनू सल्लू अलैहि व-सल्लि-मू तस्लीमा अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिव व-अला आलिही व-अस़-हाबिही व अत-बाइही अज़-मईन इला यौमिद्दीन खुसूसन अला अमीरिल मुअ्-मिनीन सय्यिदिना अबी बकरि निस्सिद्दीक़ रजियल्लाहु त-आला अन्हु, व-अला अमीरिल मुअ्-मिनी-न सय्यिदिना उ-म-रब-निल खत्ताब रजियल्लाहु त-आला अन्हु, व-अला अमीरिल मुअ्-मिनी-न सय्यिदिना उस-मा-नब-नि अफ़्फ़ान रजियल्लाहु तआला अन्हु, व-अला अमीरिल मुअ्-मिनी-न सय्यिदिना अलिय्यिब-नि अबी तालिब रजियल्लाहु तआला अन्हु, व-अलल-इमामैनि सय्यिदिनल ह-स-नि व-हुसैनि रजियल्लाहु तआला अन-हुमा, व-अला उम्मिहिमा सय्यिदति-न्निसाइ फ़ातिमतज़-ज़हरायि रजियल्लाहु तआला अन्हा, व-अला अम्मैहि सय्यिदिना हम-ज-त वल अब्बासि रजियल्लाहु तआला अन्हुमा व-अलस सित्ततिल बाक़ियति मिनल अ-ष-रतिल मुबष्षरति वअला सा-इ-रिस-सहाबति वत्ताबिईन रिज-वानुल्लाहि तआला अलैहिम अज-मईन, अल्लाहुम्मग-फ़िर लिल-मुअ्-मिनी-न वल-मुअ्-मिनात वल-मुस्लिमी-न वल-मुस्लिमात अल-अह-याइ मिन-हुम वल-अमवात बिरह-मति-क या अर-हमर-राहिमीन, अऊजु बिल्लाहि मिनषै तानिर्रजीम इन्नल्ला-ह यअ्-मुरु बिल-अद-लि वल-इह-सानि व-ईताइ ज़िल क़ुर-बा व-यन-हा अनिल फ़ह-षा-इ वल मुन-करि वल-बग-यि य-इज़ुकुम ल-अल्लकुम

तज़क्करून, उज़–कुरुल्ला–ह यज़–कुर–कुम वद–ऊहु यस–तजिब लकुम व–ल–ज़िक–रुल्लाहि त–आला अअ्–ला व औला व–अ–अज़्ज़ु व अजल्लु व–अ–तम्मु व–अक–बर।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَ نَسْتَعِیْنُہٗ وَ نَسْتَغْفِرُہٗ وَ نُؤْمِنُ بِہٖ وَ نَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّاٰتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَ مَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ ○ وَنَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَ نَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَ رَسُوْلُہٗ اَلَّذِیْ اُرْسِلَ بِالْحَقِّ بَشِیْرًا وَّنَذِیْرًا ○ اِنَّ اللّٰہَ وَ مَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ط یٰاَیُّھَا الَّذِیْنَ آمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ○ اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَ بَارِکْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِہٖ وَ اَصْحَابِہٖ وَاَتْبَاعِہٖ اَجْمَعِیْنَ اِلٰی یَوْمِ الدِّیْنِ ○ خُصُوْصًا عَلٰی اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ سَیِّدِنَا اَبِیْ بَکْرِ نِ الصِّدِّیْقِ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ○ وَعَلٰی اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ سَیِّدِنَا عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ ؓ ○ وَعَلٰی اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ سَیِّدِنَا

عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَؓ ٥وَعَلىٰ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ سَيِّدِنَا عَلِيِّ بْنِ

اَبِیْ طَالِبٍؓ ٥وَعَلىٰ الْاِمَامَيْنِ سَيِّدِنَا الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ

رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالىٰ عَنْهُمَا ٥وَعَلىٰ اُمِّهِمَا سَيِّدَةِ النِّسَاءِ

فَاطِمَةَ الزَّهْرَاءِ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالىٰ عَنْهَا ٥وَعَلىٰ عَمَّيْهِ

سَيِّدِنَا حَمْزَةَ وَ الْعَبَّاسِ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالىٰ عَنْهُمَا ٥ وَعَلىٰ

السِّتَّةِ الْبَاقِيَةِ مِنَ الْعَشَرَةِ الْمُبَشَّرَةِ وَعَلىٰ سَائِرِ الصَّحَابَةِ

وَالتَّابِعِيْنَ ٥رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالىٰ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ ٥اَللّٰهُمَّ

اغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ٥ وَالْمُسْلِمِيْنَ

وَالْمُسْلِمَاتِ ٥اَلْاَحْيَاءِ مِنْهُمْ وَالْاَمْوَاتِ ٥ بِرَحْمَتِكَ يَا

اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ٥اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ اِنَّ

اللّٰهَ يَامُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَاءِ ذِى الْقُرْبىٰ وَ يَنْهىٰ

عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْىِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ

٥اُذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ

اللّٰهِ تَعَالىٰ اَعْلىٰ وَاَوْلىٰ وَاَعَزُّ وَاَجَلُّ وَاَهَمُّ وَاَتَمُّ وَاَكْبَرُ ٥

{71} नमाज़े ईदैन का तरीक़ा

(1) गुसुल और मिस्वाक करना (2) अप्ने लिबास में से अछछा लिबास पेहेन्ना (3) खुष्बो लगाना (4) ईदुल फ़ितर में जाने से पहेले खजूरें या कोई मीठी चीज़ खाना (5) सदक़ये फ़ितर अदा करके जाना (6) ईदुल अज़हा में नमाज़ के बाद आकर अप्नी क़ुरबानी का गोष्त खाना (7) ईदगाह में ईद की नमाज़ पढ्ना (9) पैदल जाना (8) एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से वापस आना (10) ईद की नमाज़ से पहेले घर में या ईद गाह में नफ़िल नमाज़ ना पढ्ना (11) ईद की नमाज़ के बाद ईद गाह में नफ़िल ना पढ्ना

दोनों ईदों की नमाज़ दो रकात है इन दोनों नमाज़ों के लिये अजान और तक्बीर नहीं पहेले निय्यत इस तरह करे के मै ईदुल फ़ितर या ईदुल अजहा की वाजिब नमाज़ छे जायिद तक्बीरों के साथ इस इमाम के पीछे पढ्ता हुं फ़िर तक्बीरे तहेरीमा कहेकर हाथ बांद्ले और सना पढे फ़िर दोनों हाथ कानो तक उठाते हुवे अल्लाहु अक्बर कहेकर दोनों हाथ छोड दे फ़िर दूसरी बार हाथ कानों तक उठाकर अल्लाहु अक्बर कहेकर दोनों हाथ छोड्दे फ़िर तीसरी बार हाथ कानों तक उठाकर अल्लाहु अक्बर कहे और हाथ बांद्ले फ़िर इमाम त-अव्वुज, तस्मिया, सूरे फ़ातिहा, सुरत पढ्कर रुकू करे दूसरी रकात के लिये जब खडे हो तो इमाम पहेले क़िरात करे क़िरात से फ़ारिग होकर कानों तक हाथ उठाकर तक्बीर कहे और हाथ छोडदे फ़िर कानों तक हाथ उठा कर दूसरी

तक्बीर कहे और हाथ छोड़्दे फ़िर कानों तक हाथ उठा कर तीसरी तक्बीर कहे और हाथ छोड़्दे फ़िर बगैर हाथ उठाये चौथी तक्बीर कहेकर रुकू में जाये और क़ायिदे के मुवाफ़िक नमाज़ पूरी करे ।

फ़िर इमाम खडे होकर खुतबा पढे और तमाम लोग खामूष बैठ कर सुने ईदैन में भी जुमा की तरह दो खुत-बे हैं और दोनों के दरमियान बैठ्ना मस्नून है ।

{72} सलातुत तस्बीह नमाज़ का तरीक़ा

(1) जोहर से पहेले पढ्ना बेहेतर है हो–सके तो हर रोज़ पढे वरना जुमा को, वरना महीने में एक बार, वरना साल में एक बार और ये भी ना होसके तो उमर में एक बार इख्लास से पढ्ने से छोटे हो या बडे सब गुनाह अल्लाह तआला मआफ़ करदेंगे इनषा अल्लाह (2) निय्यत इस तरह करे के सलातुत तस्बीह की चार रकात नफ़िल नमाज़ पड्ता हुं वास्ते अल्लह के मूँह मेरा काबे षरीफ़ के (3) इस नमाज़ में तस्बीह (तीसरा कलिमा) 300 मरतबा पढ्ना चाहिये (तीसरा कलिमा : सुब–हानल्लाहि वल-हम्दु लिल्लाहि वलाइला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक-बर) सना के बाद 15 मरतबा जम सूरा पढ्ने के बाद 10 मरतबा रुकू में 10 मरतबा क़ौमा में (रुकू से उठ्ने के बाद) 10 मरतबा पहेले सज्दे में 10 मरतबा जल्से में (पहेले सज्दे के बाद) 10 मरतबा दूसरे सज्दे में 10 मरतबा इस तरह एक रकात में 75 मरतबा पढ्कर इसी तरह पूरी चार रकातों में 300 मरतबा पढे

{73} नमाज़े इस्तेखारा का तरीक़ा

जब भी कोई अहेम काम दर पेष हो तो दो रकात नफ़िल नमाज़ पढ़कर दुआये इस्तिखारा करते रहें इनषा अल्लाह उस काम के करने या ना करने के बारे में षरहे सदर होजायेगा ये नमाज़ और दुआ किसी भी मुनासिब वख्त में पढी जासकती है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बडे एहेतेमाम से ए अमल हज़राते सहाबाह किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को बताया करते थे बाज बुज़रुगाने दीन के तजरुबे में ये बात भी आयी है के अगर रात को सोने से पहेले सात दिन तक ये अमल किया जाये तो इनषाअल्लाह इस दौरान मुत-अल्लिक़ा काम के बारे में खाब में कुछ इषारा होजाये गा या फ़िर तबीअत का मैलान व रुजहान किसी एक तरफ़ हो जाये गा। बस वही काम करे इनषा-अल्लाह इसी में खैर व-भलायी होगी दो रकात नफ़िल नमाज़ के बाद ए दुआ करे

अल्लाहुम्म इन्नी अस-त-खीरु-क बि-इल्मि-क व-अस-तक़ दिरु-क बि-क़ुद-रति-क व-अस-अलु-क मिन फ़ज़-लिकल अजीम फ़-इन्न-क तक़-दिरु वला अक़-दिरु व-तअ्-लमु व-ला अअ्-लमु व-अन-त अल्लामुल गुयूब अल्लाहुम्म इन-कुन-त तअ्-लमु अन्न हाज़ल अम-र, खैरुल्ली फ़ी-दीनी व-म-आषी व-आक़िबति अम-री फ़क़-दिर-हुली व-यस्सिर-हुली सुम्म बारिक-ली फ़ीहि व-इन-कुन-त तअ्-लमु अन्न हाज़ल अम-र षर्रुल-ली फ़ी-दीनी व-म-आषी व-आक़िबति अम-री फ़स रिफ़-हु अन्नी वस-रिफ़-नी अन-हु वक़-

दिर लियल–खै–र हैसु का–न सुम्म अर–ज़िनी बिह

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَسْتَخِیْرُکَ بِعِلْمِکَ وَاَسْتَقْدِرُکَ بِقُدْرَتِکَ وَاَسْئَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ الْعَظِیْمِ فَاِنَّکَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ اَللّٰهُمَّ اِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ ☆ خَیْرٌ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ فَاقْدُرْهُ لِیْ وَیَسِّرْهُ لِیْ ثُمَّ بَارِکْ لِیْ فِیْهِ وَاِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ فَاصْرِفْهُ عَنِّیْ وَاصْرِفْنِیْ عَنْهُ وَاقْدِرْ لِیَ الْخَیْرَ حَیْثُ کَانَ ثُمَّ اَرْضِنِیْ بِهٖ.

{74} नफ़िल नमाजों के अवक़ात और फ़ज़ाइल

तहज्जुद

रकातें :– 2,2 से 12 तक

वक़्त :– बेहेतर है. आधी रात के बाद या एक नींद के बाद

फ़ज़ीलत :– क़बर की रोष नी और रोजाना पढ्ने से मौत से पहेले वली बनेंगे

इषराक़

रकातें :– 2+2=4 वक़्त :– जब आफ़ताब बुलंद हो

फ़ज़ीलत :– मक़बूल हज और उमरे का सवाब और सारे दिन के कामो में अल्लाह मदद गार बनेंगे

चाश्त

रकातें :– 2 +2 से 12 तक

वक़्त :– जवाल से पहेले

फ़ज़ीलत :– रोजी में बर कत होगी

अव्वाबीन

रकातें :– 2 +2+2 =6 से 20 तक

वक़्त :– मगरिब के बाद

फ़ज़ीलत :– सवाब और बरकत

तहिय्यतुल वज़ू

रकातें :– 2 वक़्त :– जब भी वज़ू करे

फ़ज़ीलत :– हदीसे पाक में है के कोई अछ्छी तरह वज़ू करे दुनिया का खयाल किये बगैर तो अल्लाह तआला उस्के सारे गुनाहों को मआफ़ फ़रमादेंगे

तहिय्यतुल मसजिद

रकातें :– 2

वक़्त :– जब भी मसजिद में दाखिल हो

फ़ज़ीलत :– मसजीद क हक़ अदा होता है

सलातुल हाजत

रकातें :– 2

वक़्त :– कुछ हाजत या जरूरत हो

फ़ज़ीलत :– जरूरत पुरी होजती है

सलातुत तौबा

रकातें :– 2

वक़्त :– जाने अन जाने में कोई गुनाह होजाये तो

फ़ज़ीलत :– तौबा नसीब होती है

सलातुत तसबीह

रकातें :- 2

वक़्त :- रोजाना या हफ़्ते में या साल में या जिंदगी में एक बार

फज़ीलत :- अल्लाह तआला छोटे या बडे गुनाह को बखष देते है

{75} जनाज़े की नमाज़ का तरीक़ा

अव्वल नमाज़ के लिये सफ़ बांद कर खडे हों अगर आदमी ज़ियादा हों तो तीन या पांच या साथ सफ़ें बनाना बेहेतर हैं जब सफ़ें दुरुस्त होजाये तो नमाज़े ज़नाज़ा की नियत इस तरह करो के मै खुदा के वास्ते इस जनाज़े की नमाज़ इस मय्यत की दुआये मग्फ़िरत के लिये इस इमाम के पीछे पढ्ता हुं फ़िर इमाम ज़ोर से और मुक़तदी आहिस्ता से तक्बीर कहे और दोनों हाथ कानों तक उठा कर नाफ़ के नीचे बांद्ले और इमाम, मुक़तदी सब आहिस्ता आहिस्ता सना पढे सना में "त- आला जद्दु-क" के बाद वजल्ल सना-उ-क भी कहेले तो बेहेतर है फ़िर इमाम ज़ोर से और मुक़तदी आहिस्ता से बगैर हाथ उठाये दूसरी तक्बीर कहे और वो दरूद जो नमाज़ के कायिदे आखिरा में पढ्ते हैं इमाम और मुक़तदी सब आहिस्ता आहिस्ता पढे फ़िर दूसरी तक्बीर की तरह तीसरी तक्बीर कहे और अगर जनाज़ा बालिग मर्द या औरत का हो तो इमाम और मुक़तदी आहिस्ता आहिस्ता ये अरबी दुआ पढे "अल्लाहुम्मग-फ़िर-लि हय्यिना व-मय्यितिना व-षाहिदिना व-गायिबिना व-सगीरिना व-कबीरिना व-जकरिना व- उन-साना अल्लाहुम्म मन अह-यय-तहू मिन्ना

फ़–अह–यिही अलल–इस्लाम व–मन तवफ़्फ़ैतहू मिन्ना फ़–त–वफ़्फ़हू अलल ईमान"

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ

अगर जनाज़ा ना बालिग लड़के का हो तो ये दुआ पढे

अल्लाहुम्मज अल–हु लना फ़–र–तव वज़–अल–हु लना अज–रव व–जुख–रव वज–अल–हु लना षाफ़िअव व–मुषफ़्फ़–आ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا

अगर जनाज़ा ना बालिग लड़की का हो तो ये दुआ पढे

अल्लाहुम्मज अल–हा लना फ़–र–तव वज–अल–हा लना–अज–रव व–जुख– रव वज–अल–हा लना षाफ़िअतव व–मु–षफ़्फ़–अह

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً.

उस्के बाद इमाम ज़ोर से और मुक़तदी आहिस्ता से चौथी तक्बीर कहे और फ़िर इमाम ज़ोर से और मुक़तदि आहिस्ता से पहेले दायें तरफ़ फ़िर बायें तरफ़ सलाम फ़ेरे

{76} तबलींग के अल्फ़ाज़ के मानी

त :- तक्लीफ़ को बरदाष्त करके उम्मत को फ़ायिदा पहुंचाने वाला

बा :- बे दीनी पर रोने वाला

लाम :- लायानी बातों से बचने वाला

या :- यक़ीन के साथ दीन का काम करने वाला

गैन :- गैब के ऊपर यक़ीन रखने वाला

{77} अमीर की इताअत

हर हुकुम में अमीर की बात माने (बषर तैके वो किसी गुनाह का हुकुम ना करे) अगरचे उस्का हुकुम नफ़्स पर गिराँ गुज़रे और अप्नी राय के खिलाफ़ हो और अगरचे अप्ने से कम पढा लिख्खा हो ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया है के अगर तुम्हारा अमीर नाक कान कटा हुवा षख्स बनादिया जाये तो तुमे अल्लाह की किताब (कुर आन षरीफ़) के मुताबिक़ ले चल्ता हो तो उस्की भी बात सुनो और कहा मानो (मुस्लिम षरीफ़)

बाज़ दफ़ा ऐसा भी होगा अमीर तुम्हारी हैसियत से कम हैसियत वाले को एज़ाज़ व इक्राम या वाज़ जो तक़रीर के लिये तरजीह देगा अगर ऐसा होतो बुरा ना मानो

हज़रत उबादह बिन साबित रजि॥ फ़र्मातेहै के हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इन षरतों पर बैत की के सख्तीमें और आसानीमें और खुषी में और नफ़्स के खिलाफ़ में और अप्ने ऊपर दूसरों को

तरजीह देने में बात सुनेंगे और इस पर अमल करेंगे और जहा भी हो हक़ कहेंगे अल्लाह के बारे में किसी मलामत करने वाले की मलामत से ना डरेंगे

{78} मषोरे का मक़सद

इत्तिहादे फ़िकर सब्की फ़िकिर का एक होना, इज्तिमाये क़ुलूब यानी तमाम दिलों का जुड जाना

{79} मषोरे की फ़ज़ीलत

मा नदि-म मनिस्तषा-र-व मा-खसि-र मनिस्तखा-र

مَانَدِمَ مَنِ اسْتَشَارَ وَمَاخَسِرَمَنِ اسْتَخَارَ

जिस्ने मषोरा किया वो षरमिंदा ना-हुवा, जिस्ने इस्तेखारा किया वो नुकसान ना उठाया_

{80} मषोरे के आदाब

(1)हर काम षुरू करने से पहेले और मषोरे से पहेले ये दुआ पढे :-अल्लाहुम्म अल-हिम-ना मराषि-द उमूरिना व-अ-इज़-ना मिन- षुरूरि अन-फ्फुसिना

اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنَا مَرَاشِدَ اُمُوْرِنَا وَاَعِذْنَا مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا

(2) मषोरा अल्लाह का हुकुम है अंबिया अलैहिस्सलाम की सुन्नत है सहाबा रजि॥ की आदत और हमारी जरूरत है (3) एक जिम्मेदार को मुंतक़ब करले अगर जमाअत का जिम्मेदार हैतो जरूरत नहीं है (4) अपनी राय अमानत समझ कर दे (5) राय को दाहिनी तरफ़ से देना षुरू करे (6) दीन के फ़ायिदे को साम्ने रख कर राय दे (7) साथियों की राय को ना काटे यानी जब एक साथी राय

दे रहाहो तो उस्की बात ना काटे (8) ज़िम्मेदार जिस से राय पूछे वही राय दे (9) जो साथी जिस काम के क़ाबिल हो उस्को साम्ने रख्ते हुये राय दे (10) मषोरे में मैनारिटि और मेजारिटी नहीं है (11) अमीर को इख्तियार है के बगैर राय या मषोरे से उमूर तै कर सकता है (12) खिदमत औंर एलान में अप्ने को साम्ने रख्खे दीगर (दूसरे) उमूर में दूसरों को तरजीह दे (13) जिस्की राय पर अमीर फैस्ला करे वो इस्तिग्फ़ार करे जिस्की राय कुबूल ना हुवी वो इस पर अल्लाह का षुकुर अदा करे (14) जिस बात पर फैस्ला होजाये तमाम साथी उस्को खुष दिली के साथ अल्लाहुम्म खैर कहेते हुवे कुबूल करे और काम को अनजाम दे (15) मषोरे से पहेले मषोरा ना करे मषोरे के बाद उस पर तब्सिरह ना करे (16) मषोरे में तीन फिकरें ले कर बैठे 1) पहेलि फिकर ए है के मेरी इस्लाह किस तरह़ होजाये मेरी जिंदगी से लेकर इस मोहल्ले और पूरी दुनिया में दीन किस तरह जिंदा होजाये 2) दूसरी फ़िकर ए है के जिस तरह मैं अल्लाह के रास्ते में निक्लाहूँ उसी तरह यहाँ के लोग किस तरह निकल जायें 3) तीसरी फिकर ए है के अगर मस्जिद वार जमात कम्ज़ोर होतो उसे मज़्बूत बनाये अगर मस्जिद वार जमात मज़्बूत होत्तो उस्से काम सीखे (17) मषोरे (मज्लिस) के खतम पर ए दुआ पढे :-

"सुब-हानल्लाहि व-बिहम-दिही सुब-हा-न कल्लाहुम्म व-बि हम-दि-क अष-हदु अल्लाइलाह इल्ला अन-त अस-तग फ़िरु-क व-अतूबु इलैक"

سُبۡحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمۡدِہٖ سُبۡحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمۡدِکَ
اَشۡھَدُ اَنۡ لَّا اِلٰـہَ اِلَّا اَنۡتَ اَسۡتَغۡفِرُکَ وَاَتُوۡبُ اِلَیۡکَ

{81} तालीम के आदाब

तालीम का मक़सद आमाल से जिंदगी बन्ने और बिगड़ने का यक़ीन पैदा हो

षेअर

अमल से जिंदगी बन्ती है जन्नत भी जहन्नम भी
ए खाकि अपनी फितरत में ना–नूरी है ना–नारी

(1) बा वज़ू बैठ्ने की कोषिष करे (2) बा अदब बैठे (3) तालीम का मक़सद दिल मुत–अस्सिर हो यानी जन्नत के वाक़िआत आये तो दिल खुष हो जहन्नम के वक़िआत आये तो दिल गमगीन हो (4) कलामुल्लाह और उस्के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात और साहिबे कलाम की अज़्मत को दिल में लेकर बैठे (5) तालीम में बैठ्ने से पहेले अपनी ज़रूरिय्यात से फ़ारिग हो कर बैठे (6) तालीम में छोटे छोटे तक़ाज़ो (ज़रूरिय्यात) को रोक्ले (7) ध्यान व तवज्जुह के साथ दिल लगा कर बैठे (8) इस निय्यत से बैठे के दीन की बातें आयें तो उस पर अमल करेंगे और दूसरो तक पहुंचाते रहेंगे (9) पढ्ने वाले को देखें या किताब को देखे (10) दिवार को लग कर या टेक लगा कर ना बैठे (11) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे मुबारक आये तो दरूद षरीफ़ पढे (12) हदीस के दरमियान में कोई बात अपनी तरफ़

से ना कहे (13) साथियों को मुतवज्जे करे (14) तालीम के तीन हिस्से 1) कुर आन की तालीम 2) फ़जायिल की तालीम (एक दिन फ़जायिले आमाल और एक दिन मुन्तखब अहादीस) 3) छे सिफ़ात का मुज़ाकिरा (15) हर हदीस को तीन मरतबा पढा जाये फ़ायिदे को एक मरतबा पडा जाये (16) सहाबा का नाम आये तो रजियल्लाहु अन्ह बुज़रुग या वली का नाम आये तो रहेमतुल्लाहि अलैह मक्का और मदीने का नांम आये तो ज़ादहल्लाहु षरफ़व व–अज़्मह, अल्लाह तआला उस्की अज़्मत और षराफ़त को बढाये

{82} रवानगी के आदाब

(1) तआम–सेट की फ़ेहरिस्त के बराबर पूरी चीज़ों को बांध ले (2) मस्जिद की कोई चीज़ अप्ने पास ना हो और अपनी कोई चीज़ मस्जिद में ना हो (3) मस्जिद को पहेले से भी ज़ियादा साफ़ रख्खे (4) सारे साथी जुड कर फ़िकर और दुआ करे के या अल्लाह तेरी मस्जिद को इस्तिमाल करके जिस तरह का काम करना था उस तरह ना कर सके इनषा–अल्लाह जिस मस्जिद में जायेंगे उस मस्जिद में खूब मेहेनत करके नगद जमाअत निकालेंगे (5) अपनी अपनी ब्यागों का और तआम सेट का खयाल करे (6) अपनी अपनी जोडि के साथ नदामत करते हुवे एक बाजू से चले (7) आहिस्ता से सीख्ना सिखाना और ज़िकर और फ़िकर के साथ चले (8) नज़रों की हिफ़ाज़त करे (9) सफ़र में कोई सलाम करे तो ऐक साथी जवाब दे (10) मस्जिद को देखे तो दरूदे षरीफ़ पढे और दुआ

पढ़कर मस्जिद में दायाँ पैर रखखे (11) मस्जिद में दाखिल होने के बाद एतिकाफ़ की दुआ पढ़कर तहिय्यतुल वज़ू और तहिय्यतुल मस्जिद पढ़कर फ़ौरन मषोरे में बैठे (12) मस्जिद को जिस हाल में पाया था उस से बेहेतर हाल में छोड कर जाये मस्जिद की जो बिज्ली (करेंट) वगैरा इस्तेमाल किये हैं उस्की रक़म अदा करने की कोषिष करे

{83} तआरुफ़ी बात

मेरे मोहतरम भायियो बुज़रुगो दोस्तो अल्लाह तआला गुज़रे हुवे जमाने में सैकडों बरसों से नेक कामों का हुकुम करने और बुरे कामों से रोक्ने के लिये नबियों को भेजा करते थे अब नबुव्वत का दरवाज़ा बंद होचुका है हमारे आखिरी नबी मुहम्मद स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस काम को उम्मत पर सोंप दिया है अल्लाह त–आला इस काम के लिये हुज़ूर स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत को चुन लिया है इस लिये क़ुरआन में इरषाद फ़रमाते हैं तुम बेहेतरीन उम्मत हो जो नफ़ा रसानी के लिये निकाली गयी हो नेक काम करते हो और नेक काम करने की दावत देते हो बुरे कामों से बच्ते हो और बुरे कामों से बच्ने की दावत देते हो इस काम को सहाबा, ताबिईन, तब–ये ताबिईन, और औलियाये किराम और सारे नेक लोगो ने किया और हर मुसलमान इस दावत वाली मेहेनत को करना है इस लिये कोन कोन साथ देंगे बतायें

{84} फ़ज़ाइले ज़िकर

मेरे भाइयो बुज़रुगो और दोस्तो हदीसे पाक के

मफ़हूम में है के ज़िकर से दिल की सफ़ायी होती है और गाफ़िलों में ज़िकर करने वाला ऐसा है जैसे अंधेरे घर में चिराग़ है इस लिये हमको घर में दुकान में चल्ते फिरते हर हमेषा ज़िकर की पाबंदी करके अल्लाह के ध्यान को लाना है हमारे बुज़रुगाने दीन आसान तरीक़ा बनाते हैं के रोज़ाना सुबह व षाम 3 तस्बीहात की पाबंदी करे तीसरा कलिमा 100 मरतबा, दरूद षरीफ़ 100 मरतबा और इस्तिग़फ़ार 100 मरतबा पढे ।

<u>तीसरा कलिमा :-</u> सुब हानल्लाहि वल-हम-दु लिल्लाहि व-लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व-ला-हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम ।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ

<u>दरूद षरीफ़ :-</u> जज़ल्लाहु अन्ना मुहम्मदम माहु-व अह-लुहू सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

جَزَی اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَّا هُوَ اَهْلُهٗ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ

<u>इस्तिग़फ़ार :-</u> अस्तग-फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला-इला-ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्युम व-अतूबु इलैह

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ

हदीसे पाक के मफ़हूम में है के सुब-हानल्लाह 100 मरतबा पढ़ने से 100 अरब गुलामों को आज़ाद करने का सवाब मिलेगा अल-हम-दु लिल्लाह 100 मरतबा

पढ़ने से 100 अरब घोडों को साज़ो सामान के साथ जिहाद में सवारी के लिये देने का सवाब मिलेगा, अल्लाहु अक्बर 100 मरतबा पढ़ने से 100 ऊंट क़ुरबानी में जुबह किये और क़ुबूल हुवे उतना सवाब मिलेगा और ला-इलाह इल्लल्लाह 100 मरतबा पढ़ने से आस्मान व ज़मीन के दरमियान जितनी जगे है सब नेकियों से भर जाती है ला-हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम 100 मरतबा पढ़ने से 99 बीमारियों से हिफ़ाजत होती है दरूदे षरीफ़ एक मरतबा पढ़ने से 40 फ़ायिदे हैं, 10 गुनाह माफ़ होजाते हैं, 10 नेकियाँ नाम-ए-आमाल में लिख्खी जाती हैं, जन्नत के 10 दरजे बुलंद होते हैं, 10 रहेमतें नाज़िल होती हैं, इख्लास के साथ 3 मरतबा इस्तिगफ़ार पढ़ने से समुंदर के झागों के बराबर भी गुनाह हो तब भी अल्लाह तआला माफ़ परमादेते हैं

{85} गष्त के आदाब

मेरे बयियो बुज़रुगो दोस्तो ! अल्लाह तआला इस दुनिया को उजूद मे लाने के बाद अठारा (18) हज़ार मखलुक़ात बनाया सारि मखलुक़ात मे इनसान को अष रफ़ुल मखलूक़ बनाया । और इनसान को सहि रास्ता दिखाने के लिये अंबिया अलैहिस्सलाम को भेजा करते थे । हर **नबि** आकर लोगों को अल्लाह कि तरफ़ बुलाते थे । जो नबि कि बात को मानता था वो कामियाब होत था । जो नबि कि बात को इनकार करता वो ना कामियाब होता था

हमारे आखिरि नबि मुहम्मद सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक नबुव्वत का दरवाज़ा बंद होचुका है अब

कोयि नबि आने वाले नहि है अल्लाह पाक इस नबियो वाले काम के लिये इस उम्मत को चुनलिया है अल्लाह तआला क़ुरआने पाक मे भि कयि जगा इस उम्मत कि तारिफ़ किये है उस्से बेहेतर किस कि बात होसकति है जो अल्लाह से बिचडे हुवे बंदो को अल्लाह कि तरफ़ बुलाये

हमारे नबि मुहम्मद सोल्लल्लाहु अलैहि वस्ल्लम इस उम्मत को जहन्नम से बचाकर जन्नत को लेजाने के लिये एक एक के पास सत्तर (70) सत्तर मरतबा जाकर दावत देते थे दिन भर दावत देने मे रात भर इस उम्मत के लिये अल्लाह के सामने गिड गिडाकर रोते थे और एक मोखेपर फ़रमाया इस्का मफ़हूम है के जितनि दीन कि बाते तुमे मालुम है वो दूसरो तक पहुंचावो, इस दीन कि दावत कि ज़िम्मेदारि इस उम्मत को दिये है इस दीन कि मेहेनत के लिये गष्त वाला अमल ज़रूरि है । इस रास्ते मे निकल कर एक मरतबा अल्लाह पाक का नाम लेंगे तो साथ लाक (7,00,000) मरतबा कहेने का सवाब मिलता है । एक क़दम डालेंगे तो साथ सौ(700) क़दम डालने का सवाब मिलता है इस रास्ते कि गर्द गुबार जिसम पर पडति है तो इस को जहन्नम कि आग तो क्या जहन्नम का धुवा बि नहि छु सकता । अल्लाह तआला जब भि दुनिया के अंद्र अज़ाब को भेजने का इरादा करते है तो इस गष्त वाले अमल के बजेसे अपने अज़ाब को रोक लेते है गष्त का अमल इस दीन के काम में रीड की हाड्डी की तरह है अगर ए अमल सही फ़िकरों के साथ होगा तो दावत क़ुबूल होगी दावत क़ुबूल होगी तो दुआ क़ुबूल होगी दुआ क़ुबूल होगी तो

हिदायत उतरेगी इस गष्त के लिये सारे साथि तय्यार है क्य बाय इनषाअल्लाह, गष्त के लिये चार आमाल जरूरी हैं (1) उमूमी गष्त के लिये जाना (2) इस्तेक़बाल के लिये टेहेरना (3) दरमियानी बात चलाना (4) ज़िकर और दुआ में बैठ्ना

<u>(1) उमूमी गष्त :-</u> उमूमी गष्त के लिये ज़ियादा से ज़ियादा 10 आदमी हों और कम अज़ कम 3 आदमी हों एक रेहेबर, दूसरा मुतकल्लिम, तीसरा अमीर,

<u>रेहेबर :-</u> रेहेबर मुक़ामी होतो बेहेतर है रेहेबर साब का काम ए है के जोभी मुसल्मान भायि दिखे तो उस्को अच्छे अंदाज़ से नरमी और आज़िज़ि से सलाम करके मुतकल्लिम साब से मिलाये अगर दुकान का मालिक होतो दुकान के बाहर बुलाकर मिलाये रेहेबर तरतीब के साथ दुकान व मकान वालो से मिलाये

<u>मुतकल्लिम :-</u> मुतकल्लिम का काम ए है के जिस से भी मुलाखात हो उस्को सलाम और मुसाफ़हा करके ईमान और यखीन की बात बताकर नगद मस्जिद में लाने की कोषिष करे इतनी भी बात ना हो के एलान होजाये और इतनी भी बात नाहो के बयान होजाये अगर कोई उज़र बताये तो दाई बनाकर छोडदे यानी दूसरों को लेकर आने की फ़िकर दिलाये हर साथी दीन का मोहताज बनकर सुने मुतकल्लिम साब हर साथी को देख्ते हुवे बात बताये

<u>अमीर साब :-</u> अमीर साब का काम ए है के मस्जिद से निकल्ते वक़्त दुआ करके निक्ले एक बाजू से जाये रेहेबर सामने और रेहेबर के पिछे मुतकल्लिम हो पूरे

साथियों की निगरानी करते हुवे अमीर साब आखिर में हो ज़िकर और फ़िकर के साथ साथियों को लेकर चले कोई उसूल टूटे तो एक बाज़ू में जुडकर फ़िकर दिलाये कोई साथी ज़िकर से गाफ़िल होतो तलक़ीन करे नज़रों की हिफ़ाज़त करे घर के पास गये तो परदे का खयाल करते हुवे एक बाज़ू में टेहेरे वापसी में नदामत के साथ इस्तेगफ़ार पढ्ते हुवे आये

(2) इस्तेकबाल :- इस्तेकबाल में एक या दो साथियों को रख्खे मस्जिद के दरवाज़े के पास रहेकर आने वाले भायियों को सलाम खैर खैरियत पूछकर दीनी मज्लिस में बिठाये अगर नमाज़ ना पढे होतो वज़ू कराके नमाज़ पढाये फ़ुजूल बात किये बगैर ज़िकर फ़िकर में रहे

(3) दरमियानी बात :- दरमियानी बात में बाक़ी साथियों को जोडकर दीन का ज़ेहेन बनाये अल्लाह के रासते के फ़ज़ाइल बताकर इरादे कराये फिर नमाज़ के बाद बैठ्ने की और दूसरों को बिठाने की फ़िकर दिलाये

(4) ज़िकर व दुआ :- गष्त की जान ज़िकर और दुआ है किसी एक या दो साथी को ज़िकर और दुआमें बिठाये थोडि देर ज़िकर करके गष्त वाला काम कामियाब होने के लिये और सारे आलम (दुंनिया) में हिदायत के लिये अल्लाह से दुआ करे दुआ और दावत के ज़रिये से लोगों को हिदायत मिलती है

{86} छे सिफ़ात

मेरे मोहतरम भायियो बुज़रुगो दोस्तो सारे इन्सानों की कामियाबी इस मुबारक दीन में है जिस की ज़िंदगी

में दीन होगा वो दुनिया और आखिरत में कामियाब होगा जिस की ज़िंदगी में दीन ना होगा वो दुनिया और आखिरत में ना कामियाब होगा हुज़ूर स़ाल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत में रहेकर सहाबा रजि॥ बहुत से सिफ़ात सीखे उन में से चंद सिफ़ात पर अमली मष्क करने से दीन पर चलना आसान होगा वो सिफ़ात ए हैं (1) ईमान (2) नमाज़ (3) इल्म व ज़िकर (4) इकरामे मुस्लिम(5) इख्लासे निय्यत (6) दावत व तब्लीग

<u>(1) ईमान :</u> ईमान से ए चाहा जारहा है के मेरे दिल का यक़ीन सही होजाये एक अकेले अल्लाह से होने का यक़ीन हमारे अंदर आजाये गैरुल्लाह से होने का यक़ीन हमारे अंदर से निकल जाये ईमान के मफ़्हूम की पहुंच दिमाग तक है ईमान के हुरूफ़ की पहुंच किताब तक है ईमान के बोल की पहुंच ज़ुबान तक है ईमान की आवाज़ की पहुंच कानों तक है ईमान के ईख्लास की पहुंच दिल तक है ज़ाहिर के खिलाफ़ बोलने से ज़ाहिर के किलाफ़ सोछने से ज़ाहिर के खिलाफ़ सुन्ने से और ज़ाहिर के खिलाफ़ चलने से ईमान की हक़ीक़त आयेगी एक हदीसे पाक का मफ़हूम है के दुनिया में एक भी ईमान वाला रहेकर अल्लाह अल्लाह केहेता है तो अल्लाह तआला सारी दुनिया का निज़ाम चलायेंगे और इस दुनिया में एक भी ईमान वाला ना रहे तो ज़मीन और आस्मान को तोड कर क़ियामत नाज़िल करेंगे

ईमान का कलिमा ला–इला–ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस्के मानी

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं इसका मतलब ए है के किसी से कुछ नहीं होता सिवाये अल्लाह के इ़ज़्ज़त का देना ज़िल्लत का देना हयात का देना मौत का देना बीमारी का देना षिफ़ा का देना दिन और रात को तबदील करना रोज़ी का देना परेषानी का देना मुहब्बत का डालना और नफ़रत का डालना सब कुछ अंल्लाह के हाथ में है हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े में सौ फ़ीसद कामियाबी है गैरों के तरीक़े में ना कामियाबी है कलिमे का तक़ाज़ा ए है के मन चाही ज़िंदगी छोड कर रब चाही ज़िंदगी इख़्तियार करे

ईमान हमारी ज़िंदगी में आने के लिये 3 लैन की मेहनत करना है (1) दीनी मजालिस में बैठ कर ईमान के फ़ज़ाइल को खूब सुने और लोगों में चल फिर कर ईमान की हक़ीक़त और अल्लाह की बडायि को खूब बोलना (2) अल्लाह की बनायि हुवी चीज़ों में पर खूब ग़ौर व फ़िकर करना (3) अल्लाह से रो रो कर हक़ीक़त वाले ईमान को मांग्ना

<u>(2) नमाज़ :</u> नमाज़ से ए चाहा जारहा है के हमारी ज़िंदगी सिफ़ते सलात पर आजाये यानी नमाज़ में जैसा हम अल्लाह का हुकुम पूरा करते हैं वैसा ही नमाज़ के बाहर अल्लाह का हुकुम पूरा करने वाले बन जाये और दो रकात नमाज़ पढ्कर अल्लाह तआला की क़ुदरत से फ़ायिदा उठाने वाले बने हदीसे पाक के मफ़हूम में है के जो षख्स पांच वक़्त की नमाज़ पाबंदी के साथ पड़ता है

तो उस्को अल्लाह तआला पांच इनाम देते हैं (1) रिज़क़ की तंगी दूर कर देते हैं (2) क़बर का अज़ाब हटादेते हैं (3) आमाल नामा दायें (सीदे) हाथ में देते हैं (4) पुल सिरात का रास्ता बिज्ली की तरह पार करा देते हैं (5) हिसाब से मेहेफ़ूज़ परमायेंगे

नमाज़ हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों की ठनडक है मोमिन का नूर है षैतान का मूँह काला कर देती है और दिल का सुकून है जिस तरह बदन के लिये सर ज़रूरी है उसी तरह मुसलमान के लिये नमाज़ पढ्ना भी ज़रूरी है

हक़ीक़त वाली नमाज़ बनाने के लिये 3 लैन की मेहेनत करना है (1) दीनी मजालिस में बैठ कर नमाज़ के फ़ज़ायिल को खूब सुने और लोगों में चल फ़िर कर हक़ीक़त वली नमाज़ और नमाज़ के फ़ज़ायिल की खूब दावत देना (2) नमाज़ को ज़ाहिर और बातिन के एतेबार से दोदो रकात नफ़िल नमाज़ पढ्कर मष्क करे (3) अल्लाह से रो रो कर हक़ीक़त वाली नमाज़ मंगे

<u>**(3) इल्म व ज़िकर :**</u> इल्म एक रास्ता है ज़िकर एक रोष्नी है । इल्म से ए चाहा जारहा है के हमारे अंदर तेहेक़ीक़ का जज़बा पैदा होजाये कम अज़ कम इतना जान्ना है के हराम व हलाल की पेहेचान होजाये हदीसे पाक के मफ़हूम में है के जो षख्स इल्मे दीन को सीखने के लिये निकल्ता है तो उस्के लिये समुंदर की मछलियाँ, दरिंदे, चरिंदे और परिंदे मगफ़िरत की दुआ करते हैं ए सिफ़त हमारी ज़िंदगी में आने के लिये 3 लैन की

मेहेनत करना है (1) दीनी मजालिस में बैठ कर इल्मे दीन के फ़ज़ायिल को खूब सुने और लोगों में चल फिर कर इल्मे दीन की फ़ज़ीलत की खूब दावत दे और लोगों को अप्ने अंदर इल्मे दीन सीखने का षोख व तलब पैदा करे (2) मसायिल वाले इल्म को मोतबर उलमा से मालूम करे और फ़ज़ाइल वाले इल्म को दीनी किताबों और तालीम के हलक़ों में हासिल करे (3) अल्लाह से रो रो कर हक़ीक़त वाला इल्म मंगे

ज़िकर से ए चाहा जारहा है के अल्लाह का खुर्ब और ध्यान पैदा होजाये हदीसे पाक के मफ़हूम में है के ज़िकर करने वाला जिंदे की मिसाल है और ज़िकर ना करने वाला मुरदे की मिसाल है और एक हदीसे पाक के मफ़हूम में है के रोज़ाना जिस्की जुबान अल्लाह के ज़िकर से तरो ताज़ा रेहेती है वो षख्स हस्ते हुवे जन्नत में दाकिल होगा ए सिफ़त हमारी ज़िंदगी में आने के लिये 3 लैन की मेहेनत करना है (1) दीनी मजालिस में बैठ कर ज़िकर के फ़ज़ाइल को खूब सुने और लोगों में चल फ़िर कर ज़िकर के फ़ज़ील की खूब दावत देना (2) तन्हायि में बैठकर अल्लाह का ज़िकर करना है सुबह व षाम तीन तस्बीहात की पाबंदी करे और ए कैफ़ियत होना है के अल्लाह मेरे साम्ने है मुझे देख रहा है और मेरा ज़िकर सुन रहा है (3) अल्लाह से रो रो कर ज़िकर की हक़ीक़त मंगे

<u>**(4) इक्रामे मुस्लिम :**</u> इक्रामे मुस्लिम से ए चाहा जारहा है के रसूलुल्लाह सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

के अख्लाक़ हमारे अंदर आजायें और अप्ने हक़ को पेहेचांते हुवे दूसरों के हुक़ूक़ अदा करे हदीसे पाक के मफ़्हूम में है के एक भायि दूसरे भायि की परदा पोषी करता है तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उस्की परदा पोषी करेंगे और एक हदीसे पाक के मफ़्हूम में है के बडों की इज़्ज़त करे छोटों पर षफ़्खत करे उलमाये दीन की क़दर करे जो ऐसा नहीं करता हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वो हम में से नहीं ए सिफ़त हमारी ज़िंदगी में आने के लिये 3 लैन की मेहेनत करना है (1) दीनी मजालिस में बैठकर अछछे अख्लाक़ के फ़ज़ाइल को खूब सुने और लोगों में चल फिरकर हुज़ूर स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा के अख्लाक़ हम्दरदी और ईसार के वाक़िआत की खूब दावत देना (2) हर साथी की खिदमत करके अप्ने अंदर तवाज़ू पैदा करे और हर अल्लाह के बंदे को मुहब्बत भरी निगाह से देखे और अप्ने आप को हक़ीर सम्झे (3) अल्लाह से रो रो कर हुज़ूर स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले अख्लाक़ को मंगे

<u>(5) इख्लासे निय्यत :</u> इख्लासे निय्यत से ए चाहा जारहा है के जो भी नेक काम करे अल्लाह की रज़ामंदी के लिये करने वाले बने जो भी नेक काम अल्लाह की रजा के लिये रायि के दाने के बराबर भी करेंगे तो अल्लाह तआला उहद के पहाड के बराबर सवाब देंगे अगर दिख्लावे के लिये उहद के पहाड के बराबर भी कोई नेक काम करे तो रायि के दाने के बराबर भी उस्का अजर व सवाब नहीं देंगे और इख्लास वाले की अलामत ए है के कोई तारीफ़

करे तो खुष ना हो अगर कोई नफ़रत या खते रहेमी करे तो उन्से दुष्मनी और बद्ला ना हो ए सिफ़त हमारी ज़िंदगी में आने के लिये 3 लैन की मेहे त करना है (1) दीनी मजालिस में बैठकर इख्लास के फ़ज़ाइल को खूब सुने और लोगों में चल फिरकर इख्लास के फ़ज़ाइल की खूब दावत देना (2) हर अमल से पहेल और दरमियान में और आखिर में अपनी निय्यत्त को तीन मरतबा टटोल (3) अल्लाह से रो रो कर इख्लास की हक़ीक़त मंगे

(6) दावत व तब्लीग : दावत व तब्लीग से ए चाहा जारहा है के इस दीन की मेहेनत को अपनी जिम्मे दारी समझ्ते हुवे अपनी ज़ात से लेकर पूरे आलम में दीन जिंदा होने के लिये काम के आलमी तक़ाज़ों को अपनी जान और माल के साथ पूरा करना कुर आने पाक में आता है के उस्का मफ़हूम ए के अल्लाह तआला ने जन्नत के बद्ले में ईमान वालो के जान व-माल को खरीद लिया है हदीसे पाक के मफ़हूम में आता है के अल्लाह के रासते में थोडी देर के लिये निकल्ना दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से अफ़्ज़ल है ये सिफ़त हमारी ज़िंदगी में आने के लिये 3 लन की मेहेनत करना है (1) दीनी मजालिस में बैठकर अल्लाह के, रासते की फ़जीलतों को खूब सुने और लोगों में चल फ़िरकर अल्लाह के रासते के फ़जायील की खूब दावत देना (2) हम जहाँ भी जायें 4 महीने 40 दिन और 3 दिन की जमातों को निकाले और अप्ने तक़ाज़ों को दबाकर 4 महीने 40 दिन और 3 दिन अल्लाह के रासते में पाबंदी

के साथ निक्ले (3) अल्लाह से रो रो कर अल्लाह के रासते में निकलने की तौफ़ीक़ मंगे ।

{87} मुक़ामी 5 काम

(1) रोज़ाना किसी नमाज़ के बाद सर जोड कर बैठके ए फ़िकर करे के किस तरह मेरी ज़िंदगी से लेकर सारे आलम में100 फ़ीसद दीन ज़िंदा होजाये (2) मस्जिद की आबादी के लिये ढायि घंटे वख्त निकाले (3) रोज़ाना मस्जिद की तालीम और घर की तालीम करे घर की तालीम में छें सिफ़ात के मुज़ाकरे भी करे (4) हर हफ़्ते में गष्त करे अपनी मस्जिद का गष्त और पडोसी मस्जिद का गष्त करे (5) हर महीने में 3 दिन अल्लाह के रासते में निक्ले

{88} अल्लाह के रासते में निकल कर 16 बातों के दायिरे में चले

(1) चार कामों में ज़ियादा से ज़ियादा वक़्त लगाये (1) दावत देने में (2) सीखने और सिखाने में (3) इबादत में (4) तालीम में

(2) चार कामों में कम से कम वक़्त लगाये (1) खाने पीने में (2) नहाने धोने में (3) सोने में (4) जरुरिय्यात में (मसलन पिषाब पाखाना करने में)

(3) चार काम बिलकुल ना करे (1) फ़ुज़ूल खरच (2) लायानी बातें (3) दिल और ज़ुबान का सवाल (4) बगैर इजाज़त के किसी साथी की कोई चीज़ लेना

(4) चार काम खिदमत की लैन से करे (1) खुद की खिदमत खुद करे (2) साथियों की खिदमत करे (3) बस्ती वालों की खिदमत करे (4) अमीर साब की खिदमत

करे यानी अमीर की माने

{89} अल्लाह के रासते के इज़्तेमाई आमाल 8 हैं

(1) सफ़र (2) मषोरा (3) तालीम (4) नमाज़ें (5) गष्त (6) बयान (7) खाना (8) सोना

{90} ख़ाना खाने के आदाब

(1) खाने से पहेले दोनों हाथ धोले और कुल्ली करे (2) हाथ को कपडे से ना पोचे (3) दस्तर खान बिछाये (4) एक ज़ानू या दो ज़ानू बैठे (5) सर डाक्ले (6) खाने से पहेले की दुआ बिस्मिल्लाहि व़-अला ब-र-कतिल्लाह पढे (7) सीदे हाथ से खाये (8) एक बरतन में ज़ियादा से ज़ियादा साथी बैठ्ने की कोषिष करे (9) बरतन के बीच के हिस्से से ना खाये (10) पेट के तीन हिस्से करे खाना पानी और हवा (11) साथियों का खयाल करते हुवे खाये (12) ज़िकर करते हुवे खाये अल्लाहुम्म लकल-हम-दु व-ल-कष-षुक-रु दुनिया की बातें ना करे (13) खाने को ऐब ना लगाये (14) गुस्से और तकब्बुर से टेक लगाकर ना खाये (15) ज़ियादा गरम खाना ना खाये (16) गरम खाने को मूँह से ना फूंके (17) दाग लगा हुवा खाना ना खाये (18) एक दाना भी ना गिराये अगर दाने गिरे तो उठाकर खाने से तकब्बुर टूट्ता है (19) अगर खाने से पहेले की दुआ भूल जाये तो ए दुआ **पढे** "बिस्मिल्लाहि अव्वलहू व-आखिरहू" (20) पानी पीने से पहेले पानी को देखकर बिस्मिल्ला पढे और तीन सान्स में पीकर अल-हम-दु लिल्लाह कहे (21) मेहेमान बन्कर खाते वक़्त मेज़बान ना बने जिस को जितनी जरूरत है उतना ही खाना डाले (22)

कहीं दावत में लाये हुवे ख़ाने के बरतनों को खाना डाल लेकर पूरा साफ़ ना करे बलके थोडा बचाकर रख्खे ताके मेज़बान का दिल ना दुखे (24) खाना खाये हुवे बरतन मे हाथ ना धोये (25) साथियों की इजाज़त के बगैर दसतर खान पर सें ना उठे (26) खाने के बाद ये दुआ पढे "अल-हम-दु लिल्लाहिल्लज़ी अत-अ-म-ना व-स-क़ाना व-ज-अ-ल-ना मिनल मुस्लिमीन"

{91} खाना खाने में भी 6 सिफ़ात हैं

(1) कलिमा : खाना खाने से पेट नहीं भरता पेट भरने वाली ज़ात अल्लाह की है ।

(2) नमाज़ : खाना खाना अल्लाह का हुकुम है अगर नबि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े और सुन्नतो पर खाये तो इबादत बनेगा ।

(3) इल्म व ज़िकर : हलाल खाये और हराम से बचे ज़िकर करते हुवे खाये ।

(4) इकरामे मुस्लिम : साथियों का इकराम करते हुवे खाये

(5) इख्लासे नियत : अल्लाह राजी होने के लिये खाये

(6) दावत व तब्लीग : खाना खाने से जितनी भी क़ुव्वत मिलती है उस क़ुव्वत से अल्लाह के रासते में चल फिर कर खूब दावत दे ।

{92} सोने के आदाब

(1) सोने से पहेले जरूरिय्यात से फ़ारिग होकर बा वजू सोवे (2) बिस्तर को तीन मरतबा झटकना सुन्नत है अगर अल्लाह के रास्ते में होतो मस्जिद के बाहर झट्के (3) मोटा बिसतर नीचे बिछाये (4) दिवार को लगाकर ना

बिछाये (5) मस्जिद में होतो सारे साथि एक बाज़ू में सोने की कोषिष करे ताके बिज्ली (करेंट) की एहेतियात हो (6) एक दूसरे को लगकर ना सोवे (7) सोने से पहेले दायें और बायें आँख में तीन मरतबा सुरमा लगाना सुन्नत है (8) सोने से पहेले "सलातुत् तौबा" के दो रकात नफ़िल नमाज़ पडे (9) सोने से पहेले अप्ने पूरे दिन का जायिज़ा लेकर मैत को याद करे (10) सोने से पहेले अलहम्द षरिफ़, आयतुल कुरसि, सुरे मुलक, सुरे सजदा, चार कुल और दरूदे षरिफ़ और तीन बार इस्तेगफ़ार पडे । तस्बिहे फ़ातिमा (सुब-हा-नल्लाह 33 मरतबा, अल-हमदु लिल्लाह 33 मरतबा और अल्लाहु अक्बर 34 मरतबा पडे) (11) सोने से पहेले सोते वक़्त कि दुअ अल्लाहुम्म बिस-मि-क अमूतु व-अह-या पडे (12) सोने से पहेले तहज्जुद पड्नेकि नियत करके सोये (13) सोते वक़्त दाये करवट पे लेट्कर और अपनि गाल के निचे दाये हाथ रककर सुन्नत तरिके पर सोजाये (14) सोते वक़्त डर जाये या नींद ना आये तो ये दुअ पडे अऊज़ु बिकलिमा-तिल्लाहित्त-ताम्माति मिन गज़-बिही व-इकाबिही व-षर्रि इबादिही व-मिन हमज़ातिष-षयातीनि व-अय-यह-ज़ुरून (15) अगर डरावना खाब नज़र आये तो तीन बार अऊज़ु बिल्लाहि मिनष-षैतानि व-षर्रि हाज़िहिर रुअइप्या पड कर बाये तरफ़ तुथकार कर करवट बदल कर सोजाये (16) रात के वक़्त मसजिद मे कुछ हाजत पेष आये तो किसि एक साथि को उटाले, अकेले ज़रुरियात के लिये ना जाये (17) सोकर उटते वक़्त ये दुअ पडे अल-हमदु लिल्लाहिल-लज़ी अह-याना बाद-

मा अमात–ना व–इलैहिन–नुषूर सोकर उट्ने के बाद अपने हाथों को ग ा तक धोले

{93} नफ़्स को क़ाबू में रखने के लिये अल्लाह के रास्ते में मुजाहदे

(1) दावत देने के लिये लोगों में चलना फिरना (2) अप्ने तक़ाजों को दबाकर साथियों के तक़ाज़ों को पूरा करना (3) दीन की मज्लिसों में जम्कर बैठ्ना (4) खिदमत में जो आये वो खालेना (5) इज्तिमाई आमाल में फ़ौरन जुड जाना

{94} दाई के सिफ़ात

(1) हुसने ईमान (2) हुसने इबादत (3) हुसने अख्लाक़ (4) हुसने मुआमला (5) हुसने मुआषरा (6) मरदुम षनासी (7) मोक़ा षनासी (8) मिज़ाज षनासी (9) दाई दावत के काम को मक़सद बनालेता है (10) दाई अप्ने जान व माल, वख्त को ज़ियादा दावत के काम के लिये लगाता है (11) दाई क़ुरबानियों में आगे बड्ता है (12) दीन के तक़ाज़ों को पूरा करने के लिये तयार रहेता है (13) फिर बाद में दुनिया के तक़ाजे पूरा करता है (14) दुनिया की खाहिषात वाली ज़िंदगी से बचता है (15) मौत के बाद की ज़िंदगी की तय्यारी करता है (16) अल्लाह के हुकुम को हुज़ूर ़सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हर तरीक़े और सुन्नतों पर अमल करता है (17) ज़ियादा से ज़ियादा नेक आमाल करने में लग जाता है (18) हर एक के हक़ को पूरा करता है (19) सिला रहेमी करता है (20) गीबत चुग्ली करने से और सुन्ने से भी बचता है (21) क़बर के अज़ाब का डर और

जहन्नम का खौफ़ दिल में रेहेता है (22) हर वक़्त अल्लाह को राजी करने की कोषिष करता है (23) गुनाहों से बुरी बातों से बुरे रासते से बुरे खयालात से बचता है ।

{95} दाई 24 घंटे वाली ज़िंदगी किस तरह गुज़ारे?

(1) रोज़ाना पांच वख्त की नमाज़ के लिये ....2-30-घंटे लगाये

(2) रोज़ाना मस्जिद वारी जमात में मेहेनत के लिये..2-30-घंटे लगाये

(3) रोज़ाना अप्ने करोबार के लिये ....8-00-घंटे लगाये

(4) रोज़ाना सोने के लिये ....6-00- घंटे लगाये

(5) रोज़ाना अपनी जरूरिय्यात के लिये ....2-00-घंटे लगाये

(6) रोज़ाना घर के काम के लिये ....1-00- घंटे लगाये

(7) रोज़ाना घर की तालीम के लिये ....0-30-मिनट लगाये

(8) रोज़ाना तस्बीहात के लिये ....0-30 –मिनट लगाये

(9) रोज़ाना कुरआन षरीफ़ की तिलावत के लिये ....0-30–मिनट लगाये

(10) रोज़ाना दीनी किताबे पढ्ने के लिये ....0-30-मिनट लगाये

Total 24-00 – घंटे

{96} दावत वाले काम के बेहेतरीन उसूल

दावत वाला अमल बहुत नाज़ुक उसूलों पर क़ायिम है ए बहुत आसान है उन लोगों के लिये जो अपनी इस्लाह चाहते है और बहुत दुष्वार है जो सिर्फ़ दूसरों की इस्लाह चाहते हैं

(1) कभी अहेले षूरा में किसी से खफ़ा ना होना चाहिये । तबीअत के खिलाफ़ ही मषोरा क्यूं ना हो (2) हमारे लिये जहाँ भी जाने का फ़ैस्ला होजाये और अमीर हुकुम करदे उस पर इन्कार ना करना (3) घर वालों से कभी खफ़ा ना होना सबर व तहम्मुल से काम लेना (4) अपनी मेहेनत को कम समझ्ना और ए खयाल तक ना आये के मै ने भी कुछ जान व माल लगायि है (5) उलमा से मुहब्बत करना और उन्के साम्ने आजिज़ी से पेष आना और उन्की खिदमत में दुआ के लिये हाज़िर होना (6) कभी तब्लीग का इल्म या ज़िकर से मुक़ाबला ना करना (7) किसी को भी हखीर ना समझ्ना (8) मुसलमानों के किसी तबक़े और किसी मस्लक के किसी फ़र्द को दावत देने से गुरेज़ ना करना (9) अप्ने काम करने वालों से हमेषा जुडे रेहेना (10) एक जगा के काम करने वाले दूसरी जगे के काम करने वालों पर एतेराज़ ना करे (11) पुराने साथियों को साथ लेकर मषोरा करके काम करे (12) बेहेतरीन षख्ष वो है जो अप्ने हर एक को हिक्मते अमली और अच्छे अख्लाक़ के साथ जोडे रख्खे (13) काम के पुरानों में षैतान उसूलों के एतेबार से दुष्मनी पैदा करता है हालांके सब से बडा उसूल आपस में जोड है (14) और हर एक

को नफ़ा पहुंचाये चाहे मुवाफ़िक़ हो या मुखालिफ़ अमीर हो या गरीब (15) हम सब कच्चे हैं पोख्ता वो है जो मौत तक इस काम में लगे रहे खाह उन की क़दर करे या ना करे उनसे अच्छा गुमान रख्खे या ना रख्खे खाह-काम के ज़िम्मेदार बुज़रुग भी उस्से बद गुमान होजाये मगर वो किसी से भी बद गुमान ना हो खाह वो सब उस्को छोड़दें लेकिन वो किसी को ना छोडे

{97} तालिबे इल्म किस तरह रहे?

(1) हर हाल में सुन्नतों का पाबंद रहे (2) अपनी स्कूल या कालेज की लड़कीयों से मेल जोल ना रख्खे (3) अपनि स्कुल या कालेज के पास नमाज़ का वक़्त हुवा तो नमाज़ अदा करे और अगर होसके तो गष्त करके साथीयों को जोड कर दीन की बात चलाये (4) अपनि स्कुल या कालेज के साथीयों से दोस्ती करके दीन की फ़िकर दिलाये और तष्कील करके छुट्टीयों में अल्लाह के रास्ते में निकले (5) पडायि के वख्त पडायि करे बाक़ि अवक़ात में घर का और दीन का काम करे (6) बे दीनी मजालिस से बचे (7) अपनि सलाहियतों को दावत के काम में लगाये ।

{98} अल्लाह को बंदों के 3 चीज़ें पसंद हैं

(1) अल्लाह की राह में जान और माल को खर्च करना (2) गुनाहों पर नदामत के वख्त रोना (3) फ़ाक़ों पर सबर करना ।

{99} क़ियामत के दिन अल्लाह के अर्ष के साये में रहेने वाले 7 क़िसम के लोग

(1) आदिल बादुषा (2) वो जवान जो जवानी में

अल्लाह की इबादत करता हो (3) वो षख्स जिस्का दिल हर वख्त मस्जीद में लगा रहेता हो (4) जो अलाह तआला के लिये मुहब्बत रख्ते हों इन्के मिल्ने और जुदा होने की बुनियाद यही हो (5) वो षख्स जिस्को कोई ऊन्चे खान्दान वाली हसीन औरत अप्नि तरफ़ मु-त-वज्जे करे और वो कहेदे के मै तो अल्लाह तआला से डरता हुं (6) वो षख्स जो इस तरह छुपाकर सदक़ा करे के बायें हाथ को क़बर ना हो के दाहिने हाथ ने क्या खर्च किया है (7) वो षख्स जो अल्लाह का ज़िकर तनहायि में करे और आन्सू बेहेने लगे

{100} अल्लाह तअला को 5 क़िसम के आदमीयों से नफ़रत है

(1) मालदार होकर दुसरों पर ज़ुल्म करने वाला (2) भिक मांग्ता हुवा फ़खर करने वाला (3) जियादा खाकर बदहज़्मी से तडपने वाला (4) वो बूढा आदमी जो बुढापे में ज़िना करने वाला (5) ऐहेसान करके जतलाने वाला ।

{101} अल्लाह तआला क़ियामत के दिन 3 षख्सों को रहेमत की निगाह से ना देखेंगे

(1) झुटी खस्में खाकर सौदा करने वाला (2) एहेसान करके एहेसान जतलाने वाला (3) टख्नों के नीचे तक कपडा लट्काने वाला

{102} अल्लाह तआला 3 षख्सों पर लानत बेजते हैं

(1) उस षख्स पर जिस्से नमाज़ी मुक़्तदी षरई एतेबार से किसी माक़ुल की वज़े से नाराज़ हो और वो इमामत करे (2) उस औरत पर जिस्का खाविंद उस्से

नाराज़ हो (3) उस षख्स पर जो अज़ान की आवाज़ सुने और जमाअत में षरीक ना हो ।

{103} <u>जिस षख्स में 3 बातें हों अल्लाह तआला उस्का हिसाब आसान करके अप्नी रहेमत से जन्नत में दाखिल करेंगे</u>

(1) जो तुझे अप्ने एहेसान से मेहेरुम रख्खे तु उस पर एहेसान करे (2) जो षख्स तुझ से खता रहेमी करे तु सिला रहेमि करे (3) जो तुम पर जुल्म करे तु उस्को माफ करदे ।

{104} <u>ईमान के दरजे</u>

(1) अगर किसी नाजायिज़ काम को होते हुवे देखे तो हाथ से रोकना (2) अगर ना होसके तो ज़बान से रोकना (3) अगर ये भि ना होसके तो दिल से उस्को बुरा समझना और ए ईमान का आखिरी दर्जा है ।

{105} <u>ईमान की हलावत 3 चीज़ों से है</u>

(1) अल्लाह और उस्के रसूल सल्लेल्लाहु अलेहि वसल्लम की मुहब्बत इन मासिवा (इलावा) सब से जियादा हो (2) जिस किसी से मुहब्बत करे अल्लाह ही के वास्ते करे (3) कुफ़र की तरफ़ लोट्ना उस्को ऐसा ही गिराँ और मुष्किल हो जैसा के आग में गिरना ।

{106} <u>हुज़ूर स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नसीहतें</u>

हज़रत अनस बिन मालिक रजि॥ फ़रमाते हैं के मै 8 साल की उमर से रसूल स़ोलल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में रहा सब से पहेले आपने ए नसीहत की (1) अनस ठिक से वज़ू किया करो उमर में बरकत होगि और

मुहाफिज़ फ़रिष्ते तुम से मुहब्बत करने लगेंगे (2) गुसुले जनाबत में जल्दी किया करो और बदन पर बाल के बराबर जगे बी सुखी ना रहेने दो (3) चाष्त की नमाज़ ज़रूर पडा करो ए तौबा करने वालों की नमाज़ है (4) रात दिन खूब नमाज़ पडा करो फ़रिष्ते तुमारे लिये दुआ करेंगे (5) नमाज़ के अरकान ठिक से अदा किया करो ऐसि नमाज़ अल्लाह को पसंद है और उस्को खुबुल फरमाता है (6) हर वख्त वज़ु मे रहेने की आदत डालो इस्से मौत के वख्त कलिमए षहादत याद आना नहीं बुलेंगे (7) घर में दाखिल होते वख्त घर वालों को सलाम करो (चाहे घर में कोई रहे या ना रहे) इस्से घर में बरकत होगी (8) रासते में जो मुसल्मान भि मिले उसे सलाम करो इस से ईमान की हलावत नसीब होगी और उस रासते के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे (9) एक लमहे के लिये भी किसी मुसल्मान से कीना या हसद ना रख्खो (10) जिस्ने मेरा तरिक़ा अपनाया उसने मुझ से मुहब्बत की जिसने मुझ से मुहब्बत की वो मेरे साथ जन्नत में होगा अनस रजि॥ तुम मेरे नसीहतों पर अमल करो तो मौत तुम्को महेबुब बन जायेगी तुमारे लिये अगर मौत में राहत पोषिदा होगि ।

{107} हुज़ूर स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरषाद :– रोज़ना आस्मान से 5 फ़रिष्ते एलान करते हैं

हज़रत फ़कीह रहे॥ फ़रमाते हैं मेरे वालीद मुझ से रसूल स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरषाद बयान किया है के रोज़ाना आस्मान से 5 फ़रिष्ते नाज़िल होकर एलान करते हैं

(1) पहेला फ़रिष्ता एलान करता है :- जो अल्लाह के फ़राइज़ को तरक करेगा वो अल्लाह की रहेमत से निकल जायेगा

(2) दुसरा फ़रिष्ता एलान करता है :- जो रसूल स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों को छोडेगा वो उन्कि. षफाअत से मेहेरुम रहेगा

(3) तिस्रा फ़रिष्ता एलान करता है :- जो हराम रोज़ी कमायेगा ऊस्के तमाम आमाल ठुकरा दिये जायेंगे

(4) चौथा फ़रिष्ता मुरदों की तरफ़ रुख होकर फ़रमाता है :- अय कबर वालो तुम्को किस बात का गम है और तुम्को किस बात की षरमिन्दगी है मुरदे कहेते हैं हमे षरमिन्दगी इस बात पर है के हमने अप्नी उमरों को बेकार किया और आखिरत की तय्यारी ना कि और गम इस पर है जो अभी जिंदा हैं उन्को इबादत,क़ुरआन की तिलावत, ज़िकर, दरुद और आमाल का मोका है जो आमाल से आज हम मेहेरुम होगाये

(5) पांच्वा फ़रिष्ता एलान करता है :- अय लोगों हम्ने तुम को षोख दिलाया है लेकिन तुम जन्नत के मुष्तक़ ना बने हम्ने तुम को डराया लेकिन तुम जहन्नम से और अल्लाह के गुस्से से ना डरे जो अल्लाह के गुस्से से डरे उसे अप्ने गुनाह से तौबा करना चाहिये अगर दुनिया में अल्लाह के गुस्से से डरने वाले, छोटे मासूम बच्चे, चरने वाले जान्वर, इबादत गुज़ार बुढे ना होते तो तुम पर अज़ाब नाज़िल होजाता

{108} हज़रत ऊमर रजि॥ की 6 नसीहतें

(1) जो आदमी जियादा हसता है उस्का रोअब कम हों जाता है (2) जो मज़ाक़ जियादा करता है लोग उस्को हलका और बे हैसीयत समझ्ते हैं (3) जो बातें जियादा करता है उस्की लगज़िषें जियादा होजाती हैं (4) जिस्की लगजिषें जियादा होजाती हैं उस्की हया कम होजाती है (5) जिस्की हया कम हो जाति है उस्की परेहेज़ गारी कम होजाती है (6) जिस्की परेहेज़ गारी कम होजाती है उस्का दिल मुरदा होजाता है ।

{109} 3 चीज़ें 3 चीज़ों पर गालिब होजाती है

(1) रस्मों पर सुन्नतें गालिब होजाती हैं (2) अस्बाब पर आमाल गालिब होजाते हैं (3) दुनिया पर आखिरत गालिब होजाती हैं

{110} जिस षख्स को 4 चीज़ें मिल जायें उस्को दीन व दुनिया की भलायि मिलजाती है

(1) वो ज़बान जो षुकर करने वाली हो (2) वो दिल जो ज़िकर में मषगूल रहेता हो (3) वो बदन जो मषक़्क़त बरदाष्त करने वाला हो (4) वो बीवी जो नफ्स में और खाविंद के माल में खियानत ना करे ।

{111} दुनिया से उस वख्त तक मेहेफ़ूज़ नहि रहे सकते जब तक तुम में 4 चीज़ें ना हों

(1) लोगों के जहालत से दर गुज़र करते रहो (2) खुद उस्के साथ कोई जहालत कि हर्कत ना हो (3) तुमारे पास जो चीज़ हो लोगों पर खर्च करदो (4) लोगों के पास जो चीज़ हो उस्की उम्मिद ना रख्खो ।

{112} क़ियामत के दिन 3 अदालतें

(1) काफ़िरों के लिये कोई बखषिष नहिं (2) हुक़ुक़ुल इबाद (बंदों के हुक़ूक़) कि इस में हक़ वाले का हक़ ज़रूर दिलाया जायेगा चाहे इस्से लिया जाये जिस्के ज़िम्मे है या उस्को माफ़ फ़रमाने की मर्ज़ी हो तो अप्ने पास से दिया जायेगा (3) अल्लाह तआला के अप्ने हुक़ूक़ की है इस्मे बखषिष के दरवाज़े खोल दिये जायेंगे

{113} बद बखति की 4 अलामतें

हज़रत अनस रजि॥ हुज़ूर स़ोल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरषाद नक़ल करते हैं के 4 चीज़ें बद बख्ती की अलामते हैं (1) आँखों का खुष्क होना (के अल्लाह के खौफ़ से किसी वक्त बी आँसू ना टपके) (2) दिल का सख्त होना (के अप्नी आखिरत के लिये या किसी दुसरे के लिये किसी वक्त भी नरम ना पढे) (3) आरज़ुवों का लंबा होना (4) दुनिया की हिर्स ।

{114} 4 चीज़ें आदमी के दिल को बरबाद कर देति हैं

हदीसे पाक का मफ़हुम है के 4 चीज़ें आदमी के दिल को बरबाद कर्देति है (1) अहमक़ों से मुक़बिला (2) गुनाहों की कसरत (3) औरतों के साथ कसरते इख्तेलात (यानी मेल मिलाप) (4) मुर्दा लोगों के पास कसरत से बैठ्ना (मुर्दा लोगों से मुराद वो मालदार जिस्के अन्दर माल की अकड हो ।

{115} सहबाह रजि॥ का 4 चीज़ों से बहुत एहतियात और 5 चीज़ों पर मषगूली

बाज़ उलमा ने कहा है के सहाबा किराम रजि॥ 4 चीज़ों से बहुत एहेतियात करते थे (1) इमामत करने से (उस वख्त में जो बेहेतरीन इमामत करने वाला होता उसी को आगे बढाते थे) (2) वसी बन्ने से (यानी किसी कि वसीय्यत में माल वगैरा तक़सीम करने से) (3) अमानत रखने से (4) फ़तवा देने से

और इन्का खुसूसी मषगला 5 चीज़ें थीं (1) क़ुरआन की तिलावत (2) मसाजिद का आबाद करना (3) अल्लाह तआला का ज़िकर (4) अच्छी बातों की नसीहत (5) बुरी बातों से रोकना

{116} हिक्मत को पाने के लिये 4 चीज़ें

(1) अल्लह का खौफ़ (2) बात में सच्चायि (3) अमानत को पूरा पुरा अदा करना (4) बे फ़ायिदा बात से सुकूत (खामुषी)

{117} सोने की एक तख्ती थी जिस में 7 सतरें लिख्खी हुयि थीं

हफ़िज़ इब्नें हज़र रहे॥ ने मुनब्बिहात में लिख्खा है के हज़रत उस्मान रजि॥ से क़ुरआने पाक का इरषाद "व-क़ा-न तह-तहू कन-ज़ुल लहूमा" मे मनक़ुल है कें वो सोने की एक तख्ती थी जीस्में 7 सतरे लिख्खी हुयि थीं जिस्का तरजुमा ए है के (1) मुझे तअज्जुब है उस षख्स पर जो मौत को जानता हो फिर भी हसे (2)

मुझे तअज्जुब है उस षख्स पर जो ये जानता है के दुनिया आखिर एक दिन खतम होने वाली है फिर भी उस में रगबत (षोक़) करे (3) मुझे तअज्जुब है उस षख्स पर जो ए जानता हो के हर चीज़ मुक़द्दर से है फिर भी किसी चीज़ के जाते रहेने पर अफ़सोस करे (4) मुझे तअज्जुब है उस षख्स पर जिस्को आखिरत में हिसाब का यक़ीन हो फिर भी माल जमा करे (5) मुझे तअज्जुब है उस षख्स पर जिस्को जहन्नम की आग का इल्म हो फिर भी गुनह करे (6) मुझे तअज्जुब है उस षख्स पर जो अल्लाह को जानता हो फिर किसि और चीज़ का ज़िकर करे (7) मुझे तअज्जुब है उस षख्स पर जिस्को जन्नत की खबर हो फिर दुनिया में किसी चीज़ से राहत पाये।

बाज़ नुसखों में ए भी है के मुझे तअज्जुब है उस षख्स पर जो षैतान को दुष्मन सम्झे फिर भी उस्की इताअत करे।

{118} षेख अब्दुल क़ादिर जिलानी महेबुबे सुबहानी रहे॥ का फ़रमान

षेख अब्दुल क़ादिर जिलनी महेबुबे सुबहानी रहे॥ का फ़रमान है के जब तक अप्ने नफ्स पर इन बातों को फ़रज़ ना करे उस्कि परहेज़ गारी मुकम्मल नहीं हुवी (1) ज़बान को गीबत से पाक रख्खे (2) बद गुमानी से परहेज़ करे (3) हसी मज़ाक़ से परहेज़ करे (4) हराम देख्ने से आँखों को बंद करे (5) ज़बान से सच्ची बात करे (6) अल्लाह का एहेसान माने अप्ने नफ्स को अच्छा ना सम्झे इस पर भरोसा ना करे (7) अप्ने माल को उस्के हक़दार पर खर्च

करे (8) बुलंद मर्तबा और बुज़रुगी की ख्वाहिष अप्ने लिये ना करे (9) आम मुसल्मानों से मिल जुल कर रहे

{119} हज़रत सुफ्यान सूरी रहे॥ का फ़रमान 10 आदमी ज़ालिम कहेलायेंगे

(1) वो आदमी जो रोज़ाना क़ुरआन षरीफ़ कि 100 आयतें तिलावत ना करे (2) वो षख्स जो अप्ने लिये दुआ करे वालिदैन और दुसरे मुसल्मानों को भूल जाये (3) वो षख्स जो खबरस्तान से गुज़रे और मुरदों को सलाम ना करे और उन्के लिये दुआये मगफ़िरत ना करे (4) वो नौजवान जो दीन के आदाब दीन का इल्म हसिल ना करे (5) वो षख्स जो मस्जीद में जाये और कम अज़ कम 2 रकात नमाज़ पढे बगैर निकल जाये (6) वो षख्स जो जुमा के रोज़ षेहेर में आये और जुमा की नमाज़ पढे बगैर चले जाये (7) वो दो षख्स जो आपस में अल्लाह के लिये मुहब्बत रख्तेहों लेकिन एक दुसरे का नाम मालुम ना करे (8) वो षख्स जिन्के मोहल्ले में कोई आलिम आये और मोहल्ले का कोई षख्स भी उस आलिम के पास दीन की बात हसिल करने के लिये ना जाये (9) वो षख्स जिस्को खाने के लिये बुलाये और वो ना जाये (क़ुबुल करे उस दावत को ब–षर्त एके वो दावत हलाल हो) (10) वो षख्स जो पेट भर खाये लेकिन उस्का पडोसी भूका रहे

अल्लाह तआला हम सब की हिफाज़त करे दीन पर सही चल्ने की तौफ़ीक़ दे (आमीन)

{120} हज़रत षेक षाह मक्की रहे॥ का फ़रमान : इनसान को 5 तरह से लूट लेते हैं

(1) इनसान के ईमान को षैतान लूट लेता है (2) इनसान की जान को इज़राईल अलैहिस्सलाम लूट लेते हैं (3) इनसान की जाइदाद को उस्के वरिस लूट लेते है (4) इनसान के जिसम को चम्डे और गोष्त को क़बर की मट्टी कीडे लूट लेते है (5) इनसान की नेकियों को क़ियामत के दिन हक़ वले आकर लूट्ट लेते हैं

{121} 5 चीज़ों को गनीमत सम्झो 5 चीज़ें आने से पहेले

(1) जिंदगी को गनीमत सम्झो – मौत आने से पहेले (2) सेहेत को गनीमत सम्झो – बीमारी आने से पहेले (3) जवानी को गनीमत सम्झो – बुढापा आने से पहेले (4) माल को गनीमत सम्झो फ़क़ीरी आने से पहेले (5) फ़ुरसत को गनीमत सम्झो मषगूल होने से पहेले

{122} हज़रत हसन रजि॥ की नसीहतें

(1) जिस काम का दुसरों को हुकुम करो पहेले खुद उस पर अमल करो (2) जिस बात से दुसरों को मना क़रो पहेले खुद उस्से रुक जावो (3) तुमारा क़दम तुमरे लिये नाफे है (के जन्नत की तरफ़ पड्ता है) या मुज़िर (के जहन्नम की तरफ़ चल्ता है)

{123} अंधेरे 5 और उस्के चिराग 5

हाफ़िज़ इबने हज़र रहे॥ ने मुनब्बिहात में हज़रत अबु बकर सिद्दिक़ रजि॥ से नक़ल किया है के अंधेरे 5

तरह के हैं और 5 ही उन्के लिये चिराग हैं (1) दुनिया की मुहब्बत अंधेरा है जिस्का चिराग तक़वा है (2) गुनाह अंधेरा है जिस्का चिराग तौबा है (3) क़बर अंधेरा है जिस्का चिराग ला-इला-ह इल्लल्लाहु मुहंम्मदुर रसूलुल्लाह स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है (4) आखिरत अंधेरा है जिस्का चिराग नेक आमाल है (5) पुल सिरात अंधेरा है जिस्का चिराग यक़ीन है

{124} रोना 7 वजे से आता है

(1) खुषी से (2) जुनून से (3) दर्द से (4) घबराहट से (5) दिखलावे से (6) नषे से (7) अल्लाह के खौफ़ से

{125} हज़रत मौलाना इल्यास साब रहे॥ का फ़रमान

हज़रत मौलाना इल्यास साब रहे॥ का फ़रमान है के अगर एक साथी में भि दुनिया की मुहब्बत आगयि तो पूरे काम का बेडा गरक़ हो-सकता है तब्लीग जमाअत में निकल्ने का मक़सद सिर्फ़ दुसरे को पहुंचाना और बताना ही नहीं है बलके इस्के ज़रिये अप्नी इस्लाह व तरबीयत मक़सूद है ।

{126} हज़रत मौलाना युसुफ़ साब रहे॥ का फ़रमान :- अल्लाह तआला 5 चिज़ों को 5 जगे छुपा कर रख्खा है

(1) हीरों (DIAMONDS) को पथ्थरों में छुपा कर रख्खा है (2) वलियों को इन्सानों में छुपा कर रख्खा है (3) नेकियों को सवाब में छुपा कर रख्खा है (4) इस्मे आज़म को कुरआन में छुपा कर रख्खा है (5) हिदायत को अल्लाह के रास्ते में छुपा कर रख्खा है

{127} हज़रत मौलाना साद साहब कांधल्वी का फ़रमान

ईमान की हक़ीक़त आयेगी ज़ाहिर के खिलाफ़ बोलने से ज़ाहिर के खिलाफ़ सोच्ने से ज़ाहिर के खिलाफ़ सुन्ने से और ज़ाहिर के खिलाफ़ चल्ने से जब तक मेरे दोसतो उम्मत के अंदर ए बातें आम ना होगीं उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त के मिलने कि इबतेदा भी ना होगी

{128} हज़रत मौलाना ऊमर पालन पूरी रहे॥ का फ़रमान 4 षख्स आखिरत में हिलाक होजायेंगे

(1) जो कमज़ोर बुढा कमज़ोरों को नसीहत करता है के खूब पैसे कमावो (2) जब दीन व दुनिया का तक़ज़ा आये तो दुनिया को तरजीह देने वाला (3) दुनिया की गर्ज़ से दीन की मेहेनत करने वाला (4) दुनिया का हामिल (दुनिया की खातीर तरह तरह की मुसीबतें बरदाष्त करने वाला)

{129} हज़रत मौलाना इनआमुल हसन साब रहे॥ का फ़रमान

जो लोग इस दावत वाले काम के ज़िम्मेदार सम्झे जाते हैं उन्को दुनिया की ठोकरों में नहीं उलजना है बलके झेलना और आगे बढना है क़ुरबानी की मिक़दार को बढाते रहेना है और अप्ने को और अप्ने किये हुवे काम को मुखतसर समझ कर खुदा की बारगाह में माफ़ी मंगते रहे

{130} हज़रत मौलाना सईद अह्मद खान साब रहे॥ का फ़रमान इस्तेक़ामत के 17 असबाब

(1) जो इस काम को दिल के यक़ीन के साथ

करेगा वो जमेगा (2) जो रोज़ाना दावत देगा इस्के जज़बात बन्ते रहेंगे जो दावत नहीं देगा उस्के जज़बात टूटते रहेंगे (3) जो महोल में रहेगा वो जमेगा जो माहोल से हटेगा वो कट जायेगा (4) जो इस काम में रोक डालेगा वो कटेगा (5) अमीर की इताअत और मषुरे का पाबंद रहेने वाला जमेगा (6) जो किसी के ऐब देखेगा वो कटेगा जो अच्छाइयाँ देखेगा वो जमेगा (7) जो तवाज़ु इख्तियार करेगा वो जमेगा तकब्बुर के साथ चल्ने वाला नहीं जम सकेगा (8) बाज़ गुनाह ऐसे होते हैं जिन्कि वजे से काम से मेहेरुम होजाता है (गीबत, अगराज़, तनक़ीद, बद नज़री षोहरत) (9) जो नदामत तौबा इस्तेगफ़ार के साथ चलेगा वो ज़मेगा (10) जो दुसरों की गल्ती अप्ने ऊपर लेगा वो जमेगा जो दुसरों पर डालेगा वो नहीं जमेगा (11) हुज़ूर स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मुनाफ़िक़ चल्ते थे नफ़ा नहीं उटासके हत्ता के ईमान भी नसीब नहीं हुवा (12) जो दुसरों की गलत बात की तावील करेंगे अच्छे मानी मतलब की तरफ़ लेजायेगा वो जमेगा जो हर बात का उल्टा मतलब लेगा वो नहीं जमेगा (13) जो आदमी अल्लाह पाक से डरते और मांगते हुवे चलेगा वो जमेगा जमने के लिये मांगना पढेगा वर्ना हट जायेगा हुज़ूर स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी इस्तेक़ामत की दुआ मंगते थे हज़रत इबराहीम अलैहि वस्सलाम ने भी दुआ मांगी के अय अल्लाह मुझे बुत परस्ती से बचा हलाँके उन्से बुत परस्ती का इम्कान भी ना था इन्हों ने मांगा तो हम क्या

चीज़ हैं (14) जो इख्लास से क़ुरबानी देगा अल्लाह उसे हर हालत मे जमायेगा ऐसे मोक़ों पर जब लोगों के क़दम दीन से उखड रहे होंगे अल्लाह तआला आला दरज़े की रज़ा नसीब फ़र्मायेगा (15) जो ए कहेगा मेरी वजे से काम होरहा है वो मेहेरूम होजायेगा जिस्के मुतअल्लिक़ लोग ए सम्झेंगे उस्की वजे से काम होरहा है अल्लाह उसे उठालेंगे (यानि दूनिया से लेलेंगे) (16) हज़रत जी रहे॥ फ़रमाया करते थे जो नक़ल पर अक्डेगा वो असल पर कैसे जमेगा हम तो नक़ल करने वाले हैं (17) जो पूरी उम्मत के गम को लेके चलेगा उस्के क़लब की कैफ़ियत को अल्लाह पुरे आलम पर डालेंगे

{131} हज़रत अहेमद लाट साब का फ़रमान : नेहेज़े नबुव्वत का काम करने के लिये 5 सिफात

(1) तवक्कुल (2) सादगी (3) क़ुरबानी (4) उमूमिय्यत (5) जितना भी काम करे आगे के काम को देखे

{132} हज़रत मौलाना फ़ारूक़ साब का फ़रमान 5 बातें जिस्से दिल जुड जाते हैं

(1) सलम करने से (2) इकराम करने से (3) हदिया देने से (4) नाम लेकर दुआ करने से (5) पीठ पिछे तारिफ़ करने से ।

{133} हज़रत अब्दुल वह्हाब साब का फ़रमान: 5 बातें जिन से कभी भी तोड पैदा नहीं होगा

(1) साथियों की इस्लाह मे मत पडो (2) साथियों को उसूलों पर लानेकी फ़िकर मे मत पडो (3) साथियों

की खिदमत करो (4) साथियों का इकराम करो (5) सब से अहेम बात ये है के खुद उसूलों पर जमे रहो।

{134} हीरा और उस्का चोर

(1) ईमान एक हिरा है – उस्का चोर झूट है (2) नमाज़ एक हीरा है –उस्का चोर सुस्ती है (3) इल्म एक हिरा है – उस्का चोर तकब्बुर है (4) ज़िकर एक हीरा है – उस्का चोर गफ़लत है (5) इकराम एक हीरा है – उस्का चोर गीबत है (6) इख्लास एक हीरा है – उस्का चोर रिया कारी है (7) दीन की मेहेनत एक हिरा है – उस्का चोर बे फ़िकरी है (बे फ़िकरी उम्मत की मौत है)

{135} चंद चीज़ें चंद चीज़ों को बर बाद कर देती हैं

(1) गीबत:–नेकी को बरबाद करदेती है (2)तकब्बुर:–आमाल को बरबाद करदेती है (3) आवारगी :– आखलाक़ को बर बाद करदेती है (4) झुट :– सच्चाई को बर बाद करदेती है (5) बे हयायि :– हया को बर बाद करदेती है (6) आपस में तोड :– जोड को बर बाद करदेती है (7) दुनिया की मुहब्बत :– आखिरत को बर बाद करदेती है

{136} खास करके बेदीनी की तरफ़ माइल करने वाली 2 चीज़ें

(1) माल :– माल कमाने को मक़सद बना लेने वाला इन्सान बेदीनी की तरफ़ माइल होता है

(2) औरत :– औरतो की ख्वाहिष के वजेसे से इन्सान बेदीनी की तरफ़ माइल होता है

{137} अस्बाब एक ज़रिया है – अल्लाह के हुकुम से सब कुछ होता है

(1) जमीन एक ज़रिया है – अल्लाह के हुकुम से रोजी मिलती है

(2) सूरज एक ज़रिया है – अल्लाह के हुकुम से रोष्नि मिलती है

(3) आस्माऩ एक ज़रिया है – अल्लाह के हुकुम से साया मिलता है

(4) बादल एक ज़रिया है – अल्लाह के हुकुम से बारीष मिलती है

(5) माँ का पेट एक ज़रिया है – अल्लाह के हुकुम से इन्सान पैदा होता है

(6) दवा (Tablet) एक ज़रिया है – अल्लाह के हुकुम से षिफा मिलती है

(7) विटामिन एक ज़रिया है – अल्लाह के हुकुम से क़ुव्वत मिलती है

(8) आँख एक ज़रिया है – अल्लाह के हुकुम से बिनायि (देखने की ताक़त) मिलती है

(9) कान एक ज़रिया है – अल्लाह के हुकुम से आवाज़ पहुंचति है

(10) नाक एक ज़रिया है – अल्लाह के हुकुम से खुषबू पहुंच्ती है

(11) दमाग एक ज़रिया है – अल्लाह के हुकुम से ज़ेहेन बन्ता है

(12) कारोबार नौकरी एक ज़रिया है – अल्लाह के

हुकुम से माल मिलता है

(13) जिसम में रूह एक ज़रिया है – अल्लाह के हुकुम से जिसम काम करता है

(14) मौत एक ज़रिया है – अल्लाह के हुकुम से ज़िंदगी खतम होती है

अल्लह तआला इन अस्बाब के बगैर भी सब कुछ कर सक़्ता है अल्लह तआला हम सब को इन बातों पर सच्चा यक़ीन नसीब फ़रमाये

{138} हलाल जान्वरों में 7 चीज़ें हराम हैं

(1) बेहेता हुवा खून (2) मुज़क्कर की पीषाब गाह (3) खस्यतैन (4) मुअन्नस की पिषाब गाह (5) गदूद (जिसम के अंदर की घाट को कहेते हैं (6) मसाना (वो थैली जिस्में पिषाब रहेता है और पेट में होती है) (7) पित्ता

{139} माँ बाप का दरजा

माँ बाप की रज़ामन्दी में अल्लाह की रज़ामन्दी है माँ बाप के सामने ऊंची आवाज़ से बातं ना करे यहँ तक के उफ़ भी ना कहे अगर माँ बाप काफ़िर होतो भी उन्के साथ अच्छा सुलूक करे माँ बाप अल्लाह के हुकुम के खिलाफ़ कोई बात कहे तो ना मान्ना

हदीसे पाक के मफ़्हूम में है के एक मरतबा माँ बाप को मुहब्बत भरी निगाह से देखोगे तो एक नफ़िल हज और उमरे का सवाब मिलेगा इसी तरह जितनि मरतबा देखेगा उतने नफ़िल हज और उमरे का सवाब मिल्ता है और एक हदीसे पक के मफ़्हूम में है के माँ बाप के लिये खर्च करनं अल्लाह के रास्ते में खर्च करने

से भी जियादा सवाब मिल्ता है। यानि अल्लाह के रास्ते मे खर्च करके इमान और आमाल को बनाना भि ज़रुरि है

{140} निकाह करने का तरिक़ा

(1) निकाह इस लिये किया जाये के हुज़ूर सोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है इस पर सवाब मिल्ता है (2) निकाह के लिये नेक और सालेह फ़र्द को तलाष करना और मंग्नी या पैगाम भेजना मसनून है (3) जुमा के दिन मस्जीद में और षव्वाल के महीने में निकाह करना पसंदिदा और मसनून है (4) निकाह को मषहुर करना और निकाह के बाद छुवारे या खजूर लुटाना या तख्सीम करना सुन्नत है (5) निकाह में जितना खर्च कम होगा उतना ही उन्की जिनदगि में बरकत होगी यानी निकाह में साद्गी हो (6) षादी की पहेली रात जब बीवी से तनहायि होतो बीवी की पेषानी के उपर के बाल पकड कर ये दुआ पढे : अल्लाहुम्म इन्नी अस–अलु–क खै-र–हा व–खै–र मा–ज–बल–त–हा अलैहि व–अऊज़ु बि–क मिन–षर्रिहा व–षर्रि मा ज–बल–तहा अलैह

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ خَیْرَھَا وَخَیْرَ مَا جَبَلْتَھَا عَلَیْہِ وَاَعُوْذُ

بِکَ مِنْ شَرِّھَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَھَا عَلَیْہِ

तरजुमा :– अय अल्लाह मै तुझ से इस्की भलायि और इस्की आदात व अख्लाक़ की भलायि का सवाल करता हुं और इस्के षर से और इस्के अख्लाक़ व आदात के षर से तेरी पनाह चाहता हुं (मिष्कात अन अबी दावूद व इब्ने माजा) (7) जब बीवी से सोहबत का इरादा करे तो ए दुआ

पढे : बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म जन्निब–नषैता–न व जन्नि–बिष–षै–ता–न मा–रज़क़–तना

بِسۡمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبۡنَا الشَّيۡطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيۡطَانَ مَارَزَقۡتَنَا

तरजुमा :– मै अल्लाह का नाम लेकर ये काम करता हुं अय अल्लाह हमे षैतान से बचा और जो औलाद तू हमको दे उस्से (भी) षैतान को दूर रख (बुखारी व मुस्लीम) (8) जब बिवी से सोहबत करने में मनी निकले तो दिल मे ये दुआ पढे : अल्लाहुम्म ला–तज–अल लिष्षैतानि फ़ीमा रज़क़–तनी नसीबा

اَللّٰهُمَّ لَاتَجۡعَلۡ لِلشَّيۡطٰنِ فِيۡمَارَزَقۡتَنِىۡ نَصِيۡبًا

तरजुमा :– अय अल्लाह जो औलाद तू हमको दे उस्मे षैतान का हिस्सा न–रख (9) निकाह के वक़्त दुलह दुलहन से मिलने के वक़्त दुआवों का एहेतेमाम करने से औलाद नेक और सालेह पैदा होगी (औलद को दीनदार और दावत के काम मे लगाये वरना माँ बाप औलाद की खिदमत से मेहेरुम होंगे)

{141} मोबैल (Mobile) फ़ोन के मसाइल

(1) मोबैल के रिंग टौन (Ring tone) मे क़ुरआने पाक की आयत या अज़ान की आवाज़ को इस्तेमाल करना इन कलिमात की तौहीन है (2) मोबैल के रिंग टौन मे म्यूज़िक (Music) और गाना लगना हरगीज़ जाइज़ नहीं सख्त गुनाह है (3) मोबैल मे गेमस (Games) खेल्ना ए लायनी काम है (4) मोबैल स्क्रीन (Screen) पर दीनी अल्फ़ाज़ (मसलन अल्लाह

और हुज़ूर स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम वगैरा) को रख लेकर पेषब या पाखाना को जानेसे बेआदबी होती है (5) मोबैल के ज़रिये तस्वीर खींचना (उतारना) और मेहेफ़ूज़ करना उलमा के नज़्दीक ना जाइज़ है (6) नमाज़ षुरु करने से पहेले मोबैल को बंद (Switch off) करदेना ज़रूरी है नमाज़ से पहेले मोबैल बंद करना भुल गया और नमाज़ में रिंग टोन कि अवाज़ आये तो नमाज़ तोडकर बंदकरे यानी अमले कसीर की वजे से नमाज़ टूट जायेगी इस लिये नमाज़ को षुरु से अदा करे (जदीद फत्वा दारुल उलूम-देव बंद)

{142} हुज़ूर स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चंद सुन्नतें

(1) हुज़ूर स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सफ़ेद रंग का कपडा पसंद था (2) क़मीस कुरता या सदरी वगैरा पेहेने तो पहेले दायाँ हाथ आस्तीन मे डाले फिर बायाँ हथ डाले (3) पैजामा षल्वार या लुंगी टखनों से ऊपर रखना सुन्नत है (4) अमामा के निचे टोपि रख्ना सुन्नत है (5) हुज़ूर स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमामा तीन रंगों का था सफ़ेद, काला, हरा, (6) नबी करीम स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर मुबारक के बालों की लंबायि कानों के दरमियान तक और दुसरी रिवायत के मुताबिक कानों तक और एक रिवायत के मुताबिक कानों की लौ तक थी इस्के अलावा कंधों तक या कंधों के क़रीब तक होने की भी रिवायत है (7) सारे

सर के बाल मुंड्वा देना भी सुन्नत है (8) दाढी को बढाना और मूंछ कट्वाना सुन्नत है (9) ज़ेर नाफ़, बगल और नाक के बाल निकाल लेना अगर चालीस रोज़ गुज़र जायें और सफ़ायि ना करे तो गुनेहगार होगा (10) जब आप स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छींक आयि तो हाथ या कपडा मूँह पर रख लेते और आवाज़ को पस्त (आहिस्ता) फ़रमाते (11) जब कोई बच्चे या बडे मिल्ते तो पहेले आप स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सलाम करते (12) आप स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बरतावु में सख्ती ना फ़रमाते नरमी क़ो पसंद फ़रमाते (13) आप जब चल्ते तो निगाह नीचे ज़मीन की तरफ़ रख्ते मज्मे के साथ चल्ते तो सब से पिछे होते (14) हुज़ूर स़ोल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ज़र की नमाज़ के बाद इषराक़ तक मुरब्बा (आल्ती पाल्ती) बैठ्ते थे ।

{143} षोहर पर बीवी के 5 हुक़ूक़

(1) परदे में रखना (2) दीन दार बनाना (3) हलाल रोजी का इंतेज़ाम करना (4) गलतीयों को दर गुज़र करना (5) अपनी तरफ़ से उस पर ज़ुलम नहीं करना ।

{144} औरतों की नमाज़ का तरिक़ा

मरदों ही की तरह औरतों की नमाज़ भी है अल्बत्ता थोडासा फ़रक़ है (1) तक्बीरे तेहेरीमा केहेते वक़्त (यानी अल्लाहु अक्बर केहेते वक़्त) हाथों को कान्धों तक उठाना (2) हाथों को दोपट्टे से बाहर ना निकालना (3) सीने पर हाथ बान्धना (4) दाहिने हाथ की हथेली बायें हाथ की हथेली की पुष्त पर रख्ना (5) रुकू मे कम झुक्ना (6) रुकू मे दोनों हाथों से गुठ्नों को पकडते वक़्त उँगलियों को मिलाये रख्ना (7) दोनो बाज़ुवों को पेहलुवों से खूब मिलाये रखना (8)दोनो पावुं के टख्ने बिलकुल मिलादेना (9) खूब सिमट कर और दब कर सज्दा करना(10) सज्दे मे बग्लें ना खोलना (11) पेट को दोनों रानों से मिलाये रखना (12) कोहनियों को ज़मीन पर रखना (13) सज्दे मे हाथ और पावुं की उँगलियों को क़िब्ले की तरफ़ करना (14) क़ाइदे मे बाये तरफ़ बैठ्ना (15)दोनों पावुं दाहिनी तरफ़ निकालना (16) क़ाइदे और जल्से मे उँगलियाँ मिलाये रखना
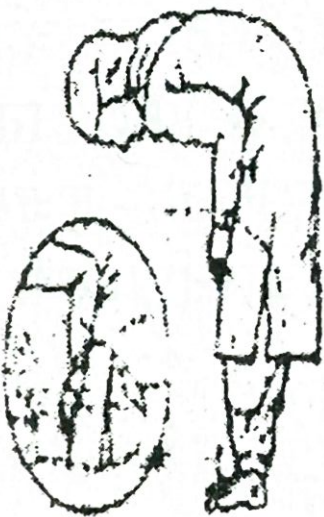
{145} औरत के लिये षरीअत में परदे के 3 दरजे

मुसल्मान औरत जो आज़ाद हो बांदी ना हो बालिग होचुकी हो या बालिग होने के खरीब हो जवान हो या बूढी उसके लिये अजनबी मरदों से परदा करने के 3 दरजे

(1) एक ए के चेहेरा और हथेलियों के अलावा और बाज़ के नज़दीक पैरों के अलावा भी बाक़ी तमाम बदन को कपडे से छुपाया जाये और ये अदना (सब से कम) दरजे का परदा है (2) दुसरा ए के चेहेरा और हथे लियों और पैरों को भी बुरखा वगैरा से छुपाया जाये दरमियानी दरजे का परदा है (3) तिसरा ए के औरत दिवार या परदे के पीछे आड्मे (इस तरह) रहे के इसके कपडों पर भी अजनबी मरदों की नज़र ना पढे ए सब से आला दरजे का परदा है और ए तीनों दरजे के परदे कुरआन व हदीस में मज़कूर हैं और षरीअत में इनका हुकुम मौजूद है (जहाँ तक होसके औरत को तीसरे दरजे का यानी आला दरजे का परदा करने की कोषिष करनी चाहिये ए इसके लिये बेहेतर है)

{146} मसतूरात के 24 घंटे के मुख्तसर काम

औरत का असल काम तो ए है के अपने घरों में पांचों नमाज़ें अव्वल वख्त में खुषू व खुज़ू से खडी होकर पड्ती रहें और क़ुरआने पाक की तिलावत करती रहें अगर पढी हुवी नहीं हैं तो रोजाना अपने किसी मेहेरम से या सही पढ्ने वाली किसी औरत से 2-2, 4-4, आयतें सबक़न सबक़न सीखती रहें सुबाह वा षाम 3-3 तस्बीहात बैठकर पढ्ती रहे तो जियादा अच्छा है

और अपने बच्छों की दीनी तरबियत व तालीम और अपने खाविंद की खिदमत करती रहे और अगर कोई अज़ीज़ रिष्तेदार खातून या सहेली किसी भी काम के लिये आये तो उनहे प्यार व मुहब्बत और हिक्मत से दीन पर चलने और घर में तालीम करने मेहेरमों को अल्लाह के रास्ते में निकालने की तरगीब दें अगर आपने उनको इन बातों पर तय्यार करवाया तो ए बहुत बडी कमायि करली रोज़ाना अपने घर में फ़ज़ाइले आमाल और मुन्तखब अहादीस की तालीम करती रहे जब तालीम करते करते ज़ेहेन बनजाये तो एक जमाअत 5 औरतों की बनाली जाये इस्में 2-3 पुरानी और 2-3 नयि औरतें हो हर एक के साथ उनका हक़ीक़ी मेहेरम (बाप, बेटा, खाविंद,) हो बच्चे साथ ना हो ऐसी जगे जाये जहाँ पूरी जान पेहेचान हो और पहेले से उनको अपने आने की इत्तिला देदी जाये वहाँ पहुंच कर मरदों मे से कोई दुआ कराये और औरतें एक तरफ़ खडी होकर चुप्के चुप्के आमीन कहेती रहें ए जब है के इस्तेख्बाल वालों की भीड ना हो अगर इस्तेख्बाल वाले जियादा हो तो मर्द बाहर दुआ करे और औरत अंदर चली जाये और वज़ू करके नफ़ीलें पढे ब-षरतैके मकरूह वख्त ना हो मरदों की दुआ काफ़ी होजायेगी बेहेतर तो ए है के जहाँ जाना है उस षेहेर में दाखील होते ही दुआ करले अपनी मखसूस गाडी हो तो गाडी में दुआ करना बेहेतर है मरद मस्जीद में जाकर तहिय्यतुल वज़ू और तहिय्यतुत मस्जीद नमाज़ पढ़कर मषोरा करे औरतों के लिये तै करे कोनसी खातून तालीम करायेगी

और कोन खिदमत करेगी वगैरा वगैरा परचे में लिखकर भेजदे और जमाअत को दो हिस्से हरगीज़ ना करे जब तक मषूरे का परचा आये उस वक़्त तक औरतें नफ़िल पढ्ने के बाद जो मुक़ामी बेहेनें आयि हुवी हैं उनसे दीनी तरगीबी बात करे, जब मषूरे का परचा आजाये तो उसके मुताबिक़ काम करे औरतें सिर्फ़ किताबी तालीम करेंगी तखरीर (बयान) की बिलकुल इजाज़त नहीं है अपने ही साथ आयी हुवी बेहेनों से क़ुरआन मजीद की तसहीह (सही) करने का हलक़ा चलाये जितनी देर मुनासिब समझे फ़िर किताबी तालीम करे किताबी तालीम इस तरह आहिस्ता आहिस्ता करे के जो बेहेनें बैठी हैं वो भी समझ जायें और 6 सिफ़ात का मुज़ाकिरा भी हलक़ा बनाकर बैठकर करे ए ज़ोहर से पेहेले का काम है

ज़ोहर के बाद मुक़ामी औरतें तालीम में आयेंगी मषूरे से जिसका तालीम करना तै हुवा है वो खातून तालीम करे मज्मा जियादा हो और घर मे गुंजाइष होतो दो हलक़े कर सकती हैं, फ़ज़ाइले आमाल और मुन्तखब अहादीस के अलावा कोई दुसरी किताब ना पडी जाये किसी खातुन को किसी मसअले की ज़रूरत पढे तो अप्ने किसी मेहेरम के जरिये मोतबर व माक़ुल उलमा से मालुम करे मसाइल की इज्तेमायि तालीम नहीं होगी इन फ़िरादी तौर पर मसाइल की किताब पडी जासकती है

जब कोई मर्द बयान करने आये तो औरते अप्नी तालीम बंद करदे औरते इस्कि पूरी एहेतियात करे के आवाज़ मरदों तक ना पहुंचे मरद हज़रात बयान के बाद

तष्कील का मोक़ा दे औरते मुक़ामी मस्तुरात की तष्कील करे के कोन कोन अप्ने मरदो को अप्ने बेटो को या दुसरे अजीजो को अल्लाह के रास्ते मे 3 छिल्ले या छिल्ले के लिये बेजेंगी और दुआ से पहेले उनके नाम पूरे पते के साथ लिखवा कर भिजवादे ताके उनकी वसूली मे आसानी हो, मर्द दुआ करके चले आये फिर औरते अस्र नमाज़ अदा करे और तस्बीहात पूरी करे अगर कुच मुक़ामि औरते बैठी हो तो इन्से दीनी तरगीबी बात करे मगरिब की नमाज़ के बाद अव्वाबिन पढे और अगर मोक़ा होतो इनफ़िरादी आमाल सीखना सिखाना वगैरा करे या आरम करे इषा की नमाज़ के बाद कोई तालीम नहीं जल्दी आरम करे ताके तहज़्ज़ुद मे उठना आसान हो खाना इषा से पहेले या बाद जैसी सहुलत हो खाले, नमाज़े तहज़्ज़ुद के बाद दुआ मांगे अप्ने माँ बाप और पूरी उम्मत के लिये नमाज़ो को खुषू व खुज़ू से पढ्ने की मष्क करे, बाद नमाज़े फ़ज़र नाष्ते मे देर होतो आरम करले नाष्ता जल्दी हो जाये तो बाद नाष्ता मुख्तसर आरम करले तालीम का जो वक़्त मुक़र्रर है उस्से पहेले अप्ने इनफ़िरादी आमाल व ज़रूरतो से फ़ारिग हो जाये अगर मरदो मे से कोई पुराने साथी बात करने वाले होतो नमाज़े फ़ज़र के बाद 30-40 मिनट बात करे बषरतेके नाष्ते मे देर हो वरना नाष्ते के बाद बात करे ताके औरते षाम तक कामो मे लगी रहेसके नाष्ते से पहेले या बाद अगर आराम करे तो मषुरे से एक बेहेन ऐसी जगा बैठे जहाँ बाहर से आने वाली बेहेनो पर नज़र रहे ये बेहेन क़ुरान षरीफ़ लेकर ना

बैठे तस्बीह लेकर बैठे ताके आने वाली बेहेनो का इस्तेक़बाल कर सके उन्से ऐसी जगे बैठ कर बात करे के सोने वाली बेहेनो की नींद मे खलल ना हो इस लिये के जहँ मंस्तूरात की जमात आती है मुक़ामि औरते मिलने के लिये आया करती है अगर सबको सोता पायेगी तो मायुस होकर वापस होगी इस लिये मषुरे से कभी कोई बैठा करे जमात मे आने वाले मेहेरम मर्द अपनी औरतो से मिल्ने मगरिब से पहेले आसकते है मगरिब के बाद मुनासिब नहीं, लोगों ने जो औरतो का इज्तेमा नाम रख्खा है असल मे औरतो की तालीम है औरते गष्त नहीं करेंगी ना छोटि, ना बडी उमर की, ना मुक़ाम पर ना जमात मे, बाहर निकल्ने के जमाने मे जो मेहेरम साथ आये है वो मुक़ामि मर्दो के साथ मिलकर गष्त करे, और मुक़ामी मरदो को अपनी मस्तुरात को जहाँ तालीम होरही है वहाँ भेजने की दावत दे और ताकीद करे के वो सादा लीबास दरमियानी तरिखे से षिरकत करे, बन सवर कर ज़ेवरो से आरास्ता होकर ना जाये, अगर मुमकिन होतो होटल से रोटी मंगवाले और कोई औरत घर मे सालन बनाले औरत तालीम मे बैठे बैठे सालन देख सकती है

ए 16 बाते वो है जिन्को हज़रत षा मुहम्मद युसुफ़ रहे॥ फ़रमाया करते थे चार काम खूब करने के (1) दावत (2) तालीम (3) इबादत (4) खिदमत, चार काम बिलकुल नहीं करने के (1) इषराफ़ (दिल का सवाल) (2) ज़बान का सवाल (3) इसराफ़ (फ़ुज़ुल खरची) (4) किसी की

चीज़ बगैर इस्की इजाजत इस्तेमल करना, चार कामों मे वख्त कम लगाना (1) खाने पिने मे (2) सोने मे (3) नहाने मे (4) जाइज़ दीगर कामो पे, चार कामो मे दखल ना दे (1) सियासत (2) बेहेस मुबाहसा (3) मसाइल के तज़किरे (4) हालाते हाजिरा

बस दीन व ईमान की फ़िकर हो और आखिरत की सोच आप्ने अच्छा किया जो पूच लिया जो पूच पूच कर चलेगा सही काम करेगा

नोट :- इन बातो मे जान डालने के लिये घर पर फ़ज़ाइले आमाल और मुन्तखब अहादीस की तालीम घर वालो को एहेतेमाम के साथ लेकर रोजाना फ़िकर व लगन से करे

नोट :- जिस वख्त मे निजमुद्दिन बंगले वालि मसजिद मे जैसे उसुल कहे जायेंगे उसपर चलना है

{147} अषरा और छिल्ले मे जाने वाले मसतुरात जमात के हर जोड़े के लिये जरूरी चीज़े

(1) क़ुरान षरिफ़ (प्याकेट सैज़) फ़ज़ाइले आमाल (अव्वल, और दुव्वम) मुन्तब अहादीस, हिदयते आमाल, (2) मुसल्ला (जानिमाज़) (3) तस्बीह (4) मिसवाक (5) क़िब्ला नुमा (6) षरई लिबास (कुर्ता, पैजामा, बुरखा ऐसा होके आँखे नज़र ना आये) लिबास चम्किला नाहो, हथो के लिये दस्ताने, पैरो के लिये साक्स (7) ज़ेवर (सोना, चांदि, खिमति चीज़े) साथ ना हो (8) नोट बुक और पेन (9) सुरमा (10) सर का तेल (11) कंगी (12)

नाखुन तराष (नेयिल कटर) (13) कैंची (14) धागा और सूयि (15) प्लास्टिक की रस्सी 6 मीटर (16) चुम्टे (क्लिप्स) (17) साबुन नहाने और धोने के लिये (18) दांतो का मंजन (टूट पेस्ट) (19) आयिना (मिर्रर) (20) टार्च लैट (21) मरद और औरत के लिये अलग अलग ब्याग (22) बिछाने और वोडने के लिये बिस्तर और टुवाल (23) प्लेट, ग्लास, और वज़ू का लोटा (24) छोटा दस्तर ख्वान

पूरि जमात के लिये :- (1) तआम सेट फेहरिस्त के साथ हो (2) सफ़र के इंतेजाम के लिये दो मीटर के दो परदे एक मीटर के दो परदे (3) प्लास्टिक के चार जग (4) चाय के लिये थर-मास (प्लास्क) (5) पानी पीने के लिये 10 लीटर का डब्बा ।

{148} मस्तुरात के लिये मषोरे का परचा

बतारीख़ : .... बरोज : ....

मस्तूरात का क़ियाम गाह : ....

मरदों का क़ियाम गाह : ....

(1) खिदमत : ....

(2) इस्तेक़बाल : ....

(3) सुबह की तालीम का वक़्त : ....

(4) सुबह तालीम के ज़िम्मेदार : ....

नमाज़े ज़ोहर की तयारी, खाना और थोडी देर खैलुला

(5) ज़ोहर के बाद इज्तेमयि तालीम का वक़्त : ....

(6) ज़ोहर के बाद इज्तेमयि तालीम के जिम्मेदार : ......

(7) मर्दाना बयान का वक़्त : ....

(8) बाद मगरिब अव्वाबिन पढकर निचे के उनवान मे से दो उनवान पर हर खातुन मुज़ाकिरा करे

(I)..............................(II) ....

मगरिब के बाद के उन्वानात

(1) घरों की तालीम (2) दावत की फज़ीलत (3) घरों में दीन किस तरह आये? (4) छे सिफ़ात का मुज़ाक़िरा (5) सुन्नतों का मुज़ाक़िरा (6) सादगी और षरई परदे का एहेतेमाम करना वगैरा (7) बच्चों को दीनी तरबियत और सुन्नतों की पाबंदी (8) अपने मेहेरमों को दीन के कामों मे और अल्लाह के रास्ते में मदद गार बन्ना (9) सबर और तहम्मुल का मुज़ाक़िरा (10) खता रहेमी करने वालों के साथ सिला रहेमी किस तरह करे? (11) गीबत, बोहतान, चुग्ली हसद से बचना (12) अव्वल वख्त मे नमाज़ का एहेतेमाम करना (13) हुक़ूक़ किस तरह अदा करे

(9) फ़ज़र की नमाज़ के बाद छे सिफ़ात का मुज़ाक़िरा फ़रदन फ़रदन करे

(10) फ़ज़र की नमाज़ के बाद मरदाना बात का वक़्त :

(11) आयिन्दा का क़ियाम________ के मकान मे होगा

(12) इन्षाअल्लाह जमात ____________ बजे क़ियाम गाह बदल्ना है

नमाज़ के अवक़ात

ज़ोहर का अव्वल वक़्त ... असर का अव्वल वक़्त..

मगरिब का अव्वल वक़्त ... इषा का अव्वल वक़्त.....

तहज़्ज़ुद का आखिरी वक़्त.. फ़ज़र का अव्वल वक़्त... इषराक़ का षुरु वक़्त ....

{149} हदीसे पाक और हक़ वाले अकाबिर की रोष्नी में औरतों की खिदमत और उन्की फ़ज़ीलत

(1) एक नेक बा–अमल औरत की नेको कारि 70 औलोया अल्लाह की इबादत के बराबर है और एक बदकार औरत की बद कारी 1000 बदकार मरदों की बदकारी के बराबर है (बेहिष्ते ज़ेवर) (2) औरत को हज करने पर जिहाद का सवाब मिलता है (बुखारी मुस्लिम) (3) हामिला औरत की दो रकात की नमाज़ आम औरत की 80 रकात नमाज़ से बेहेतर है बच्चो वाली औरत की दो रकात नमाज़ बगैर बच्चो वाली औरत की 82 साल की इबादत से अफ़्ज़ल है (खवातीन के लिये राहे जन्नत) (4) औरत जब भी अप्ने गरीब षोहर पर एक रुपिया खरच करती है तो इस्को 8000 रूपिये अल्लाह के रास्ते मे खरच करने का सवाब मिलता है (बागे जन्नत) (5) औरत अल्लाह का ज़िकर करते हुवे जब भी अप्ने घर मे झाड़ू देती है तो उस्को खानये काबा मे झाडु देने का सवाब मिलता है (खवातीन के लिये राहे जन्नत) (6) औरत अपनी जिम्मेदारी समझ कर घर मे जाडु देती है घर का काम काज करती है तो जिहाद करने वालो के बराबर सवाब मिलत्ता है (बेहेष्ते ज़ेवर) (7) नेक औरत अप्ने षोहर से पहेले जन्नत मे जायेगी और जन्नत की हूरो से 70,000 दरजे जियादा खुब सूरत होगी (तजकिरतुल खुरतुबी) (8) औरतो मे अगर ज़बान दराजी की बिमारी ना होतो वो दुनिया ही मे हूरों के मानिंद है (खतबाते हकीमुल उम्मत) (9) मोमिन बंदे ने अल्लाह के खजानो

मे से तक़वा (परहेज गारि) के बाद नेक बीवी से बेहेतर कोई चीज़ हसिल नहीं की (इहयाउल उलूम) (10) नेक औरत दीन के कामो मे मददगार होति है (11) धन दौलत मीरास मे भी मिल जाती है लेकीन दानिष मन्द और नेक बीवी दुनिया की चीज़ों मे से नहीं है बलके अस्बाबे आखिरत मे से है और अल्लाह की न्यामत है जो उस्के फ़ज़ल से मिल्ती हैं (12) मरद की बनिसबत औरत का दीनी तालीम याफ्ता होना बेहद जरूरी है क्युंके एक औरत का तालीम याफ़्ता होना गोया के पूरे घराने का तालीम याफ़्ता होना है (मुखामे अखलाख) (13) औरत के लिये सब से बडी षराफत और इज़्ज़त ये है के वो परदे मे रहे ना वो किसी गैर मरद को देखे और ना कोई गैर मर्द उस्को देख सके (14) औरत खुदा की जाते मुक़द्दस से ज़ियादा क़रीब तर उस वक़्त होती है जब के वो अप्ने घर के अन्दर होती है (इहयाउल उलूम) (15) जो औरत गैर मरद से परदा करती है और अपनी बदन को छुपाती है और अपने षौहर की गैर मौजुदगी मे अपनी इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त करती है तो उस औरत को जहन्नम की आग ना जलायेगी, और उस पर जहन्नम हराम है (बागे जन्नत) (16) अगर तुम हया ना करो तो जो चाहे करो (बुखरि, मुस्लीम) (क्युंके हया के साथ तमाम नेकिया और बे हयायि के साथ तमाम बुराइयाँ जुडी हुवी है इस लिये औरत को हया की सख्त ज़रूरत है) (17) औरत की आवाज़ भी औरत है लिहाज़ा उस्का भी परदा करे (बागे जन्नत) (गैर मर्दो के सामने ज़ोर से ना बोले) (18) जन्नत मे लोग अल्लाह पाक का दीदार करने जायेंगे लेकीन जो औरत

दुनिया मे परदे की हालत मे रही हो अल्लाह ब-ज़ाते खुद उन्को अपना दीदार कर वायेंगे (खवातीन के लिये राहे जन्नत) (19) मर्द के लिये बेहेतरीन दौलत नेक अखलाक़ वाली औरत है ऐसी के षौहर की गैर मौजूदगी मे अपनी इसमत (इज़्ज़त) की हिफ़ाज़त करती हो औलाद पर षफ़क़्क़त करती हो और मीठी ज़ुबान वाली हो (20) निकाह के लिये सब से जियादा मुनासिब औरत वो है जो दीनदार हो और मीठी ज़ुबान वाली हो (मिष्कात) (21) मोमिन को सलीक़े मंद नेक बीवी का मिल जाना उस्की सआदत मंदी की अलामत है (खुत्बाते हकीमुल इस्लाम) (22) जो पाक दामन औरत नमाज़ रोजो की पाबन्द हो और अपने षौहर की खिदमत गुज़ार होतो उस्के लिये जन्नत के आठो दरवाज़े खोल दिये जाते है (मिष्कात) (23) जो औरत अच्छे अखलाक़ से अप्ने षौहर को खुष रखती है तो उस्को जन्नत की हूरो पर ऐसी फ़ज़ीलत हसिल होती है जैसे हुज़ूर स़ाल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी उम्मत पर हसिल है (बागे जन्नत) (24) बेहेतरीन औरत वो है जो अपने षोहर से अछछा सुलूक करती हो और उसकी बात मानती हो (बेहिष्ते ज़ेवर) (25) जिस औरत का इन्तेक़ाल इस हाल में हो के उसका षोहर उस्से राज़ी होतो जन्नत उस पर वाजिब है (बागे जन्नत) (26) जो भी औरत अप्ने षोहर से अछछा सुलूक करती है तो उस्को हर 24 घंटो के बदले मे 1000 ऐसे षहीदों का सवाब मिलता है जो साबिर और मुखलिस हों (गुन्यतुत तालिबीन) (27) जो भी मोमिन औरत अप्ने घर के अन्दर रहेते हुवे षोहर को खुष रख्खेगी और उस्की इताअत करेगी तो

उस्को जुमा, जमाअत, इयादत, उमरह, हज, नमाज़े जनाज़ा, जिहाद वगैरा का सवाब मिलता है (फ़ज़ाइले आमाल) (28) षोहर जब भी परेषान होकर घर आये तो बीवी उस्को खुष आमदिद कहे और तसल्ली देतो. औरत को आधे जिहाद का सवाब मिलता है (बेहिष्ते ज़ेवर) (29) षोहर घर आने पर बीवी उस्को खाना खिलाये और उस्की खियानत ना की होतो उस्को 12 साल की नफ़िल नमाज़ों का सवाब मिलता है (बेहिष्ते ज़ेवर) (30) जो औरत अप्ने षोहर के पावूं षोहर के कहेने से पहेले दबायेगी तो 7 तोले सोना और अगर षहर के कहेने पर दबायेगी तो 7 तोले चांदी सदक़ा करने का सवाब मिलता है (31) जो औरत अप्ने षोहर को अल्लाह के रास्ते मे रवाना करे और खुद अप्नी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करते हुवे घर मे रहे तो वो औरत मरद से 500 साल पहेले जन्नत में जायेगी और 70,000 फ़रिष्तों और हूरों की सरदार होगी और उस्को जन्नत मे गुसुल दिया जयेगा और याक़ूत के घोडे पर बैठ कर अप्ने षोहर का इन्तेज़ार करेगी (खवातीन के लिये राहे जन्नत) (32) जो भी औरत अप्ने षोहर के सताने पर 7 दिन तक सबर करती है तो अल्लाह पाक उस्को 700 साल की मक़बूल इबादत का सवाब अता फ़रमाते है (बागे जन्नत) (33) औरत जब अप्ने षोहर के सताने पर सबर करती है तो उस्को ऐसा अजर मिलता है जैसा के हज़रत आसिया रजि॥ (फ़िरऔन की बीवी) को मिला (इहयाउल उलूम) (34) मियाँ बीवी जब भी आपस मे एक दूसरे को मुहब्बत की निगाह से देखे तो अल्लाह तआला भी उन्हें

मुहब्बत की निगाह से देखते हैं (खवातीन के लिये राहे जन्नत) (35) मियाँ बीवी का आपस मे बैठकर बातें करना हसी दिललगी करना नफ़िल नमाज़ों से भी बढकर है (36) मियाँ बीवी एक दूसरे को दीन का कोयि एक मस-ला सिखाते हैं तो उन में से हर एक को 80 साल की नफ़िल इबादत का सवाब मिलता है (बागे जन्नत) (37) औरत जब भी अप्ने षोहर के लिये बनावु सिंगार करती है तो उस्के लिये एक नेकी लिख्खी जाती है और एक गुनाह माफ़ होता है और जन्नत मे एक दरजा बुलंद होता है और दो साल की मक़बूल इबादत का सवाब मिलता है (गुन्यतुत्तालिबीन) (38) मिया बीवी को गुसुले हाज़त के बदले मे 4000 साल की इबादत का सवाब मिलता है (बागे जन्नत) (39) जब कोयि औरत अप्ने षोहर से हामिला होती है और उस्का षोहर उस्से राज़ी होतो उस्को ऐसा अज़र मिलता है जैसा के अल्लाह के रास्ते के मुज़ाहिद को दिन रात की इबादत पर मिलता है (40) हामिला औरत की हर रात इबादत मे और हर दिन रोज़े मे षुमार होता है (खवातीन के लिये राहे जन्नत) (41) औरत का जो भी हमल गिर जाये वो भी घसीट कर अप्नी माँ को जन्नत मे लेजायेगा बषरतेके सवाब समझ कर सबर करे (42) औरत अगर अय्यामे हमल के ज़माने मे या बच्चे की पैदाइष के वख्त या बच्चे को दूद छुढाने के ज़माने मे इन्तेक़ाल करजाये तो उस्को षहादत का दरजा मिल्ता है (बेहेष्ते ज़ेवर) (43) बच्चे की पैदाइष के वख्त माँ को हर रग के दर्द पर एक मक़बूल हज का और एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है (ख॥ नजात) (44) बच्चे की पैदाइष की

तक्लीफ़ बरदाष्त करने पर माँ को ऐसी न्यामते अता की जाती हैं जिन्की खबर इन्सान, जिन्नात और फ़रिष्तो को नही (बेहेष्ते ज़ेवर) (45) एक बच्चे की पैदाइष पर माँ को 70 साल की नमाज़, रोज़ों का सवाब मिल्ता है (ख॥ नजात) (46) बच्चे को दूद पिलाने पर माँ को हर खतरे के बदले मे एक नेकी मिल्ती है और एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है और ऐसा सवाब मिलता है जैसे किसी जानदार को जिंदगी देने पर मिलता है और दूद पिलाने के बदले मे उस औरत पर जन्नत वाजिब करदी जाती है (47) जो औरत अपने बच्चो के रोने की वजे से ना सो सके तो उसको अल्लाह के रास्ते मे 70 गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है (बेहेष्ते ज़ेवर) (48) जब रात मे बच्चा रोये और माँ बगैर चिड चिडाहट के बच्चे को दूद पिलावे तो उसको एक साल की नमाज़, रोज़ो का सवाब मिलता है (49) ज़ो औरत अपने बच्चे की वज़ेसे परेषान रहे और बच्चे को आराम पहुंचाने की कोषिष करे तो उसके तमाम (सगीरह) गुनाह माफ़ करदिये जाते हैं.और 12 साल की मक़बूल इबादत का सवाब मिलता है (50) औलाद जन्नत के फ़ूल है जिन्हे देख्ने से माँ बाप को खुषी होती है(51) बेहेतरीन औरत वोहै जो अप्नी औलाद से मुहब्बत रखती हो और उन पर षफ़क़्क़त करती हो

<u>गुज़ारिष :-</u> इन तमाम आमाल का एहेतेमाम फ़राइज़की पाबन्दी के साथ करते रहे

{150} <u>गुट्का खावो एक से बडकर एक इनाम पावो</u>

1) पहला इनाम – क्यान्सर
2) दूसरा इनाम – गुरदों की खराबी
3) तीसरा इनाम – हाथ, पैरों मे थर थराहट

4) चौथा इनाम – जवानी मे बुडापा
5) पांच्वा इनाम – गले हुवे गाल
6) छे ा इनाम – खान्सी बलगम मे इज़ाफ़ा
7) सातवाँ इनाम – छोटा मूँ
8) आठवाँ इनाम – गरीबी, मुफ़लिसी
9) नवाँ इनाम – पैसों की बरबादी
10) आखिरी बंपर ड्रा – खाह म–खाह चार खन्दों पर सवार होकर दुनिया से रवानगी ।

{151} बच्चो के नाम

जब बच्चा पैदा हो उस्के दायें कान मे अज़ान और बायें कान में तकबीर कहें जब सात दिन का होजाये तो उस्का अक़ीक़ा करे फिर अछछा नाम रख्खे किसी बुज़रुग से छुवारा चबवाकर बच्चे के मूँ मे डाले या चटाये

नोट :– लड्के के नाम के षुरु मे मुहम्मद या आखिर मे अहमद रखले तो बहुत अछछा है ।

लडको के नाम

सि.नं.	नाम	मानें	सि.नं.	नाम	मानें
1.	अरषद	सीधे रास्ते पर चल्ने वाला	11.	जाबिर	टूटी हड्डि जोड्ने वाला
2.	अन्सर	मदद करने वाला	12.	जमाल	खूब सूरति
3.	बोकतियार	खुश खिस्मत	13.	हबीब	दोस्त
4.	बशिर	खुश खबरि देने वाला	14.	हामिद	तारीफ़ करने वाला
5.	पाषा	सरदार	15.	खालिद	हमेशा रेहेने वाला
6.	परवेज़	फ़तेह मन्द	16.	खलील	सच्चा दोस्त
7.	तकद्दुस	पाक	17.	दानिष	अक़ल मन्द
8.	तन्वीर	रोषन करना	18.	दिलावर	बहादुर
9.	साक़िब	चमक दार	19.	जाकिर	ज़िकर करने वाला
10.	समीन	खीमति	20.	जिषान	षोकत वाला

सि.ने.	नाम	माने	सि.ने.	नाम	माने
21.	अब्दुर रहेमान	मेहेरबान का बन्दा	41.	फ़ारूक़	हक व बातिल मे फ़रक करने वाला
22.	अब्दुर रक़ीब	निगेहबान का बन्दा	42.	फ़राज़	कुषादा
23.	ज़ाहिद	मुत्तक़ि	43.	क़ासिम	बाट्ने वाला
24.	ज़व्वार	ज़ियारत कर्ने वाला	44.	क़दीर	क़ुदरत वाला
25.	साजिद	सज्दा करने वाला	45.	करीम	सखि
26.	सर फ़राज़	बुलंद	46	कलीम	बात करने वाला
27.	षादाब	तरो ताजा	47.	गुलरेज़	पुल झडि
28.	षफीक़	मेहेरबान	48.	गोहर	मोति
29.	साबिर	सबर करने वाला	49.	लुक़मान	तजरुबेकार
30.	सादिक	सच्चा	50.	लियाक़त	क़ाबिलिय्यत
31.	ज़मीर	दिल व दिमाग	51.	माजिद	बुज़रुग
32.	ज़िया	रोषनि	52.	मुज़ाहिद	खुदा कि राह मे लड्ने वाला
33.	ताहिर	पाक	53.	नासिर	मदद गार
34.	तय्यिब	कुष्बो	54.	नदीम	हम नषिन
35.	ज़हूर	ज़ाहिर	55.	वाइ न	नसिहत करने वाला
36.	ज़हीर	मदद गार	56.	वाहिब	देने वाला
37.	आबिद	इबादत करने वाला	57.	हादि	रास्ता दिकाने वाला
38.	अलीम	जान्ने वाला	58.	हारून	पैगंबर का नाम
39.	गनि	बे नियाज़	59.	याक़ूत	एक क़िमति फत्तर
40.	अब्दुल गफ़ूर	माफ़ करने वाले का बंदा	60.	यावर	मदद करने वाला

लड़िकयों के नाम

सि.नं	नाम	माने	सि.नं.	नाम	माने
1	आदिबा	ईल्म जान्ने वालि	20	रज़िया	पसंदीदा
2.	आमिना	अमन वलि	21	ज़ेबा	खुष नुमा
3	बरजिस	सितारा	22	ज़ीनत	आरास्तगि
4	वदरुन्निसा	चौदवि का चान्द	23	साजिदा	सज्दा करने वालि
5	पारस	एक किसम का पथ्थर	24	सादिया	नेक बख्त
6	परविन	चान्द, सितरो के नाम	25	षाकिरा	षुकुर गुज़ार
7	तस्लीम	मान्ना	26	षाफ़िआ	सिफ़ारिष करने वालि
8	सरवत	माल कि ज़्यादति	27	साबिरा	सबर करने वालि
9	जबीन	पेषनि	28	सालेहा	नेक औरत
10	जमीला	खुब सुरत	29	ज़मीर	दिल व दिमाग
11	हामिदा	तरीफ़ करने वलि	30	ज़ियाउन्निसा	रोषनि
12	हसीना	खुब सुरत	31	तालिआ	नसिब वाली
13	खालिदा	हमेष रहेने वलि	32	तय्यिबा	अज़िज़
14	खुरषीद	सुरज	33	ज़रिफ़ा	खुष तबा
15	दिल षाद	खुष व खुर्रम	34	ज़हीरा	मदद गार
16	दिल नवाज़	मन पसंद	35	आबिदा	इबादत करने वालि
17	ज़ाकिरा	ज़िकर करने वलि	36	इषरत	खुषि
18	ज़किय्या	तेज़ फहेम	37	गफ़ूरुन्निसा	माफ़ करने वालि
19	राषिदा	हिदयत यफ्ता	38	गय्यूरुन्निसा	षरम करने वालि

सि.नं	नाम	माने	सि.नं	नाम	माने
39	तबस्सुम	मुस्कुराहट	51	मुबीना	रोषन
40	समीना	क़ीमती	52	मुहसिना	एहेसान मंद
41	फ़रहत	खुष खुर्रमि	53.	नाजिदा	मदद गार दिलेर औरत
42	फ़रखन्दा	नेक	54	नातिया	तारिफ़ करने वालि
43	क़ुदुसिय्या	नेक बंदि	55	वाइज़ा	नसीहत करने वालि
44	क़मरुन्निसा	चांदनी	56	वसिमुन्निसा	खूब सूरत
45	कौसर	बेहिष्त कि एक नदि	57	हादिया	रास्ता दिखाने वालि
46	काषिफ़ा	ज़ाहिर करने वालि	58	हिदायतुन्निसा	रेहेबरी करने वालि
47	गुल अफ़्षा	पूल	59	यास्मिन	चंबेली का पूल
48	गुल ज़ार	बाग	60	ऐमन	सआदत
49	लतिफ़ा	बारीक बिं			
50	लियाक़तुन्निसा	क़ाबिलिय्यत वालि			

पब्लिषर :-

मक्बुल बुक डिपो

षाप नेम. 66-11 नज़्द जामिआ मस्जिद

कर्नूल (ज़िला) ए.पि

मेबैल : 094403 75218 094931 34441